एक व्यक्ति की परिकल्पना

लोक सांस्कृतिक संग्रहालय
एवं
मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर
इतिहास एवं परिचय

A Single Man's Imagination

FOLKLORE MUSEUM
&
DESERT CULTURAL CENTRE, JAISALMER
HISTORY AND INTRODUCTION





जैसलमेर स्थापना दिवस के अवसर पर जिला कलेक्टर अशोक जैन, श्री किशनसिंह भाटी, श्री गोरधन
श्री अमृतलाल शर्मा, प्रेम जगानी, श्री सगतमल शर्मा, श्री नन्दकिशोर शर्मा, शम्भूदान रतनू आ



पर्यटन मित्रों के साथ श्री नन्दकिशोर शर्मा, साथ में हैं बीकानेर जिला कलेक्टर श्री निरंजन आर्य,
श्री महेन्द्र व्यास, संस्था के संरक्षक श्री रामसिंह मेड़तिया आदि



जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की विजिट बुक में अपनी सम्मति लिखते हुए
मारिशिस के पप्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगनाथन, साथ में हैं प्रेमराज शर्मा, नन्दकिशोर शर्मा आदि

एक व्यक्ति की परिकल्पना

लोक सांस्कृतिक संग्रहालय एवं मरु सांस्कृतिक केन्द्र

इतिहास एवं परिचय

सम्पादक :

बालकृष्ण जोशी

एवं

श्यामसुन्दर श्रीपत

प्रकाशक :

मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय

कवि तेज लोक कला विकास समिति

गडीसर चौराहा, जैसलमेर-345 001

© : 02992-252188, 253723 (M) 252375 (R)

प्रथम संस्करण : 2006

मुद्रक :

जांगिड़ कम्प्यूटर्स

71, नेहरू नगर, जोधपुर - 342 008

© : 0291-3251863, 9414308049

A SINGLE MAN'S IMAGINATION

JAISALMER FOLKLORE MUSEUM
&
DESERT CULTURAL CENTRE

History & Introduction

Editor :
Dr. RAM SINGH MERTIA
&
RAMESH CHANDRA HARSH

Publisher :
Desert Culture Centre
Folklore Museum
Kavi Tej Lok Kala Vikas Samiti
Gadisar Circle, Jaisalmer-345 001
Tel : 02992-252188, 253723

Printed by :
Jangid Computers
71, Nehru Nagar,
Jodhpur - 342008
Tel : 0291-3251863
Mobile : 9414308049

सन्देश

जैसलमेर लोक सास्कृतिक संग्रहालय एवं मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय (डी. सी. सी. एम.) जो राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित इतिहासकार एवं कवि नन्दकिशोर शर्मा के एकल प्रयास से 1984 मे स्थापित किया गया था तथा 1981 से कवि तेज लोक कला विकास समिति द्वारा संचालित विश्व प्रसिद्ध कला संस्थान अपनी स्थापना के 21 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। 21 वर्षों में संग्रहालय ने सारे संसार में एक विशिष्ठ स्थान बनाया है। जैसलमेर आने वाला हर दर्शक इसे देखना चाहता है। थार प्रदेश की जीवन शैली के विविध स्वरूपों को दर्शाने वाला यह संग्रहालय अपने आप में अनूठा है। यह संग्रहालय केवल मूक प्रदर्शन नही है, बल्कि लोक कलाओं को संरक्षण देने वाला, उसके विकास में योग देने वाला जीवंत संस्थान है। जो इस प्रदेश में बिखरी कलाओं और कलाकारों को मंच देता है। कलाकारों को प्रोत्साहन देता है। नई पीढी के लिए न केवल प्रदर्शन कर मनोरंजन करता है बल्कि प्रतियोगिताओं के माध्यम से एक शैक्षिक प्रशिक्षण देता है। लेखों, पुस्तकों के प्रकाशन आदि के माध्यम से उसका प्रचार करता है। शोध कार्य में विद्यार्थियों को सहयोग देता है। अपने स्वयं के आत्मसाधनों से इतना बड़ा कार्य करने वाला यह संस्थान विश्व के गिने चुने एक व्यक्ति के एकल प्रयास से स्थापित संग्रहालयों की श्रेणी में आता है।

जैसलमेर के इस अनूठे संग्रहालय के 21 वर्ष पूर्ण होने पर उन सब को हृदय से अभार प्रस्तुत करता हूँ। जिन्होनें समय समय पर हमें सहयोग दिया। हमारे कार्यो को आगे बढाने तथा हमारे आयोजनों में भाग लेकर हमारा उत्साह वर्धन किया। उन सब का मैं कवि तेज लोक कला विकास समिति की ओर से आभारी हूँ। आपका सहयोग रहा तो यह संस्थान पर्यटन, कला, संस्कृति, इतिहास के क्षेत्र में अन्य कार्य भी कर सकेगा। बालकों में राष्ट्रीय भावानात्मक एकता पैदा करते हुए अपने प्रदेश की सेवा कर सकेगा।

धन्यवाद !

-प्रेमराज शर्मा

अध्यक्ष

सन्देश

लोक सांस्कृतिक संग्रहालय एवं मरु सांस्कृतिक संग्रहालय जो श्री एन. के. शर्मा के एकल प्रयास से 1984 में स्थापित किया गया था। उसके शानदार 21 वर्ष पूर्ण होने पर 'कवि तेज लोक कला विकास समिति' की ओर से एक व्यक्ति की साकार परिकल्पना, इतिहास एवं परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जैसलमेर के एक शिक्षक ने अपने एकल प्रयास से एक अनूठा लोक सांस्कृतिक संग्रहालय स्थापित कर इस प्रदेश की महान् सेवा की है। विलुप्त होते इतिहास, कला ओर संस्कृति एवं साहित्य का संग्रह किया इसे व्यवस्थित प्रदर्शित किया तथा इसकी प्रामाणिक सूचनाएं प्रकाशित कर देश विदेश तक उसके सौरभ को पहुचायां। श्री शर्मा द्वारा पर्यटन के लिए किया गया कार्य तथा उनके द्वारा दिया गया महान योगदान आने वाला युग क्रमशः समझेगा। अपने क्षैत्र में व्यक्ति अपने व्यक्ति की कद्र नही करते। बाहर के लोग इसके मूल्य को समझते है। वह तन-मन धन से सहयोग देना चाहते है तथा उत्साहवर्धन भी करते हैं। श्री शर्मा गत 35 वर्षों से अपना मौन मूक कार्य करते आ रहे है। इन्होनें गांव गांव घूमकर भारतीय संस्कृति की बहूमूल्य धरोहरों का संग्रह कर उसका संरक्षण किया है। उसका विकास किया है। शर्मा ने न तो कभी किसी पुरस्कार या सम्मान की इच्छा की न किसी के आगे हाथ फैलाया। अपने श्रम से कार्य किया। कई पर्यटक मित्र (गाइड) तैयार किये। कलाकारों को रोजी रोटी पर लगाया। शोधार्थियों को सहयोग दिया। कलाकारों कठपुतली कला, रम्मत कला, मेहन्दी मांडणा, पर्व, त्यौहारों आदि के अलावा बड़े बुजुर्गों का सम्मान किया। अपने क्षेत्र में कार्य करने वाले उन समस्त व्यक्तियों का सम्मान किया, जिन्होंने जैसलमेर के लिए कुछ योगदान किया है। शर्मा ने कई बच्चों को भी रम्मत कला, नृत्य, नाटक, गीत-संगीत, कठपुतली-कला का प्रशिक्षण दिया। इतिहास लिखा, अभिलेखों का संग्रह किया, संगीत का रिकार्ड किया। शर्मा ने पर्यटन की दृष्टि से इस नगर को विश्व पर्यटन मानचित्र पर पहुंचाया। 'लेकच्चर' दिये, इंटरव्यु दिये। संस्थान से जुडे समस्त शुभेच्छुओं, कार्यकर्ताओं तथा कवि तेज लोक कला विकास समिति के समस्त सदस्यों को शुभकामनाएं तथा श्री शर्मा की दीर्घायु की कामना।

-किशनसिंह भाटी, एडवोकेट
परामर्शदाता
मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय, जैसलमेर

सन्देश

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक कवि एवं इतिहासकार श्री एन.के.शर्मा के एकल प्रयास से स्थापित लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना के 21वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान से जुड़े संरक्षक-मंडल समिति के समस्त सदस्य, संस्था से जुडे साहित्यकारों, पत्रकारों, पर्यटन गाइडों तथा लोक कलाकारों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं। जैसलमेर पर्यटन विभाग, नगरवासियों, प्रशासन, अधिकारियों, नगरपालिका, जन-सम्पर्क कार्यालय, क्षेत्रीय प्रचार तथा नेहरू युवा केन्द्र आदि समस्त संस्थानों ने जो इन 21 वर्षों में सहयोग प्रदान किया, उसके लिए संस्थान की ओर से आभार प्रकट करता हूं।

संस्थान ने अपने अल्प साधनों से अनेंक सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन-सम्बधित आयोजन किये। जैसलमेर का स्थापना दिवस, गणगौर उत्सव, बुर्जगों का सम्मान किया। कठपुतली कला, रम्मत कला, नृत्य-नाटक, कवि गोष्ठिया, सेमिनार एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया। पर्यटक गाइड तैयार किये। आज कई लोग इस संस्थान के माध्यम से रोजगार से जुड़े है। विलुप्त होती सांस्कृतिक वस्तुओं का संग्रह कर उसकी प्रामाणिक जानकारी के साथ उसे प्रदर्शित किया गया।

मैं पुस्तिका परिचय एवं इतिहास के प्रकाशन अवसर पर परमात्मा से श्री शर्मा के सुदीर्घ स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं तथा संस्था के शुभेच्छुओं से भविष्य में भी अपना सतत सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा करता हूं। शुभकामनाओं सहित !

-महेन्द्र व्यास
मुख्य संरक्षक
मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर (राज.)

सम्पादकीय

पर्यटन विकास की सम्भावनाओं का अध्ययन कर उनकी पूर्ति के लिए राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त श्री नंदकिशोर शर्मा ने स्वैच्छिक सेवानिवृति लेकर एक नया उपक्रम किया। मरूधरा के जनकवि 'कवि तेज लोक कला समिति' का निर्माण करके लोक कला संग्रहालय की स्थापना की। प्रांरम्भ में सेवगों की बगेची में चार पांच कमरे किराये पर लेकर धन जुटाकर कला एवं संस्कृति के प्रतीकों को क्रय करके मरु लोक कला संग्रहालय (म्युजियम) का शुभांरम्भ किया। गड़सीसर स्थित संग्रहालय पुराने भवन में होनें, छोटे-छोटे कक्ष उपयुक्त नहीं होते हुए भी उनका व्यवस्थीकरण किया गया। साथ ही साहित्यिक गोष्ठियों, कवि गोष्ठियों, पत्र-वाचन, तीज, त्यौहार, स्थापना दिवस आदि समारोहों का आयोजन जारी रखा। धीरे धीरे देशी विदेशी पर्यटकों का तांता लगने लगा। स्वनामधन्य राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय व्यक्तियों ने संग्रहालय की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उत्साहवर्धन किया।

श्री शर्मा ने विधिवत् संविधान बनाकर एक संचालन समिति का निर्माण कर उनका सहयोग प्राप्त किया। इस समिति में विभिन्न क्षेत्रों यथा-साहित्य, संस्कृति, कला, संगीत, नृत्य, समाजसेवा, मरु-वनस्पति आदि के प्रमुख व्यक्तियों का निदेशक-मार्गदर्शक मण्डल बनाया गया। समय समय उनकी बैठकों के निर्णयानुसार संस्था संग्रहालय का नया भवन भूमि क्रय करके बनवाया गया। उसे सुसज्जित किया गया। तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. के आर. नारायणन् के कर कमलों से मरु सांस्कृतिक संग्रहालय का दिनांक 01 फरवरी 1997 को उद्घाटन किया गया।

विगत बीस वर्षों से संग्रहालय उतरोतर प्रगति पथ पर अग्रसर है। राज्य और राष्ट्रीय ही नहीं वरन् अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह ख्याति प्राप्त है। जिसका श्रेय संस्था के संचालक-संस्थापक, निदेशक मण्डल और कार्यसमिति सदस्यों, कर्मचारियों की निष्ठा व समर्पण भावना को जाता है। संस्थान द्वारा सफलतापूर्वक इक्कीस वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में एक एक शिक्षक की साकार परिकल्पना इतिहास एवं परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें संस्था से जुड़े व्यक्तियों द्वारा लिखित उसके विभिन्न पक्षों को उजागर करने वाले लेख, निंबध, कविताओं, संस्मरणों तथा प्रतिवेदनों को समाविष्ट किया गया है। इस प्रकाशन के लिए श्री मोहनलाल भाटिया द्वारा रूपये 11,000 (ग्यारह हजार रुपये) की आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। अतः उनका सहयोगार्थ आभार व्यक्त किया जाता है। यह पुस्तिका संग्रहालय का सर्वांग चित्र प्रस्तुत कर पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करने में समर्थ होगी। इसी आशा एवं विश्वास के साथ !

-बालकिशन जोशी
सम्पादक/संरक्षक

मरु सांस्कृतिक केन्द्र
जैसलमेर-345 001

इतिहास एवं परिचय

जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना

जैसलमेर

थार मरुस्थल के मध्य अवस्थित भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का स्वरूप लिये जैसलमेर गत दो दशकों से विश्व पर्यटन मानचित्र पर तीव्र गति से उभर रहा है। प्रति वर्ष हजारों देश-विदेश के दर्शक यहाँ आने लगे हैं। नगर जहाँ आर्थिक दृष्टि से प्रगति कर रहा है। वहाँ सांस्कृतिक मूल्य खो रहा है। रेडियो, टेलिविजन, सिनेमा और इंटरनेट हमारे जीवन की आवश्यकता बनते जा रहे हैं। उनका प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव हमारी सभ्यता और संस्कृति पर भी पड़ने लगा है। भय लगने लगा है कि हम हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को भूल न जायें।

जैसलमेर सारस्वत सभ्यता का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ की सूखी नदियों से प्राप्त जीवाश्मों से भूगर्भशास्त्रियों ने इस भूमि को अठारह सौ करोड़ वर्ष पुराना माना है। यह प्रदेश समुद्र के गर्भ में था। बाद में यहाँ सरस्वती एवं उसकी सहायक नदियाँ बहती रही। हजारों वर्षों के भौमिक परिवर्तनों के कारण इस प्रदेश का स्वरूप बदलता रहा है।

श्री कृष्ण के वंशज चन्द्रवंशी यादव राजपूत जो अपने पूर्वज बालन्द के पुत्र भट्टी नाम से प्रसिद्ध हैं। द्वारिका से गजनी (अफगानिस्तान), सिन्ध, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश तक अपना शासन करते थे। कर्नल टॉड ने लिखा है कि आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व चन्द्रवंशी भारत के धाता विधाता थे। इस्लाम धर्म के उदय के कारण इस जाति के हजारों लोग मुसलमान बन गये। जाट, जादुन, विश्नोई, जैन तथा अन्य कार्यकारी, व्यापारी एवं शिल्पकार बन गये। आज भी पंजाब से कच्छ तथा सिन्ध से मारवाड़ तक हजारों लोग निवास करते हैं। धर्म और सम्प्रदाय अलग-अलग होते हुए भी उनकी लोक संस्कृति में बहुत सी समानतायें हैं। उनकी परम्परायें, मान्यतायें, लोक विश्वास, लोक संगीत, लोक गायकी शैलियाँ मेले उत्सव तथा जीवन के हर रंग में समानतायें हैं। जो भारत की 'विविधता में एकता' का दिग्दर्शन कराती है। हमारे प्राचीन पुरखों की मानवीय भावनाओं और लोक कल्याणकारी नीतियों का स्वरूप दर्शाती है। हमारे समृद्ध संस्कारों का इतिहास बताती हैं। हमें 'सर्वे भवन्तु सुखी नः' का संदेश देती है।

भारत के सुदूर रेगिस्तान प्रदेश में अवस्थित होने के कारण आजादी के बाद भी यह प्रदेश विश्व पर्यटन मानचित्र पर नहीं आ सका। 1968 में रेल्वे के आगमन, पेट्रोल उत्खनन, इन्दिरा नहर निर्माण तथा 1974 में टूरिस्ट बंगलो, मूमल विश्राम गृह का निर्माण होने से यहाँ देश-विदेश के लोगों का आगमन बढ़ा। आज पर्यटन जिस तीव्र गति

से अपनी बांहे फैला रहा है उसे देखते हुए लगने लगा है कि हमने हमारे ऐतिहासिक स्मारकों; लोक वस्तुओं, प्राचीन हतिहास के अवशेषों, लोकगीतो, लोक कथाओं, लोक संगीत तथा हमारे जीवन में उपयोग आने वाली मंगलकारी वस्तुओं का संरक्षण नहीं किया तो यह एक दिन विलुप्त हो जायेगी। धनवान देशों के लोग अधिक धन देकर हमारी वस्तुओं को खरीद कर ले जायेंगे और हम देखते रह जायेंगे।

आज जैसलमेर के लोग कलाकार, शिल्पकार, बुनकर, गायक और वादक विश्व में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। ऐसी उच्च कोटि की लोक संस्कृति के विकास और संरक्षण की आवश्यकता को मध्यनजर रखते हुए मेरे हृदय में एक प्रकाश हुआ कि जैसलमेर की लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु प्रयास किया जाय। लेकिन यह सब कैसे हो? स्थान, धन और वस्तुओं का संग्रह आदि सारी समस्यायें मेरे सामने थी। ईश्वर मेरे हाथ से यह कठिन कार्य करवाना चाहते थे। धीरे-धीरे सारी समस्यायें स्वतः ही हल होती गई। जैसल कॅसल, नारायण निवास और जैसल टूर के संस्थापक श्री महेन्द्रसिंहजी ने मुझे देश-विदेश क लोगों को गाईड करने का सुझाव दिया। जब भी छुट्टी होती मैं गाइडिंग करता। इससे धन व ज्ञान मिलता, अच्छे-अच्छे लोगों का सहयोग मिलता, सुझाव मिलते। सर्वप्रथम जर्मनी की एक महिला केथकी डेनिके ने मुझे इस कार्य हेतु उत्प्रेरित किया। मेरी पुस्तक का सर्वप्रथम जर्मन, फ्रेंच व फिर इटालियन में अनुवाद हुआ। उनकी व गाइडिंग से होने वाली आमदनी से मैंने लोकवाद्र्यों, प्राचीन पत्थर, लकड़ी, लोह की कलाकृतियों, चित्रों, पेन्टिग, पुराने फोटुओं, पुस्तकों, पत्रों, सिक्कों, जिवाश्मों तथा अन्य वस्तुओं का संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया। वस्तुओं का संग्रह बढ़ने लगा। अब समस्या थी स्थान की जहाँ संग्रहालय स्थापित किया जाय। रात-दिन इसी चिन्ता में रहता था। एक दिन रात को स्वप्न में कवितेज को शाकद्विपीय ब्राह्मण समाज की बगेची में नृत्य व गायन करते देखा। उनके साथ हमारे समाज के श्री रतनलालजी तथा अन्य लोग भी थे। अन्य को मैं पहिचान नहीं सका। प्रातः वह स्वप्न मुझे याद रहा। मैंने सोचा कि ऐसा स्वप्न मुझे क्यों आया? इसका क्या आशय है? मेरे हृदय में प्रकाश हुआ। यह शाकद्विपीय ब्राह्मण समाज की बगेची मेहर बाग है। यहाँ देवी का सुन्दर स्थान है। उजड़ रहा है। लोगों ने इस पर अपना कब्जा जमा रखा है। जानवरों का बसेरा और चारों और कचरा बिखरा है। यह स्थान गड़सीसर तालाब पर स्थित है। जहाँ देश-विदेश के दर्शक आते हैं। यहाँ पर अपना संग्रहालय स्थापित करो। इससे शाकद्विपीय ब्राह्मण समाज की बगेची भी सुरक्षित हो जायेगी। इसका जीर्णोद्वार हो जायेगा तथा देश-विदेश के पर्यटक, विद्यार्थी और पत्रकार इससे लाभान्वित होंगे। मैंने सर्वप्रथम जेठमलजी, किशनलालजी, मेरे पिता श्री सगतमलजी, तुलसीदासजी, प्रेमराजजी आदि समाज के बुजुर्गों से सम्पर्क स्थापित किया। आपने मेरा उत्साह बढ़ाया तथा सहयोग देने का वचन दिया। श्री भगवानदास अध्यक्ष, नवयुवक मंडल शाकद्विपी ब्राह्मण समाज, श्री नखतमल, श्री राणीदान, श्री अमृतलाल चिन्तामणी, श्री मिश्रीलाल, श्री विठलदास, श्री अशोक, श्री बंशीलाल, श्री भंवरलाल, श्री राणीदान (काका), श्री भंवरलाल, श्री रमेश, श्री प्रेमशंकर, श्री मदनमोहन, दाऊ, कमल,

विमल, रामसा तथा नवयुवकों नवल, ताराशंकर, वला, जुगल, श्री हरिवल्लभ (दलाजी), श्री लक्ष्मीनारायण, श्री मांगीलालजी (प्र.अ.) आदि अनेक नवयुवकों से सम्पर्क स्थापित कर अपने विचार उनके सामने रखे। आप सबने मेरा उत्साह बढ़ाया तथा कार्य करने में सहयोग देने का वचन दिया।

1983 के नवम्बर के आस-पास मैंने भगवानदासजी (भोलिया भा) के सहयोग से बगेची 25 रुपये माह पर किराये पर लेकर कार्य करने की योजना बनाई। बगेची में लोग 5/- रुपये महीने पर किराये में रह रहे थे। श्री अमृतलालजी ने उन्हें दूसरा स्थान दिलाकर बगेची खाली करवाई। हमने बगेची में कार्य करना प्रारम्भ किया ही था कि दुर्भाग्य से एक जर्मन ग्रुप को गाईड करते समय ऊँट से गिर जाने से मेरे पांव में फ्रेक्चर हो गया और 4 माह तक मुझे अस्पताल में रहना पड़ा। एक दिन मैं अस्पताल में सो रहा था। चिंतित था कि क्या किया जाय? संग्रहालय का कार्य मेरे हाथ से सम्पन्न होगा या नहीं? उसी रात मां जगदम्बा ने स्वप्न में मेरे को आशीर्वाद दिया कि यह बाधा तुम्हारे मार्ग में इसी कारण आई है कि तुम अब गाइडिंग करना छोड़ दो। संग्रहालय के कार्य में जुट जाओ। सब काम अपने आप सम्पन्न होता जायेगा। उस दिन से मैं धीरे-धीरे तन्दुरुस्त होने लगा। मेरे को शीघ्र तन्दुरुस्त करने में मेरे बहनोई श्री अमृतलालजी का बड़ा सहयोग रहा। उनके परिश्रम, त्याग और सेवा भावना से मैं चलने फिरने लायक बन गया।

संग्रहालय की स्थापना

संग्रहालय की स्थापना हेतु सर्व प्रथम श्री किशनसिंहजी भाटी, भूतपूर्व एम.एल.ए. (एडवोकेट) से परामर्श किया गया कि मैं लोक संस्कृति के क्षेत्र में कुछ कार्य करना चाहता हूँ। आपने मेरे प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा अपना विश्वास, सहयोग एवं मुख्य परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवायें देने का वचन दिया। श्री श्याम सुन्दरजी श्रीपत, श्री मनोहर अचलवंशी, श्री बालकिशनजी जोशी, श्री लूणकरणजी पुरोहित, श्री सागीदान भाटिया, श्री केसरीमल केसरी (बाड़मेर), श्री भंवरलाल व्यास, श्री मगराज जैन, भूरचन्द जैन आदि के सहयोग से संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय किया गया। 4 अक्टूबर, 1984 को विजयदशमी के दिन श्री मंगल सक्सेना, पूर्व अध यक्ष संगीत नाटक अकादमी के मुख्य आतिथ्य में जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना की गई। जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय को सर्व प्रथम सीमान्त प्रकाशन की राशि 25000/- और सतीश कुमार शर्मा की राशि 5000/- रुपये से प्रारम्भ किया गया। इसमें श्री प्रेमराज जी शर्मा, श्री भंवरलाल व्यास, श्री अमृतलालजी, श्री जेठमलजी, श्री सगतमलजी, श्रीमती कस्तुरीबाई, श्री विजय शर्मा (जोधपुर), श्री राणुलाल करवा, श्री जैन साहब आदि के सहयोग से वस्तुओं का संग्रह किया गया।

संग्रहालय दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति करने लगा। देश-विदेश से आने वाले पत्रकारों, प्रोफेसरों, विद्यार्थियों, पर्यटकों, लेखकों तथा स्थानीय लोगों ने मेरा उत्साह

बढ़ाया। मेरे मित्र रंजन राय ने, आलोक मुखोपाध्याय एवं अखिलेश व्यास ने तथा अन्य टूर लीडरों ने आर्थिक प्रोत्साहन राशि देकर मेरा उत्साह बढ़ाया। संग्रहालय देखने आने वाले दर्शकों ने दर्शक सुझाव पंजिका में संग्रहालय की प्रशंसा की तथा उसको और बढ़ाने का सुझाव दिया।

इंग्लैण्ड के कलाप्रिय दम्पति ज्वेल जैफ

श्री अखिलेशजी व्यास जो एक समाज सेवी व्यक्ति हैं, पोकरण में ज्ञान-संधान संस्थान के संचालक थे ने इंग्लैण्ड के दम्पति श्री और श्रीमती ज्वेल जैफ से परिचय कराया। मुझे एक दिन आपके साथ रहना पड़ा। आप मेरे संग्रहालय को देखकर बहुत प्रभावित हुए, आप आक्सफार्म अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से भी जुड़े हुए हैं। आपने अपने निजी चेरिटेबल ट्रस्ट से मुझे 25000 रुपये की सहायता दी। मुझे प्रथम बार एहसास हुआ कि विदेशी लोग भी हमारी संस्कृति के संरक्षण में इतनी रूचि एवं समर्पण भावना रखते हैं। काम करने वाले व्यक्ति का इतना आदर एवं सत्कार करते हैं तथा उसे प्रोत्साहन देते हैं। मेरे हृदय में काम करने का एक नया उत्साह आ गया तथा मैंने एक दृढ़ निश्चय कर लिया कि मेरी रूचि के लोगों को इसके साथ जोड़कर एक लोककला विकास समिति का निर्माण किया जाय।

कवि तेज लोक कला विकास समिति

जैसलमेर के मेरे विश्वासी मित्रों को जोड़कर मैंने जैसलमेर के लोक नाट्यकार स्व. कवितेज के नाम से कवितेज लोक कला विकास समिति का निर्माण किया। श्री प्रेमराज सेवक को इस संस्था का अध्यक्ष तथा किशनसिंह भाटी को परामर्शदाता व संरक्षक बनाया। मैंने संग्रहालय में सेवा भावना से कार्य करना प्रारम्भ किया। संग्रहालय का खर्च, व्यवस्था सहायता से चलाया जाने लगा। मेरे पिताजी ने मुझे हस्तलिखित पुस्तकें प्रदान की तथा श्री अमृतलालजी सेवक, श्री विजय शर्मा, श्रीमती कस्तुरीबाई जैन, श्री मोहनसिंह सिंघवी, श्री भंवरलाल व्यास, श्री मेघराज पालीवाल व श्री ईश्वरसिंह भाटी का मुझे सहयोग मिला।

सहायता राशि का उपयोग

भवन निर्माण हेतु राशि शाकद्विपीय ब्राह्मण समाज को एडवांस दी गई है वह किराए के रूप में जमा होती जायेगी। ऐसा इसलिए किया गया कि संस्था के पास भूखण्ड नहीं है। इस बगेची के आगे पड़े भूखण्ड हेतु प्रयास भी किया गया लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। प्रयास जारी हैं। सफलता मिलने पर भवन निर्माण हेतु कार्य किया जाएगा। भवन निर्माण के सम्बन्ध में मुझे इतना ही कहना है कि व्यक्ति के कार्यों का मूल्यांकन बाहर के लोग करते हैं अपने नहीं। 'घर का जोगी जोगना और गाँव का सिद्ध'।

–नन्दकिशोर शर्मा

विविध क्षेत्रों में नन्दकिशोर शर्मा का योगदान

पश्चिमी राजस्थान के सीमान्त प्रदेश जैसलमेर में जन्मे राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से पुरस्कृत सेवानिवृत्त शिक्षक एवं विश्व प्रसिद्ध 'गोल्डन सिटी' पुस्तक के लेखक, इतिहासकार, कवि एवं रम्मत कला के श्रेष्ठ कलाकार श्री नन्दकिशोर शर्मा का नाम देश, समाज एवं राष्ट्रहित के लिए अभूतपूर्व कार्य करने वाले विशिष्ट कला पुरोधाओं में आता है। शाकद्वीपीय मग भोजक ब्राह्मण श्री सगतमलजी मथुरिया पुजारी एवं रम्मत कला के कलाकार के यहां आषाढ़ शुक्ला नवमी संवत् 1994 (हाई स्कूल प्रमाण पत्र में 1 जनवरी 1938) को हुआ।

श्री शर्मा द्वारा देश, समाज एवं राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए किया गया कार्य आने वाली पीढ़ियों को सदा प्रेरणा देता रहेगा। 'एकला चालो रे' की तर्ज पर अपने ही एकल प्रयास से तन-मन-धन लगाकर मरु सांस्कृतिक केन्द्र एवं लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना जैसा अद्भुत कार्य शर्मा ने किया है। न सांसद, न विधायक, न पार्षद, न कोई धनाढ़्य व्यक्ति के आगे हाथ फैलाया, न किसी राजनैतिक या आर्थिक संस्थाओं का आशीर्वाद लिया। सबको सम्मान भाव से सबके लिए जनहितार्थ कार्य करने वाले श्री शर्मा ने कभी भी अपने लिए पुरस्कार, सम्मान या यश की भी इच्छा नहीं की। महात्मा गांधी के विचारों से उत्प्रेरित सादा जीवन, उच्च वाणी के मूल मंत्र के साथ कार्य किया और करते जा रहे हैं।

नन्दकिशोर शर्मा ने एम.ए. इतिहास में किया तथा शिक्षक के रूप में सेवा कार्य करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया। साधारण ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर मरु प्रदेश की विषम परिस्थितियों में तन-मन-धन लगाकर इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति, लोकनाट्य, प्रशिक्षण, पर्यटन विकास, भावात्मक एकता, पर्यावरण (गोडावण पक्षी) के संरक्षण के क्षेत्र में काम किया। 1993 में सेवानिवृत्ति की राशि से भवन निर्माण का कार्य करवाकर महामहिम राष्ट्रपति के.आर. नारायणन के कर कमलों से 1 फरवरी 1997 को उसका उद्घाटन करवाया। आज इस संग्रहालय में प्रति वर्ष 40,000 पर्यटक, विद्यार्थी एवं स्थानीय निवासी देखने आते हैं तथा मरु प्रदेश में बहने वाली सरस्वती के किनारे विकसित हमारी सांस्कृतिक धरोहरों को देखकर अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। जैसलमेर आज 'गोल्डन सिटी' के नाम से जाना जाता है। उसके पीछे श्री शर्मा का मौन-मूक श्रम छिपा है।

मरु सांस्कृतिक केन्द्र एवं लोक सांस्कृतिक संग्रहालय के संस्थापक श्री शर्मा के सम्बन्ध में अतिविशिष्ठ देश-विदेश के व्यक्तियों द्वारा व्यक्त किये गये विचार :

मरु प्रदेश के इतिहास, पुरातत्त्व, कला एवं लोक संस्कृति को संरक्षण देने के गत पचास वर्षों में जो प्रयास हुए हैं उनमें जैसलमेर जिले के राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सेंवानिवृत्त

शिक्षक, इतिहासकार एवं राजस्थानी भाषा के कवि श्री नन्दकिशोर शर्मा का एकल प्रयास अपना विशिष्ट महत्व रखता है। श्री शर्मा ने अपनी निजी प्रयास से मरु प्रदेश के इतिहास व लोक संस्कृति का संरक्षण करने हेतु 1984 में जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना की तथा आज तक इसका निरन्तर विकास समर्पित भाव से करते आ रहे हैं।

विश्व में अपनी पहचान रखने वाले इस मरु सांस्कृतिक केन्द्र (कवि तेज लोक कला भवन) का निर्माण शर्मा ने अपने स्वयं के श्रम से अर्जित धन से किया है। इसका उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री के.आर. नारायणन के कर कमलों से हुआ। महामहिम ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा-

"1 फरवरी 1997 - सबसे पहले मैं आप सबको बधाई देता हूँ कि आपने आज प्रातः मेरा, मेरी पत्नी, मेरे परिवार एवं मेरे साथियों का इतनी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। मेरे लिए एक आनन्द की अनुभूति है कि मैं इस मरु सांस्कृतिक केन्द्र में आया। मैं जानता हूँ यह केन्द्र केवल एक व्यक्ति श्री नन्दकिशोर शर्मा के एकल प्रयास का प्रतिफल है। इनका यह कार्य जैसलमेर ही नहीं अपितु राजस्थान, भारत एवं सारे जगत के लिए माहन् योगदान है। इन्होंने जैसलमेर की कला, संस्कृति का संग्रहण एवं प्रदर्शन किया है।

जैसलमेर का अपना सुनहरा इतिहास रहा है। इतिहास की बहुत सी गाथाओं के रास्ते तथा बहुत सारे व्यापारिक मार्ग यहाँ से होकर गुजरे। हमारे इतिहास में जैसलमेर का एक महत्वपूर्ण स्थान है। स्वर्ण नगरी जैसलमेर की कला व संस्कृति का संग्रहण एवं संरक्षण कर श्रीमान् नन्दकिशोर शर्मा ने अपने आपको अमर कर दिया है। इनका कार्य भावी पीढ़ी के लिए एक अनुपम भेंट है। मैं इन्हें इनके कार्य के लिए बधाई देता हूँ तथा सभी देशवासियों की ओर से इस सृजनात्मक कार्य के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

लोक सांस्कृतिक संग्रहालय देखकर माननीय प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा-"एक व्यक्ति यदि धुन का पक्का हैं तो क्या नहीं कर सकता है, इसकी छोटी सी झलक श्री शर्मा का लोक सांस्कृतिक संग्रहालय देखकर पाई जा सकती है।

जैसलमेर की खोती हुई लोक संस्कृति, सभ्यता को सुरक्षित रखने में जो अनेक प्रयास हो रहे हैं उसमें शर्मा का एकल प्रयास प्रशंसनीय है। मैं उन्हें बधाई देता हूँ और उनके प्रयास के उत्तरोतर सफलता चाहता हूँ।" इनके अलावा अज्ञेय, मोरशिश के प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथन, लता मंगेशकर, साहित्यकारों, कवियों, पत्रकारों, लेखकों आदि ने शर्मा के अभूतपूर्व कार्य की प्रशंसा की है।

राजस्थानी साहित्य सेवा

श्री शर्मा राजस्थानी भाषा के श्रेष्ठ कवि तथा राजस्थान की लोक संस्कृति के मर्मज्ञ हैं। इन्होंने राजस्थानी में अनेक काव्य रचनाएं लिखीं, जिसमें डिंगल भाषा की लोंगेवाला

की लड़ाई, लोक व्यवहार पर मनख रो मोल, ग्रामीण कठिन जीवन पर भीलणी, राष्ट्रीय एकता पर एकता में प्यार है, परिवार कल्याण, साक्षरता आदि अनेक विषयों पर रचनाएं लिखीं। आकाशवाणी कवि सम्मेलनों, कवि गोष्ठियों तथा पत्र-पत्रिकाओं में इसका प्रसारण व प्रकाशन किया। आप कोलकाता, जामनगर, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, पाली, सोजत, बाड़मेर आदि अनेक स्थानों पर आमंत्रित किए गए तथा सम्मान के साथ रचनाएं पढ़ीं। दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, जलते दीप, जागती जोत, मरु महिमा, परम्परा, ललकार, महाज्ञान, जनसत्ता तथा अनेक साप्ताहिक पत्रों में छपे।

अंतर प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद्

जोधपुर के श्री नेमीचन्द जैन भावुक द्वारा संस्थापित परिषद् की जैसलमेर शाखा के 25 वर्षों तक मंत्री पद पर कार्य करते हुए राजस्थानी साहित्य, हिन्दी एवं राजस्थानी अकादमी के सहयोग से अनेक कवि सम्मेलन, उपनिषद्, सृजन साक्षात्कार, एकल काव्य पाठ, पाठक मंच आदि कार्यक्रम आयोजित किये तथा स्थानीय नवयुवकों में साहित्य जागृति पैदा करने के लिए कविता, निबंध आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर पुरस्कृत किया तथा उन्हें प्रमाण पत्र दिये। श्री शर्मा राजस्थान साहित्य अकादमी की सरस्वती सभा के सदस्य रहे हैं।

कवि तेज लोक कला विकास समिति

श्री शर्मा ने 1987 में लोक संस्कृति के संरक्षण तथा मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय के संचालन में सहयोग एवं परामर्श हेतु कवि तेज लोक कला विकास समिति का गठन कर उसे पंजीयन करवाया, संस्था के माध्यम से अनेक सांस्कृतिक उत्सव, मेले, प्रतियोगिताएं, सम्मान समारोह, प्रकाशन आदि का कार्य सफलता के साथ किया।

पर्यटन

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए श्री शर्मा द्वारा किया गया प्रयास पर्यटन के इतिहास में अमर रहेगा। आपकी अंग्रेजी की प्रथम पुस्तक जैसलमेर दी गोल्डन सिटी 1978 में प्रकाश में आई। इस पुस्तक से देश-विदेश के लेखकों ने लाभ उठाया। जिसमें लोनलीप्लेनेट, गिड रोतार्ज, गिड ब्लु, रफ गाइड, इनसाइड राजस्थान आदि पुस्तकें लिखी गईं तथा देश-विदेश से आने वाले समस्त दर्शकों को इसका लाभ मिला। विदेशी लेखकों ने श्री शर्मा की यह पुस्तक (गोल्डन सिटी) क्रय कर अवश्य पढ़ने हेतु पर्यटकों को उत्प्रेरित किया। प्रारम्भ में इस पुस्तक की कीमत 15 रुपये थी और अभी 60 रुपये है। इसका जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश में अनुवाद हो गया है। डच एवं फलेमिश भाषा में इसका अनुवाद हो रहा है। श्री शर्मा को महामहिम राष्ट्रपति वेंकटरमण, नीलम

संजीव रेड्डी, भूतपूर्व पर्यटन कला संस्कृति मंत्री गुलाम नबी आजाद तथा विश्व के अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए गाइडिंग का कार्य करने का सौभाग्य मिला। पर्यटकों को इतिहास, कला, संस्कृति एवं पर्यटन की प्रामाणिक जानकारी देने हेतु श्री शर्मा ने लगभग 100 नवयुवकों को गाइड का प्रशिक्षण दिया और उन्हें पर्यटक मित्र परिचय पत्र देकर रोजी रोटी पर लगाया।

सम्मान

श्री शर्मा को पर्यटन विभाग, रोटरी क्लव, गिरधर ट्रस्ट, गोरबंध पैलेस होटल तथा जिला प्रशासन एवं राजस्थान पर्यटन विभाग के अलावा राष्ट्रीय स्तर पर 1987 में श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित किया गया है। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी का कला पुरोधा सम्मान आपको प्राप्त है। शाकद्वीपीय ब्राह्मण समाज बीकानेर चेरिटेबल ट्रस्ट के अलावा सैकड़ों साहित्यिक संस्थाओं ने समय-समय पर आपको सम्मानित किया है।

रम्मत कला

विलुप्त होती मरु प्रदेश की लोकनाट्य कला रम्मत को पुनर्जीवित करने का श्रमसाध्य कार्य किया तथा उस ओर आज भी प्रयास जारी है। जैसलमेर, बीकानेर, फलौदी, बाप, पोकरण आदि क्षेत्रों में रात-रात भर लोकानुरंजन करने वाले रम्मत कलाकारों को संगठित कर राजा जोग भर्तृहरि का ख्यात उदयपुर एवं दिल्ली में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी एवं सांस्कृतिक शोध कार्यक्रम के अन्तर्गत मंचन किया गया। श्री शर्मा ने स्वयं साक्षरता, परिवार कल्याण एवं एड्स जैसे सामाजिक जाग्रति के विषय पर माई होटल ब्युटीफुल एवं आतंक का हो अन्त जग से रम्मतें लिखीं तथा आकाशवाणी से प्रसारण हुआ। ओडियो कैसेट निर्माण साक्षरता समिति द्वारा किया गया और मरु सांस्कृतिक केन्द्र में व जैसलमेर स्थापना दिवस (845वें) पर उसका मंचन किया। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अनुरोध पर रम्मत लोकनाट्य कला के इतिहास पर मोनोग्राफ लिखा। जैसलमेर की रम्मतें शीर्षक से संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशन किया गया। श्री शर्मा ने स्वयं ने पिंगला, वैश्या, दासी आदि स्त्री पात्र तथा विक्रम, दीवान, कृष्ण, महतर आदि पुरुष पात्रों का अभिनय किया। विभिन्न नृत्य गीतों, दोहों, बंदिशों तथा समय-समय की राग-रागनियां गायन नृत्य संवादों के साथ अभिनय कला को प्रोत्साहित कर लोक संस्कृति की अनूठी लोकनाट्य कला में प्राण फूंकने का कार्य किया है। दिल्ली व उदयपुर में यहां के कलाकारों को ले जाकर मंचन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री शर्मा ने अपने जीवन काल में श्री कृष्ण कम्पनी, कवि तेज अखाड़ा के माध्यम से राजा हरिश्चन्द्र, कृष्ण सुदामा आदि नाटकों का मंचन कर राजा हरिश्चन्द्र एवं

सुदामा के चरित्रों का अभिनय किया। नगर परिषद् को सहयोग देकर रामलीला का सदर मंडी में मंचन करवाया। विद्यालयों में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, राजस्थान स्थापना दिवस आदि पर बालक बालिकाओं को प्रशिक्षण देकर कार्यक्रमों का आयोजन किया। सांस्कृतिक प्रचार एवं इतिहास सम्बन्धी लगभग 2000 स्लाइडों का संग्रह किया तथा मरु प्रदेश के लोकगायक लंगा मांगणियारों, ढोलियों, कालबेलियों, जोगियों एवं सोकिया आदि कलाकारों के गीतों का रिकार्डिंग कर मरु सांस्कृतिक केन्द्र में सुरक्षित किया। कवि तेज लोक कला के माध्यम से प्रतियोगिताएं आयोजित की। श्री शर्मा एक कुशल गीतकार हैं। इनके लिखे गीत विछुड़िया एच.एम.वी द्वारा रिकार्ड हुआ। जिसका प्रसारण आज भी हो रहा है। आपके रचे काक रे किनारे, हींडो आदि गीत आज भी गाये बजाये जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्राजिल एवं इजरायल में मय हिन्द राजस्थान एवं जैसलमेर आये! सीडियों में नन्दकिशोर शर्मा की कॉमेन्ट्री एवं इंटरव्यू है।

मेल उत्सव

स्वतंत्रता के बाद विलुप्त होते पारम्परिक मेले गणगौर, तीज तथा दशहरा के मेलों का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय ऐतिहासिक संस्कृति के प्रति स्थानीय लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए इन मेलों का आयोजन कर लोक संस्कृति के क्षेत्र में प्रोत्साहन दिया। जैसलमेर एवं राजस्थान दिवस पर नगर की बालक बालिकाओं के लिए गोरी-ईसर, मेहंदी मांडणा एवं त्यौहार पर गाये जाने वाले गीतों की प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

संगीत

मरु प्रदेश के लगभग सौ लोकवाद्यों को इकट्ठा किया गया तथा उसे मरु सांस्कृतिक केन्द्र में सुरक्षित किया गया। लंगा, मांगणियारों तथा पेशेवर गायकों पर शोध कार्य कर सांस्कृतिक इतिहास लिखा।

इतिहास एवं पुरातत्त्व

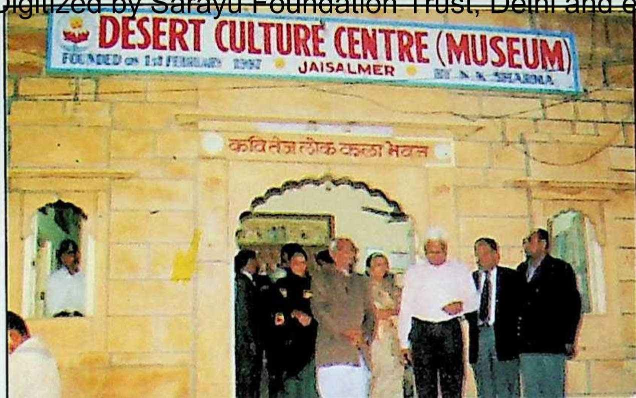
श्री शर्मा ने गांव-गांव घूम कर गोवर्धनों, जूझारों, सतियों तथा धार्मिक स्मारकों पर उत्कीर्ण सैकड़ों अभिलेखें का अध्ययन कर ऐतिहासिक महत्व के बिजड़ासर, ओला, कूंडा, चूंधी, वैशाखी आदि स्थानों के अलावा नगर के आसपास बने तालाबों, कूपों, धर्मशालाओं, गउ स्तम्भों, मन्दिरों, देवस्थानों आदि के गोवर्धन अभिलेखें के चित्र लिये तथा कागजों पर अपने विद्यार्थियों से छापें लीं। राजकीय संग्रहालय में कई महत्वपूर्ण अभिलेखों को सुरक्षित करवाया। टीलो की प्रोल को श्री शर्मा द्वारा संग्रहीत शिलालेख के प्रमाण से ही प्रशासन द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया। गड़ीसर सरोवर स्थित टीलो नामक गायिका की प्रोल की स्मृति की कहानी आज ही नहीं सदा सदा के लिए अमर रहेगी।

लेखन एवं प्रकाशन

श्री शर्मा ने अपने जीवन काल में अनेक पुस्तकें लिखीं और उसका प्रकाशन कर इस प्रदेश की सेवा की है :-

1.	जैसलमेर परिचय	1970
2.	झरोखों की नगरी	1975
3.	जैन तीर्थ	1978
4.	जैसलमेर की हवेलियां	1980
5.	पंखेरूओं के गीत	1985
6.	जैसलमेर की लोक देवियां	1990
7.	जैसलमेर का राजनैतिक इतिहास	1993-94
8.	जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास	1993-94
9.	सुनहरा नगर	1994
10.	मूमल की कथा	1995
11.	माई होटल ब्युटीफुल	2000
12.	आतंक का अंत हो जग से	2001
13.	हमारे आराध्य पंचदेव	2002
14.	जैसलमेर की रम्मतें	2002
15.	वैवाहिक गीत (राजस्थानी)	2002
16.	शब्द सुधा रस (कविता संग्रह)	2003
17.	काक रे किनारे (राजस्थानी)	2003
18.	मंझीरा बाजे ढोल (राजस्थानी)	2003
19.	दोहे छंद (राजस्थानी)	2003
20.	चन्द्रलोक कविता (हिन्दी)	2003
21.	एकता में प्यार है	2003
22.	एक बन्दर की कहानी (बाल काव्य)	2003
23.	आईनाथ अड़तानीसी	2003
24.	शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु	2003
25.	श्री नाथद्वारे	2003
26.	कोमिक बुक मांड प्रदेश की लोक कथाएं	2003
27.	त्रिकूटगढ़ (संशोधित एवं परिवर्द्धित)	2004

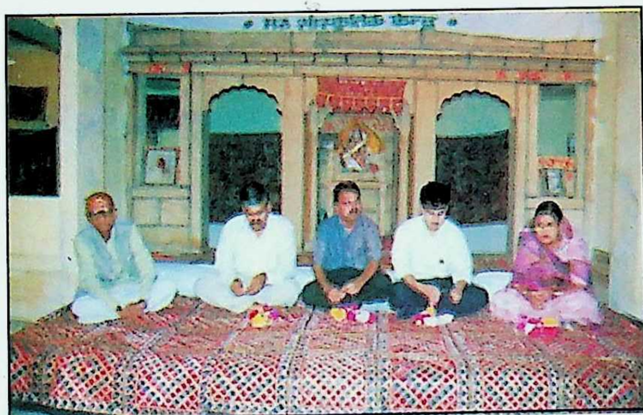
राजस्थान की शोध पत्रिकाओं चरदा, मरुश्री, मरुवाणी, परम्परा, संगीत नाटक अकादमी दिल्ली, जोधपुर, साहित्य आकदमी पत्रिकाओं तथा भारतीय कला मंडल की पत्रिकाओं में प्रकाशन किया। मरु सांस्कृतिक केन्द्र में पट्टों-परवानों, ताम्रपत्रों, चिट्ठियों,



मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय भवन का बाहरी दृश्य, आगे खड़े हैं राजस्थान उच्च न्यायालय मुख्य न्यायाधीश एवं श्री नन्दकिशोर शर्मा



मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय में पर्यटन कला सचिव ललित के. पंवार को कठपुतली कला एवं 'भाटियों रो नगारो' का अवलोकन कराते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय में आयोजित समारोह में जिला कलेक्टर सुधांशु पंत एवं श्री निरंजन आर्य, पुलिस अधीक्षक श्री भगवानलाल सोनी, उप जिला प्रमुख श्रीमती गंगादेवी व्यास एवं सौभाग्यमल जैन



मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय का अवलोकन करते हुए
जिला कलेक्टर श्री खन्ना साहब एवं श्री सियाराम मीणा साथ में हैं श्री नन्दकिशोर शर्मा



जिला कलेक्टर श्री निरंजन आर्य, श्री रामसिंह मेड़तिया एवं श्री महेन्द्र व्यास
को मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय का अवलोकन कराते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



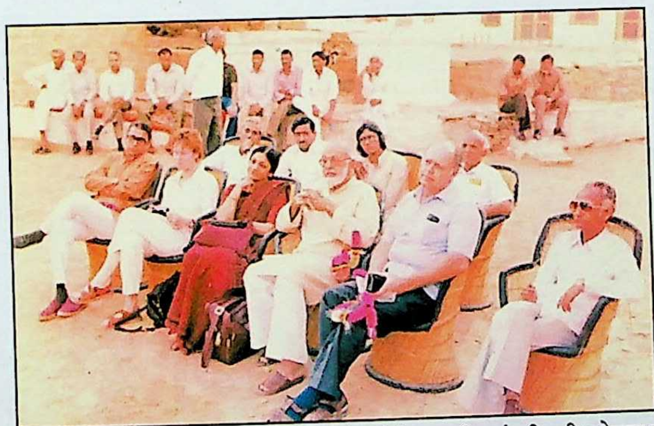
मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय का अवलोकन करते हुए जिला कलेक्टर श्री गोयल साहब
साथ में हैं संग्रहालय के संस्थापक श्री नन्दकिशोर शर्मा



मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय का अवलोकन करते डॉ. फरोदा साहब, पर्यटन सचिव श्री ललित के. पंवार एवं जिला कलेक्टर श्री सुधांशु पंत



जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय देखने आये महाराष्ट्र के पत्रकारों के ग्रुप के साथ श्री नन्दकिशोर शर्मा



प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अज्ञेयजी, जर्मनी के प्रोफेसर श्री एवं श्रीमती लोठार लुत्से शीन काफ निज़ाम, नन्दकिशोर आचार्य, बालकृष्ण जोशी, मनोहर अचलवंशी आदि



जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्री मंगल सक्सेना साथ में हैं संग्रहालय के संस्थापक श्री नन्दकिशोर शर्मा एवं संरक्षक किशनसिंह भाटी



जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय के संस्थापक श्री नन्दकिशोर शर्मा को शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 19 के अवसर पर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करते हु भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री ज़ानी जैलसिंहजी



लोक सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति मेघराज बिसानी, श्रीमती देवी बिसानी व शंभुदान रतनू-पी आर ओ



जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय में चितेरा श्री देवीलाल प्रजापत द्वारा बनाये गये भित्तिचित्र सामने खड़े हैं श्री नन्दकिशोर शर्मा

श्री नन्दकिशोर शर्मा के निर्देशन में आयोजित विभिन्न समारोह



श्री श्यामसुन्दर श्रीपत काव्य पाठ करते हुए
तथा अध्यक्षता करते हुए महारावल ब्रजराजसिंह



समाजसेवी भगवानदास महेश्वरी अपने
विचार प्रकट करते हुए



राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से
आयोजित कार्यक्रम में गान प्रस्तुत करती हुई
कमला नेहरू विद्यालय की छात्राएं



केसैट के लोकार्पण समारोह के अवसर पर
पूर्व विधायक जैसलमेर श्री गोवर्धन कल्ला



गणगौर-ईसर कला संरक्षण में जुटे
श्री नन्दकिशोर शर्मा



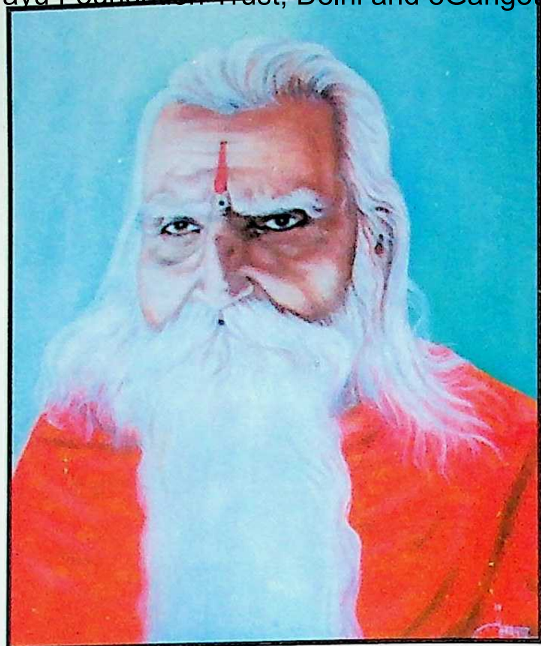
मरु सांस्कृतिक केन्द्र में आयोजित मेहन्दी
प्रतियोगिता में प्रतिभागी महिलाएं



लोक सांस्कृतिक संग्रहालय में गणगौर दर्शन 1999

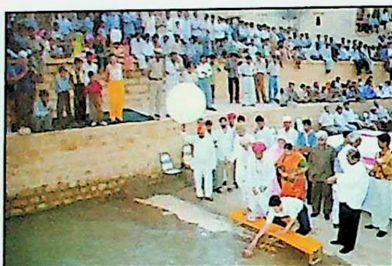


गणगौर पर्व पर आयोजित गौरी-ईसर प्रतियोगिता



श्री नन्दकिशोर शर्मा के पिता स्व. श्री सगतमलजी शर्मा

• श्री नन्दकिशोर शर्मा के निर्देशन में आयोजित विभिन्न सम



841वें जैसलमेर स्थापना दिवस पर 841 दीपकों से पूजन करते नागरिकगण



गणगौर दर्शन 1987



लोकगीत गायन प्रतियोगिता के अवसर पर शोभा हर्ष, शोभा भाटिया, ईश्वरी भाटिया

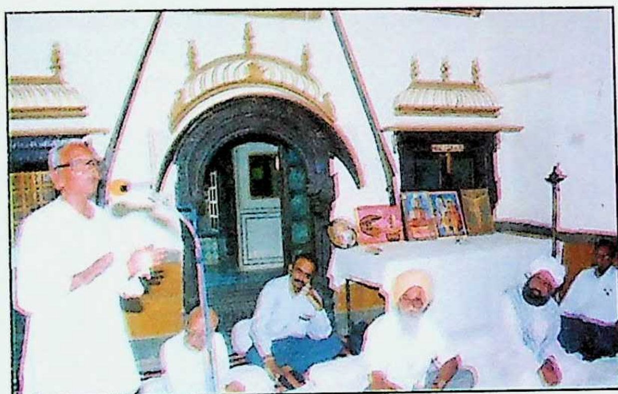


नृत्य प्रतियोगिता

श्री नन्दकिशोर शर्मा द्वारा समारोहों में सहभागिता



इतिहासविद मरु सांस्कृतिक संग्रहालय के निदेशक श्री नन्दकिशोर शर्मा
केन्द्रीय विद्यालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए



इतिहासविद मरु सांस्कृतिक संग्रहालय के निदेशक श्री नन्दकिशोर शर्मा
मन्दिर पैलेस में राष्ट्रीय एकता विषय पर विचार व्यक्त करते हुए



इतिहासविद मरु सांस्कृतिक संग्रहालय के निदेशक श्री नन्दकिशोर शर्मा
जैसलमेर स्थापना दिवस पर इतिहास पर विचार व्यक्त करते हुए

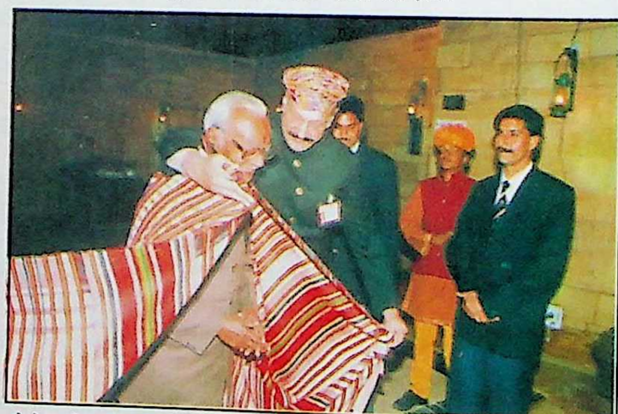
श्री नन्दकिशोर शर्मा का सम्मान



राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने पर श्री नन्दकिशोर शर्मा का स्वागत करते श्री श्यामसुन्दर श्रीपत



जैसलमेर स्थापना दिवस के अवसर पर महारावल ब्रजराजसिंहजी
द्वारा सम्मान प्राप्त करते श्री शर्मा



श्री गोरबंध पैलेस होटल, जेसलमेर में श्री शर्मा का स्वागत करते श्री ललितसिंहजी सिसोदिया

श्री नन्दकिशोर शर्मा का सम्मान



श्री कृष्ण युवा संस्थान की ओर से श्री नन्दकिशोर शर्मा को
स्वर्ण नगरी शिखर सम्मान प्रदान करते हुए पूर्व विधायक श्री गोरधन कल्ला

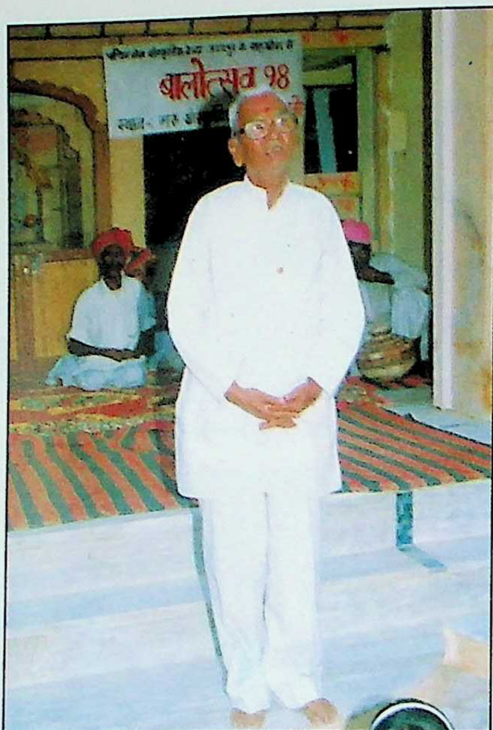


बीकानेर में शाकद्वीपीय ब्राह्मण बन्धु चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा श्री नन्दकिशोर शर्मा को
सम्मानित करते हुए खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री भवानीशंकर शर्मा



श्री नन्दकिशोर शर्मा को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए वयोवृद्ध संगीतकार

श्री नन्दकिशोर शर्मा



बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



जैसलमेर के शिलालेखों के अन्वेषक श्री नन्दकिशोर शर्मा

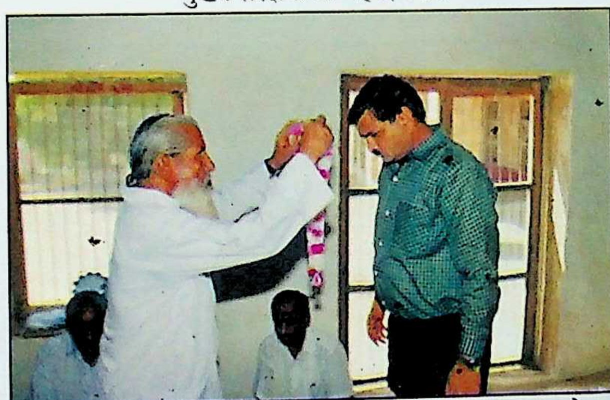
इन का संस्थान सदा आभारी रहेगा



पर्यटन, कला संस्कृति विभाग के सचिव श्री ललित के. पंवार
मरु सांस्कृतिक केन्द्र में कठपुतली कला का अवलोकन करते हुए



पूर्व जिलाधीश जैसलमेर श्री निरंजन आर्य का स्वागत करते हुए
मुख्य संरक्षक श्री महेन्द्र व्यास



पूर्व जिलाधीश जैसलमेर श्री सियाराम मीणा का स्वागत करते हुए
अध्यक्ष कवि तेज लोक कला विकास समिति श्री प्रेमराज शर्मा

पूर्व जिलाधीश श्री सीयाराम मीणा के सहयोग एवं
आशीर्वाद से ही यह संस्थान अपनी पहचान बना सका है

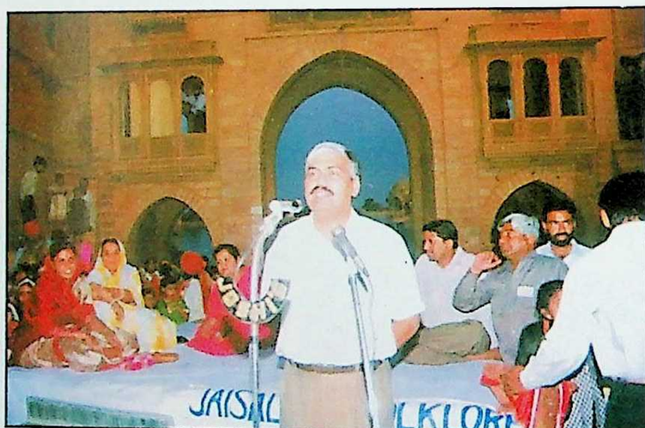
इनका संस्थान सदा आभारी रहेगा



पूर्व जिलाधीश जैसलमेर श्री सुधाश पंत का स्वागत करते हुए
श्री नन्दकिशोर शर्मा संस्थापक मरु सांस्कृतिक केन्द्र



पूर्व जिलाधीश जैसलमेर श्री कुलदीप रांका का स्वागत करते हुए
केन्द्र के उपाध्यक्ष श्री विमल शर्मा

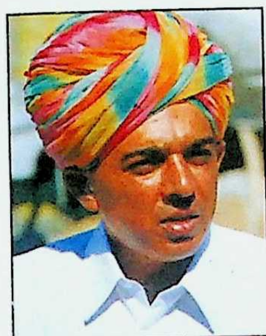


पूर्व पुलिस अधीक्षक श्री भगवानलाल सोनी लोक सांस्कृतिक संग्रहालय में
अपने विचार प्रकट करते हुए

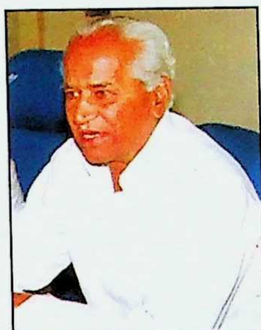
संस्थान इन महानुभावों का सदैव आभारी रहेगा



डॉ. ललित के. पंवार



श्री मानवेन्द्रसिंह जसोल
वर्तमान सांसद बाड़मेर



श्री गोर्वधन कल्ला
पूर्व विधायक जैसलमेर



श्री सांगसिंह भाटी
वर्तमान विधायक जैसलमेर



श्री जालमसिंह रावलोत
वर्तमान विधायक शिव क्षेत्र

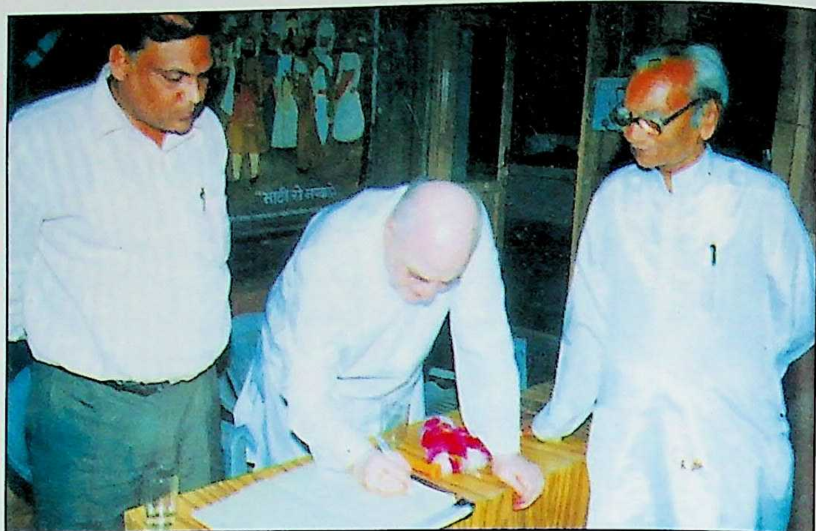


श्री साले मोहम्मद
जिला प्रमुख जैसलमेर

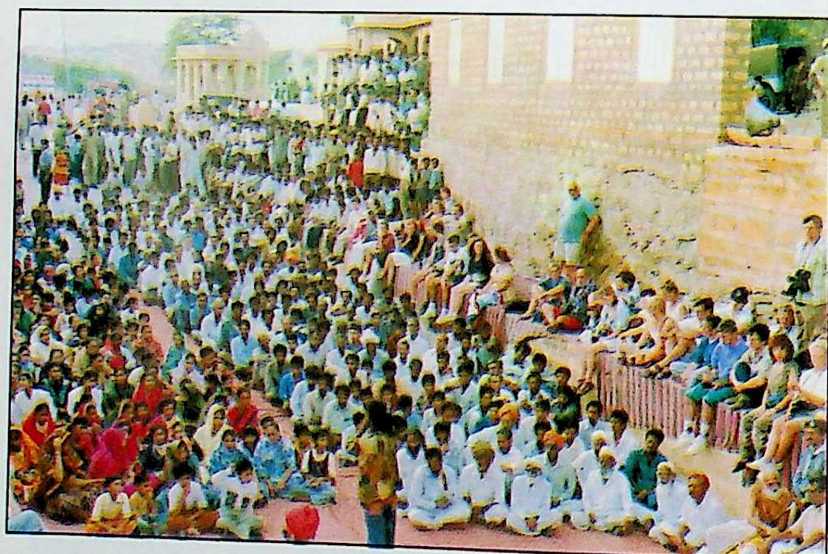


श्री पी.एल. अग्रवाल
वर्तमान जिलाधीश जैसलमेर

संस्थान इन महानुभावों का सदैव आभारी रहेगा



मरु सांस्कृतिक केन्द्र की विजिट बुक में
अपना अभिमत लिखते हुए मोहनलाल भाटिया



841वां जैसलमेर स्थापना दिवस पर
भव्य समारोह में उपस्थित जनसमुदाय

हुंडियों, सिक्कों, पायलियों, बाटों माप व नाम के उपकरणों तथा प्राचीन समय में प्रचलित अंकों का संगह किया। पुराने स्टाम्पों, डाक टिकटों का संग्रह किया। लकड़ी की तखतियों, लेख पट्टिकाओं का भी संग्रह कर उन्हें सुरक्षित किया।

ग्रन्थालय

नगर के लोगों से क्रय कर तथा अपने पिता श्री सगतमलजी शर्मा के निजी संग्रह की पुस्तकों को मरु सांस्कृतिक केन्द्र के संग्रहालय में सुरक्षित किया। इसमें हस्तलिखित गीत गोविन्द, जैसलमेर की तवारीख, लोक कथाएं, लोक वाणियां, शकुन विचार, ज्योतिष, आयुर्वेद, काव्य, रामायण, महाभारत, धार्मिक कर्मकाण्ड, पुराण तथा लोकानुरंजन की दृष्टि से लिखी प्रेम कथाएं, रम्मतें, लोक गीत, भजन आदि के अलावा लगभग 100 वर्षों पूर्व छपी स्थानीय लेखकों मेहता उम्मेदसिंह, सेवग लक्ष्मीचंद, मेहता नथमल, मेहता रघुनाथसिंह, कवि तेज, सांगीदान गोपा, पंडित हरिदत्त व्यास, विवेकानन्द सुगनलाल, मोतीलाल, भेरूदान, कवि तेजमाल बिस्सा पोकरण के अलावा झाड़-फूंक, मंत्र-तंत्र भोग, कामकला विज्ञान, संतों का वाणियों आदि पर ग्रंथ इकट्ठा कर शोध के विद्यार्थियों को अमूल्य निधि दी है। जिसका विद्यार्थी भरपूर लाभ उठाते हैं।

ललित कला

जैसलमेर से विलुप्त होती चित्रकला में जैसलमेर की चित्र शैलीअपनी पहचान खोती जा रही है। पुराने मन्दिरों, हवेलियों, महलों तथा पुस्तकों एवं लघु चित्रों प पट्टों परवानों एवं दीवारों के भित्ति चित्रों की स्लाइडें खींचकर तथा पुराने फोटोग्राफरों शिव शंकर जोशी, नखतमल जोशी, अजन्ता स्टूडियो आदि से चित्र खरीदकर संग्रह कर मरु सांस्कृतिक केन्द्र में इकट्ठा किया। इसमें कई राजा महाराजाओं के चित्र हैं। लिथो प्रिंट चित्रों में राजा रवि वर्मा के चित्रों का अमूल्य संग्रह है।

लोक कलाकारों को प्रोत्साहन

स्थानीय चित्रकार देवीलाल, लक्ष्मण गोयल से श्यामसुन्दर श्रीपत एवं भंवरलाल व्यास संस्था के संरक्षकों के नेतृत्व में जैसलमेर की सांस्कृतिक चित्रों को पुनर्जीवित करने के लिए जैसलमेर की शैली की अनुकृतियाँ तैयार करवाई गई तथा बालाकों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। भित्तिचित्रों के रूप में संग्रहालय की दीवारों पर पारम्परिक चित्रों का निर्माण करवाया गया। जैसलमेर की चित्रकला के इतिहास पर कार्य कर उसका प्रकाशन किया गया। श्यामदेव पालीवाल एवं विनोद शर्मा के चित्रों की प्रदर्शनी लगवाई।

मृण कला

मृण मिट्टी की वील कला अब प्रायः समाप्त हो रही है। ग्रामीण महिलाएं गांवों में घर की दीवारों पर मिट्टी एवं घोड़े की लीद से झरोखानुमा सुन्दर आकृतियां बनाती हैं

उसे रेशमी धागों, मिट्टी के घुंघरूनुमा बनाकर सजाती हैं। मघाराम मेघवाल देवड़ा निवासी के सहयोग से मूमल का मिट्टी का सुन्दर महल बनवाया जो देश-विदेश के पर्यटकों का आकर्षण का केन्द्र है।

कठपुतली कला

कठपुतली कलाकारों को मरु सांस्कृतिक केन्द्र में सम्मानपूर्वक मंच दिया। पहले ये गांव गांव में जाते थे अपना कार्यक्रम देते थे लेकिन सिनेमा, टीवी आदि मनोरंजन के साधनों ने इनको बहुत प्रभावित किया है। मरु सांस्कृतिक केन्द्र ने इनको रोजी रोटी पर लगाया। रमेश, जगदीश, कैलाश आदि मरु सांस्कृतिक केन्द्र प्रतिदिन कार्यक्रम देते हैं और अपनी आजीविका चलाते हैं। कठपुतलियां बनाते हैं और बेचते हैं। सीधा पैसा कलाकार के पास जाता है।

विविध क्षेत्रों में अपनी मातृभूमि के लिए किया गया कार्य एवं श्री शर्मा का अमूल्य योगदान जन-जन को प्रेरणा देता रहेगा। आने वाली पीढ़ियां इन पर गर्व करेंगी।

21वां वर्ष

यह संस्थान अपनी स्थापना के इक्कीस वर्ष पूर्ण होने पर देश-विदेश से आने वाले दर्शकों के ज्ञानवर्धन एवं प्रामाणिक जानकारी दिलाने हेतु एक और कदम बढ़ा रहा है।

संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओं, इतिहास, लोक संस्कृति, लोक कला, संगीत, नृत्य, जीवन शैली की वी.सी.डी. बनाई गई है। उसे दर्शक 50/- रुपये मात्र मूल्य देकर अपने टी.वी. सेंट पर देख, सुन तथा पढ़ सकेंगे।

यह वी.सी.डी. हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन एवं स्पेनिश भाषा में है। इसके अतिरिक्त कठपुतली कला के प्रदर्शन के समय दस मिनट की लघु फिल्म जैसलमेर के दर्शनीय स्थलों तथा पर्यटन सूचनाओं से सम्बन्धित दिखाई जाएगी।

-सत्येन्द शर्मा (मरुश्री)
सचिव, कवि तेज लोक कला विकास समिति
मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय
गडीसर चौराहा, जैसलमेर

लोक संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता

जैसलमेर के इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में अथक परिश्रम करके ऐतिहासिक गडसीसर सरोवर पर 'जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय' स्थापित करने का श्रेय राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ अध्यापक, कवि, लेखक एवं लोक नाट्यकार शाकद्विपीय ब्राह्मण श्री नन्दकिशोर शर्मा को जाता है। श्री शर्मा की बचपन से ही अपने प्रदेश के इतिहास को संजोने में रूचि रही है। आपने गाँव 2 जाकर हजारों शिला-लेखों, पट्टों, परवानों एवं ताम्रपत्रों के फोटू तथा अन्य ऐतिहासिक महत्व की अमूल्य वस्तुओं का संग्रह किया है। 12वीं शताब्दी से आज तक के महत्वपूर्ण अभिलेख आपने गाँव गाँव जाकर उतारे, उनके चित्र लिये। उन्हें पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में संग्रह किया। आज यह दस्तावेज इतिहास के शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण है। इस क्षेत्र के लोकवाद्य, लोक वस्तुएं, लघु चित्र, हस्तलिखित पुस्तकें, प्राचीन प्रस्तर, लोह, कांस्य, पीतल, ताम्बा व लकड़ी की कलाकृतियां, मेलों, उत्सवों तथा विवाह, सगाई, जीवन-मरण, पूजन, उपासना आदि के अवसर पर उपयोग में आने वाले पात्र, हमारे संस्कारों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा लोकोत्सवों पर प्रयोग आने वाली वस्तुओं का न केवल संग्रह किया है, बल्कि उनके इतिहास, बनावट तथा बनाने वाले कलाकरों आदि की सप्रमाण जानकारी प्राप्त की है। मरूस्थल रंग-बिरंगा देश है। यहाँ की वेश-भूषा बहुत ही रंगीन है। विविध रंग, पहनावे और उसमें बनी विविध कलाकृतियाँ तथा पहनने के तौर-तरीके अपना एक परिचय देते हैं। पगड़ी का पेच, अंगरखी, कुरती-काँचली, पोलका और ओढ़नी जाति, धर्म और सम्प्रदाय की पहिचान है। इन वस्त्रों के रंग, प्रसन्नता, वात्सल्य, प्रौढ़ता एवं शोक के प्रतीक हैं। उम्र, मौसम एवं उत्सवों पर बनाये जाने वाले वस्त्र विविधतापूरित मरुस्थलीय लोक जीवन की विशेषता है। मिट्टी के बने पड़वे, झूपे, झोपड़ियाँ और उनमें रखे बर्तन, घट्टी, घटिया, हटडी, कुपडी, कूडिया, ठिबरा, खड़िया, चुला-चुलड़ी, चोमख, चमच, चिपिया, खुरपा तवा, डोयलिया, सन्डासी, घिलोडी-तिलोडी, भरतिया, टोप, लोटा, कलसिया आदि की बनावट अपना कलात्मक स्वरूप लिये हुए होती है। इन झूपों पर बनाये गये भीत्ति चित्र आंगन में बने माडणों तथा अन्य लोक देवी-देवताओं के कथा चित्र एवं प्रतीक यहाँ की कलाप्रियता के साथ उच्च कोटि की सभ्य संस्कृति का नमूना प्रस्तुत करती है। हजारों वर्षों का हमारा इतिहास और जीवन मूल्य का महत्व हमें समझाती है। गांवों की बनावट, घर, घर के दरवाजे, उन पर लगे घोड़े, तौरण, गणेश एवं अन्य कला कृतियाँ सर्व मंगल एवं सौभाग्य के परिचायक हैं।

यहाँ की भूमि में दबे पत्थर, लकड़ी, हड्डी आदि के जीवाश्म हमारे करोड़ों वर्ष के इतिहास के साक्षी हैं। इस धरती में दबे, पहाड़ों की गुफाओं में बने मन्दिर, रेतीले

धोरों (टीलों) में निमग्न सोये स्मारक, भवन आदि हमारी उच्च कोटि की सभ्यता व संस्कृति के आदर्श नमूने हैं। प्रस्तरों पर उत्कीर्ण कलाकृतियाँ, गोवर्धन, लोहटिया, सती व जूंझार स्मारक आदि हमारे पुरखों के गौरव हैं।

हर गाँव के किनारे बने लोक देवी-देवताओं के मन्दिर, उनके पुजारी, पूजा सामग्री, पूजा पद्धति, मंगलकारी प्रतीकात्मक चिन्ह, भजन, गायन आदि का एक अलग स्वरूप है। यहाँ के लोक गायकों के कण्ठों में रमे सुरीले गीत, वाद्य संगीत, कवितायें, कथायें, नृत्य, नाटक और उनकी प्रस्तुति लोकानुरंजन के साथ-साथ मंगलकारी है। उनकी अपनी एक शैली है। श्रृंगार, पहनावा, सजावट, बाह्य वाहनों की सजावट, गोरबन्द तंग, पलाण, रखड़ी, परछी आदि कला के अद्‌भुत नमूने हैं।

अद्‌भूत कलाकृतियाँ कोई आज कल की नहीं है। यह हमारे पुरखों के हजारों वर्षो के अनुभव, आभमास आदर्श कला-मर्मज्ञता, कलाप्रियता और कलाकारों के श्रम, त्याग और जीवन मूल्यों से जुड़ी संस्कृति का उज्जवल दर्पण है।

इस यंत्र युग में इनको सुरक्षित करना अपने लोगों को उसका महत्व समझाना। उसके विकास में सहयोग देना एक बड़े मानव उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य का कार्य है। कलाकार अपनी कृति किसी व्यक्ति विशेष के मनोरंजन की कृति नहीं होती। वह सारे विश्व के कलाकारों का आदर्श होती है। इस प्रकार का कोई संग्रहालय सारे विश्व के विद्वानों, कलाकारों, विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनेगा। जैसा की अज्ञेयजी ने लिखा है।

-विमल शर्मा (भास्कर संवाददाता)
उपाध्यक्ष, कवितेज लोककला विकास समिति
लोक सांस्कृतिक संग्रहालय, गडीसर, जैसलमेर

एक व्यक्ति का अद्भुत संग्रह

विश्व प्रसिद्ध : जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय

जैसलमेर के ऐतिहासिक गड़ीसर सरोवर पर राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक, इतिहासकार एवं कवि श्री नन्दकिशोर शर्मा द्वारा 1984 में स्थापित जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय आज सारे संसार में ख्याति प्राप्त कर चुका है। थार मरुस्थल की लोक संस्कृति की अदभुत झलक यहाँ देखने को मिलती है। संग्रहालय में प्रविष्ट होते ही मिट्टी से बनाई जाने वाली वील कला के रूप में मूमल की मेड़ी बनाई गई। देवड़ा गांव के निवासी मगाराम मेघवाल ने श्री शर्मा के निर्देशन में जैसलमेर के जाली-झरोखों की नक्काशीदार करीगरी को यहाँ साकार कर दिया है। झरोखों से झांकती मूमल महेन्द्र की प्रतीक्षा कर रही है। भोडल, कांच, पीली मिट्टी से बना यह महल दर्शकों का मन मोह लेता है। इसके आगे के कक्ष में कसीदाकारी, मोती एवं मणियों की कला जैसलमेर के लघु चित्र राजा रवि वर्मा के सुन्दर चित्र, दुष्यन्त शकुन्तला, भीष्म प्रतिज्ञा, अर्जुन-शुभद्रा तथा प्रियदर्शिनी के चित्र देखते ही बनते हैं। बाड़मेर व जैसलमेर के वस्त्र, अजरख, मलीर तथा विभिन्न हिन्दू व मुसलमान जातियों की वेशभूषाओं तथा रंगों को दर्शाया गया है। रंगों का महत्त्व, राजस्थान की पागें तथा वस्त्रों पर की कलाकारी एवं चित्रावली से जातियों की पहचान हो जाने का प्राचीन सांस्कृतिक स्वरूप दर्शाय गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में अलग-अलग जातियों द्वारा बनाये जाने वालों के नमूनों के साथ नारी श्रृंगार की अनोखी वस्तुएं, तांबे, पीतल, लकड़ी, कांसी एवं चांदी की लोक-जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं का संग्रह देखकर दर्शक आश्चर्यचकित रह जाते हैं। हाथी, मोर, चिड़िया के पीतल के दीपक, सुरमादानियां, अफीम व तम्बाकू की डिबिया, झारियां, पानदान, कलम-दवात तथा जड़तदार बर्तन हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्राचीन उच्च कोटि की सभ्यता एवं संस्कृति का सुन्दर परिचय कराते हैं। गणगौर ईसर मणियों की चौपड़, पंखें, पंखों की डंडियां, पिछवाई तथा चित्रों में किया गया मोतियों का कार्य थार मरुस्थल के लोगों के कला प्रेम को दर्शाता है। तीसरे कक्ष में करोड़ों वर्ष पुराने काष्ठ प्रस्तर, कोरल, लोह आदि के जीवाश्मों (फॉसिल्स) का संग्रह है। तेरहवीं शताब्दी का ताम्र पत्र, गोवर्द्धन, सती-स्मारक, सिक्के तथा 19वीं शताब्दी के ब्लैक-व्हाइट फोटो प्रदर्शित किये गये है। सिक्के, पोस्टल सर्विस, पोस्ट कार्ड, लिफाफे, स्टाम्प, रेवेन्यू तथा हुंडियों, तखतियों, हस्तलिखित पुस्तकों, भोजपत्रों तथा राजा-महाराजाओं के हाथ के बने तथा फोटू प्रदर्शित किये गये हैं जो जैसलमेर के गौरवशाली इतिहास की प्रमाणिक जानकारी कराते हैं। चतुर्थ कक्ष में परम्पराओं के प्रतीक तोरण, वंदनमाल, लकड़ी के घोड़े, हटड़ी तथा गांवों में चलते-फिरते मन्दिर के रूप में कहे जाने वाले कथा मन्दिर कावड़ मेंहदी, माण्डना तथा मिट्टी की कला के गणेश आदि का सुन्दर संग्रह है। पंचम कक्ष में दैनिक

जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का संग्रह है। पत्थर के प्याले, तस्तरियां, कप-प्लेट, दवात, डब्बे, लौटै जिन पर हाथ से बनी बारीक, नक्काशी जो जैसलमेर के कारीगरों के उच्च कोटी के कला ज्ञान और कला प्रेम को दर्शाती है। सधे हुए हाथों से बनी यह प्रस्तर कृतियां अपना शानी नहीं रखती है। हाबूर से छींटदार पत्थर के चमकदार पेपरवेट, दवात एवं पेन केश देखते ही बनते हैं। लोहें के सरोते, लोहे के प्राचीन विभिन्न नमूनों के ताले, अफीम की गलनियां, तम्बाकू के डिब्बे, हुक्के, शृंगार-प्रसाधन, पुस्तकें रखने के स्टेण्ड, चूल्हा-चक्की, बैलगाड़ी, मिट्टी की कोठियां, पलंग, पुस्तक स्टेण्ड, ऊँट व अश्व श्रृंगार गारबंद, तंग, मोरी, पलाण आदि साथ ही चमड़े के कुड़ियें, कंधे, ठिबरे, पेपर मेसी (मिट्टी कुट्टी का कार्य), चावल और इमली के बीज़ पर लघुचित्र, पाबूजी की फड़, लकड़ी के ब्लॉक, चूड़े, ईंढाणी, किंकू व ठालों का संग्रह ग्रामीण जीवन शैली का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं। पंचम कक्ष में जैसलमेर एवं बाड़मेर क्षेत्र में बजाये जाने वाले लोकवाद्यों का संग्रह है। तंतवाद्य, सुषिरवाद्य तथा तालवाद्यों के साथ हारमोनियम एवं प्राचीन तन्दूरों, मोरचंग, झांझ-मंझिरों आदि का संग्रह है। एक विशाल गैलरी के झूंझार झावर, गऊ, गोरधन, पगोलिया, पितरों व लोहटी स्मारकों का संग्रह है साथ ही मिट्टी के बर्तन, मूर्तियां प्रदर्शित है। अंतराष्ट्रीय पुस्तकों तथा संगीत कैसिटों का एक बिक्री केन्द्र है। मरु सांस्कृतिक केन्द्र (डेजर्ट कल्चरल सेन्टर म्यूजियम) में शाम के समय लोक कलाकारों को प्रोत्साहन देने हेतु कठपुतली कला कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं आदि आयोजित किये जाते हैं। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विविध विषयों पर गोष्ठियां होती हैं।

-हेमन्त शर्मा

स्मृतियां अतीत की : विविध स्मरणीय कार्यक्रम

संग्रहालय स्थापना के साथ स्थानीय लोककवि एवं लोकनाट्यकार शाकद्वीपीय मग भोजक ब्राह्मण कवि तेज के नाम पर एक संस्था का निर्माण किया गया। यह संस्था संग्रहालय का संचालन में सहयोग करती है। 1987 में इस संस्था का रजिस्ट्रेशन करवाया गया तथा संस्थापक निदेशक (अवैतनिक) श्री नन्दकिशोर शर्मा, प्रेमराज शर्मा (अध्यक्ष) तथा किसनसिंह भाटी के परामर्श-मार्गदर्शन में इस संस्था ने ऐतिहासिक अठारह वर्ष पूर्ण किये तथा संग्रहालय की कीर्ति अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर पहुँचाई। इतिहास, कला, संस्कृति के ग्रंथ, केटलोग प्रकाशित किये। प्रतियोगिताओं, मेलों, उत्सवों, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन किया तथा पुरस्कार एवं सम्मान समारोह आयोजित किये गये। इन सबकी एक संक्षिप्त झलक यहां प्रस्तुत है।

साहित्य और संस्कृति को समर्पित संध्या

वर्ष 1993 के 839 वें जैसलमेर स्थापना दिवस समारोह की संध्या निस्सन्देह साहित्य और संस्कृति को समर्पित एक यादगार संध्या थी। इतिहासकार नंदकिशोर शर्मा की पुस्तकों का लोकार्पण, लोक कलाकारों द्वारा स्वर-माधुर्य व संगीत की सरस सलिला और कला-साहित्य को समर्पित लोगों का सम्मान, कुल मिलाकर ऐसा समां बांध कि उपस्थिति जनसमूह अनिमेष बंध रहा।

इस अवसर पर जैसलमेर के इतिहास, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवाओं और युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर श्रृंखला के प्रकाशन में सहयोग के लिए सुखवीरसिंह गहलोत, भंवरलाल व्यास, वासुदेव पालीवाल, लक्ष्मीनारायण खत्री, श्यामदेव पालीवाल व विनोद शर्मा को ओढ़ावणी ओढ़ा कर राजस्थानी परम्परा से उनका सम्मान किया गया वहीं भारत प्रिण्टर्स के मालिक अब्दुल वहीद तथा मुद्रक भंवरलाल सुथार व बद्रीप्रसाद चौधरी को साफा पहना कर उनका सम्मान किया गया। रम्मत के युवा कलाकार जुगल शर्मा का भी सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

समारोह का मुख्य कार्यक्रम इतिहासकार नंदकिशोर शर्मा द्वारा युगगुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर श्रृंखला के अन्तर्गत लिखितदो पुस्तकों 'जैसलमेर का राजनैतिक इतिहस' तथा 'जैसलमेर का सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहास' का लोकार्पण था। प्रो. जहूरखां मेहर व श्यामसुन्दर श्रीपत ने पुस्तकों का परिचय देते हुए इसे लेखक की बीस साल की साधन का अद्वितीय प्रयास बताया और कहा कि यह पुस्तकें भविष्य में शोधार्थियों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगी।

भूतपूर्व विधायक श्री जितेन्द्रसिंह के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह की अध यक्षता सर्वोदयी नेता भगवानदास माहेश्वरी ने की। समारोह का संचालन वासुदेव पालीवाल ने किया।

बुजुर्गों का सम्मान समारोह

जैसलमेर का 840 वां स्थापना दिवस 'शताब्दी के साक्षीः सम्मान समारोह' के रूप में मनाया गया। इस समारोह में अस्सी वर्ष से अधिक आयु के 21 बुजुर्गों का अंग-वस्त्र और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि जैसलमेर के तत्कालीन जिला कलक्टर श्रीमान् एम.के. खन्ना ने वृद्धजनों की उपेक्ष्य स्थिति पर अनुताप प्रकट करते हुए दोषी पीढ़ी की भर्त्सना की और कहा कि बुजुर्गों के अहं को ठेस पहुँचाने से बड़ा कोई पाप नहीं है।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में जिला पुलिस अधीक्षक भगवानलाल सोनी ने कहा कि उम्र के साथ अनुभवों में परिपक्वता आती है और यह परिपक्वता समाज के मार्गदर्शन में काफी उपयोगी रहती है।

जैसलमेर के संदर्भ में समारोह की उपादेयता प्रतिपादित करते हुए वासुदेव पालीवाल ने कहा कि शताब्दी के साक्षियों के रूप में हम अस्सी वर्ष से ऊपर की अवस्था के उन बजुर्गों का सम्मान कर रहे हैं जिन्होंने पर्यटन के क्षेत्र में उभरते तथा तेजी से उत्थान और पतन की करवटें बदलते जैसलमेर को देखा है। वस्तुतः इनके श्वेत केशों का अनभव ही ही हमारे भविष्य की, कला-संसकृति के संरक्षण, संवर्द्धन और पर्यटन विकास की उचित व हितकारी नीति तय करने में सहायक होगी।

समिति के अध्यक्ष श्री प्रेमराज सेवग, संस्थापक श्री नंदकिशोर शर्मा व संरक्षक श्री महेन्द्र व्यास ने सभी बुजुर्गों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री मनोहरलाल ओझा ने सम्मानित वृद्धजनों का परिचय दिया।

पत्रकार व समाजसेवी डॉ. केसरीमल केसरी, राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित हस्तशिल्पी श्री ईश्वरसिंह भाटी व युवा साहित्यकार श्रीगोपाल व्यास को भी कला, साहित्य, संस्कृति व समाजसेवा के क्षेत्र में जैसलमेर को दिये गये उनके अनुकरणीय योगदान के लिये सार्वजनिक अभिनन्दन से सम्मानित किया गया।

गड़सीसर पूजन व दीपदान

841 वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर पवित्र ऐतिहासिक गड़ीसर सरोवर की पूजा-अर्चना का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ गड़सीसर की विधिवत पूजा-अर्चना पण्डित पुरुषोत्तम भाऊ सा ने कराई। पूजा-अर्चना के बाद गड़सीसर सरोवर में 841 दीपक प्रवाहित किये गये।

इससे पूर्व सरोवर के प्रवेश द्वार पर टीलों की प्रोल पर आयोजित समारोह में जिले के उत्कृष्ट कोटी के शिल्पियों बरकत अली, अलादीन, मोहम्मद अली, सैदाद अली, भंवरलाल, आसूराम सुथार व लियाकत अली को साफा पहना कर प्रशंसापत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री ओमप्रकाश हर्ष, गोकुल व्यास, रतनसिंह

भाटी, श्रीमती पुष्पा शर्मा, अलका शर्मा व नंदा शर्मा को भी प्रशंसापत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

समिति के संस्थापक व संग्रहालय के निदेशक श्री नन्दकिशोर शर्मा ने अपने स्वागत भाषण में जैसलमेर के ऐतिहासिक एवं पर्यटन महत्त्व पर प्रकाश डाला। अन्त में समाज सेवी श्री महेन्द्र व्यास ने धन्यवाद ज्ञापित किया। जिला कलक्टर श्रीमान् एम.के. खन्ना के मुख्य आतिथ्य एवं जिला पुलिस अधीक्षक श्रीमान् भगवानलाल सोनी की अध्यक्षता में सम्पन्न समारोह का संचालन वासुदेव पालीवाल ने किया। प्रारम्भ में समिति के अध यक्ष श्री प्रेमराज शर्मा ने गणमान्य अतिथियों व विशिष्टजनों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

स्वागत-सम्मान व सांस्कृतिक समारोह

842 वें स्थापना दिवस के समारोह में शिल्पकारों व लोक कलाकारों के साथ-साथ मरु मेले में मरुश्री का खिताब पाने वाले सभी आकर्षक व्यक्तियों के धनी लोगों को सम्मानित किया गया। समिति द्वारा सम्मानित होने वाले इन लोगों में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कमायचा वादक साकर खां, शहनाई वादक पेपे खां, मांड गायक हासन खां, चावल के दाने पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हरीराम सोनी के अतिरिक्त दूर-दराज छिपी प्रतिभाओं को ढूंढ़कर मंच उपलब्ध कराने वाले अकबर खां व राणे खां तथा बरकत खां, इनायत अली, मुराद अली, शौकत अली, शांतिलाल सोमपुरिया व रूपाराम जैसे ख्यातनाम लोक कलाकार व शिल्पकार सम्मिलित हैं।

ज़िला प्रशासन के सहयोग से सम्पन्न इस भव्य समारोह में रोटरी क्लब ने समिति के संस्थापक नंदकिशोर शर्मा, मूर्धन्य साहित्यकार श्री श्यामसुन्दर 'श्रीपत' व श्री दीनदयाल ओझा, शिक्षाविद् श्री सौभाग्यमल जैन, पत्रकार व समाजसेवी होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. केसरीमल केसरी व वैज्ञानिक डॉ. रामसिंह मेड़तिया व सी.पी. पोरवाल को सम्मानित किया।

सम्मान समारोह का सफल संचालन मरुश्री सत्येन्द्र शर्मा व वासुदेव पालीवाल ने संयुक्त रूप से किया। प्रारम्भ में स्वागत भाषण करते हुए श्री नंदकिशोर शर्मा ने समिति की गतिविधियों तथा समिति द्वारा संचालित जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय का परिचय दिया और कहा कि संग्रहालय और जैसलमेर के सांस्कृतिक विकास लिए प्रस्तावित नया भवन बन कर लगभग तैयार है।

समिति के संरक्षक व समाजसेवी श्री महेन्द्र व्यास ने भी इस अवसर पर उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए सभी का समिति और रोटरी क्लब की तरफ से स्वागत किया और सम्मानित होने वाले मनीषियों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री व्यास ने इस अवसर पर उपस्थिति जनों को विश्वास दिलाया कि वे जैसलमेर में साहित्य, संस्कृति, कला और इतिहास के क्षेत्र में किये जाने वाले प्रत्येक कार्य में हर संभव मदद देने के

लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

समारोह के अन्त में रोटेरियन चन्द्रप्रकाश भाटिया ने आभार व्यक्त किया। जिला कलक्टर श्रीमान् निरंजन आर्य के मुख्य आतिथ्य में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता जिला पुलिस अधीक्षक श्रीमान् भगवानलाल सोनी ने की। उप जिला प्रमुख श्रीमती गंगादेवी व्यास समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थी।

गणगौर महोत्सव

गणगौर जैसलमेर का प्रमुख सांस्कृतिक पर्व है। इस अवसर पर वर्षों से यहाँ एक मेले का आयोजन राज-परिवार की तरफ से होता आ रहा था। बीच की एक अवधि में सालों से चली आ रही इस परम्परा को राज-परिवार द्वारा यकायक विराम दे दिया गया। तब समिति ने अपने तत्वाधान में इस लोकपर्व का आयोजन प्रारम्भ किया जो अद्यावधि चला आ रहा है।

समिति द्वारा संचालित इस लोक पर्व में पिछले कुछ वर्षों में जिला कलक्टर श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल व उनकी धर्मपत्नी श्री सियाराम मीना, श्री एम.के. खन्ना, श्री निरंजन आर्य और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संगीता आर्य, जिला पुलिस अधीक्षक श्री भगवानलाल सोनी, जिला प्रमुख श्रीमती रेणुका भाटी, उपजिला प्रमुख श्रीमती गंगादेवी व्यास, जिला परिषद् सचिव श्री जे.सी. पुरोहित इत्यादि गणमान्य अधिकारियों ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व अध्यक्षीय आसन को गरिमा प्रदान की है।

समिति के इस अवसर पर मेले के साथ-साथ मेहंदी, रंगोली, थापना, ज्वारा, ईसर-गणगौर झांकी, गीत इत्यादि यहां की संस्कृति से जुड़ी प्रतियोगिताएं भी आयोजित करवाती रही है जिसे समिति के मंत्री श्री वासुदेव पालीवाल और समिति के अध्यक्ष श्री प्रेमराज शर्मा की पुत्रवधु श्रीमती पुष्प शर्मा ने सफलता पूर्वक संयोजित किया है।

सफल प्रतिभागियों को गणगौर पूजन समारोह में पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाता रहा है। समारोहों का संचालन वासुदेव पालीवाल द्वारा किया जाता रहा है। विविध अवसरों पर श्रीगोपाल व्यास व श्री नरेन्द्र वासु संचालन में मेरे सहयोगी रहे हैं। गत वर्ष श्री सत्येन्द्र शर्मा व श्रीमती पुष्पा पुरोहित भी इस समारोह के संचालन से जुड़े हैं।

अन्य कार्यक्रम

इसके अतिरिक्त विविध अवसरों पर अंतर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद् तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं के साथ मिलकर नानाविध सांस्कृतिक साहित्यिक समारोहों व संगोष्ठियों का आयोजन भी समिति ने किया है तथा कई गणमान्य अतिथियों के आगमन पर उनके स्वागत-सत्कार व सम्मान समारोह भी समिति द्वारा संग्रहालय परिसर में आयोजित किये जाते रहे हैं।

–वासुदेव पालीवाल

शताब्दी के साक्षी : सम्मान समारोह

सम्मानित बुजुर्गों का परिचय

मनोहरलाल ओझा

आज हम देखते है हमारी संस्कृति का ह्रास हो रहा है। हमारी सामाजिक व्यवस्था बिखर रही है, संयुक्त परिवार व्यवस्था टूट रही है-परिवार एकाकी होने लगे हैं। लोगों में व्यक्तिवाद बढ़ रहा है। सामाजिक मूल्य बदलने लगे हैं एवं उनका ह्रास होने लगा है। 'बूढ़े-बडेरे'-बुजुर्गों के प्रति श्रद्धा-सम्मान एवं आस्था घट रही है। आज की प्रगतिशील कही जाने वाली पीढ़ी को इनके पैर छू कर इनसे आशीर्वाद लेने में संकोच होता है, शर्म आती है। श्रवण कुमार एवं राम जैसे मातृ-पितृ भक्त कथाओं और वार्ताओं में प्रसंग मात्र रह गये हैं।

ऐसी अवस्था में बुजुर्गों के प्रति लोगों में आस्था उत्पन्न करने, श्रद्धा, सेवा और सम्मान के सच्चे भाव भरने के उद्देश्य से कवि तेज कला विकास समिति जैसलमेर के तत्वाधान में जैसलमेर के 839वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'शताब्दी के साक्षी' सम्मान समारोह का आयोजन हम इस प्रांगण में करने जा रहे हैं। ये जैसलमेर नगर के वे सम्मानीय व्यक्तित्व हैं जिन्होंने आठ दशक या उससे अधिक की जीवन यात्रा पूर्ण की है, जिन्होंने उस जैसलमेर को बड़े करीब से देखा है, जिसके लिए यह उक्ति कि :-

घोड़ा कीजै काठ का, पिण्ड कीजै पाषाण।
बख्तर कीजै लोह का, तब देखो जैसाण।।

बड़ी सटीक और सार्थक रही है। ये वे पूजनीय व्यक्तित्व हैं जिन्होंने जीवन के 80 वर्ष से अधिक समय तक अपने खट्टे-मीठे अनुभव संजाये हैं। ये हमारे लिए पूज्य है, वंदनीय हैं, तीर्थ स्थलों से भी अधिक पावन हैं-पवित्र हैं। कवि गंग ने कहा है-

जाके हृदय नारायण बसत है-औरों का नाम लियो न लियो।
जाके निकट गंगाजी बहत है-वो कूप को नीर पियो न पियो।
भाव संजोग सुपात्र मिले-तो कुपात्र को दान दियो न दियो।
जाके घर वृद्ध मात-पिता है-वह तीरथ पांव दियो न दियो।।

मैं इनके पावन चरणों में नमन करता हूँ। इनके आशीर्वाद से अपने जीवन को सफल और सार्थक करने की आकांक्षा संजाये अपनी बात को विराम देता हूँ।

1. श्रीमान् सगतमल सेवक पुत्र श्री बुलीदानजी, जन्म संवत् 1964, श्री लक्ष्मीनारायणजी के उपासक, लोक कलाकार, रम्मत के नायक, व्यवसाय-कृषि, व्यापार-स्नेह की प्रतिमूर्ति।

2. श्रीमान् अम्बालला ओझा पुत्र श्री वस्तपालजी, जन्म संवत् 1964, समाजसेवक प्रगतिशील विचारों का सुलझा हुआ व्यक्तित्व, लोक कलाकार व्यवसाय-राजकीय सेवा मैनेजर बस सर्विस।
3. श्रीमान् किसनलाल छंगाणी पुत्र श्री नन्दलालजी, जन्म संवत् 1964, पाक विद्या में पारंगत, कुशल मोटर ड्राइवर प्रमुख पेशा-नौकरी।
4. श्रीमान् कन्हैयालाल बलाणी पुत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी, जन्म संवत् 1965, प्रभावशाली व्यक्तित्व मोटर व्यवसाय नगर पालिका अध्यक्ष 9 वर्ष, काठोड़ी सरपंच 13 वर्ष।
5. श्रीमान् मेघराज पाउ पुत्र श्री उत्तमसिंहजी, जन्म संवत् 1964, व्यवसाय खेती, संरपच ग्राम पंचायत अमर सागर 16 वर्ष।
6. श्रीमान् जीवण पुरी पुत्र श्री अजीत पुरी, जन्म संवत् 1964, स्वतंत्रता पूर्व सिंध में निवास, व्यवसाय बीड़ी निर्माण, राजनीति में सक्रिय रूचि, समाज सुधारक।
7. श्रीमान् सागरमल वासू पुत्र श्री सांगीदान वासू, जन्म संवत् 1967, न्याति चौधरी, अध्यापन, वाणिज्य एवं मुनीमायत-सौम्य व्यक्तित्व।
8. श्रीमान् रामलाल व्यास पुत्र श्री सगतमलजी, जन्म 1969, राजकीय सेवा सन् 1935 से 1969 तक तहसीलदार एवं कार्यालय अध्यक्ष।
9. श्रीमान् रुगलालजी देवड़ा पुत्र श्री प्रभुसिंहजी, जन्म संवत् 1969, जैसलमेर स्टेट में महारावल के निजी पाक शास्त्री।
10. श्रीमान् नखतमल व्यास पुत्र श्री आईदानजी, जन्म संवत् 1969, राज्य ज्योतिषी, ज्योतिष विशेषज्ञ, अध्यापन सेवा।
11. श्रीमान् बंशीलाल व्यास पुत्र श्री बृजपालजी, जन्म संवत् 1969, राज्य सेवा-पटवारी।
12. श्रीमान् बस्तीराम खत्री पुत्र श्री आशारामजी, जन्म संवत् 1969, व्यवसाय-रंगाई छपाई एवं व्यापार।
13. श्रीमान् सागरमल जोशी पुत्र श्री दामोदरदासजी जन्म संवत् 1969, व्यवसाय-पशुपालन, कृषि, गऊ सेवा में विशेष रूचि।
14. श्रीमान् मोतीलाल बिस्सा पुत्र श्री दीनानाथजी, जन्म संवत् 1969, भजन कीर्तन एवं पुष्टिमार्गी भक्त व्यक्तित्व।
15. श्रीमान् मोहनलाल भाटिया पुत्र श्री लूणकरणदास, जन्म संवत् 1970, व्यापार पुष्टिमार्गी भक्त।
16. श्रीमान् गुलमोहम्मद पुत्र श्री नूर मोहम्मदजी, जन्म संवत् 1970, कृषि एवं राजकीय सेवा।
17. श्रीमान् फकीर मोहम्मद पुत्र श्री जेतमान खां, जन्म संवत् 1970 राजकीय सेवा, कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय।

18. श्रीमान् कन्हैयालाल गोयदानी पुत्र श्री खुशालचंदजी, जन्म संवत् 1970, वाणिज्य एवं व्यापार।

19. श्रीमान् जीवनलाल व्यास पुत्र श्री रतनलालजी, जन्म संवत् 1970, भक्त आत्मा, कथा वाचक, राजकीय अध्यापन सेवा।

20. श्रीमान् नन्दलाल भाटिया पुत्र श्री पुरुषोत्तमदासजी, जन्म संवत् 1970, पुष्टिमार्गी, होटल व्यवसाय।

21. श्रीमान् बालकृष्ण भाटिया पुत्र श्री ब्रजलालजी जन्म संवत् 1971, पुष्टिमार्गी, भक्त आत्मा, वाणिज्य एवं व्यापार।

एक अभिमत

नन्दकिशोरजी शर्मा जैसलमेर की कला, साहित्य, संस्कृति व इतिहास के सुपरिचित हस्ताक्षर तो हैं ही इससे भी अधिक वे यहां की कला संस्कृति की 'पहचान' जैसे ही बन गए हैं। आपकी अहर्निश साधना एवं अध्यवसाय के प्रतीक 'मरु सांस्कृतिक केन्द्र' व 'लोक कला संग्रहालय' देशी-विदेशी सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है। जैसलमेर में सांस्कृतिक पर्यटन के आप अग्रदूत हैं। जैसलमेर के इतिहास, कला-संस्कृति व पौराणिकता से सम्बन्धित क्षेत्र में अनेकानेक संस्थाएं मिलकर जितना कार्य नहीं कर सकती, उतना आपने अकेले ही कर आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी संस्कृति की जड़ों को हरा देख सकने का भागीरथ कार्य किया है! निष्कपट, सरलमना, अन्वेषी दृष्टि शर्माजी की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 50 से भी अधिक हैं। श्री शर्मा जी को 'जीता जागता स्मारक' **(Living Monument)** व 'चल संग्रहालय' **(Mobile Museum)** कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। आप उत्तरोत्तर मां शारदेय एवं जैसलमेर की सेवा सुदीर्घ काल तक करते रहें, ऐसी परम पिता से कामना है। हृदय के अंतःस्थल से आभार! हार्दिक साधुवाद!!

(विजयसिंह नाहटा)
भू.पू. उपखण्ड अधिकारी एवं
उपखण्ड मजिस्ट्रेट, फतेहगढ

कवि तेज लोक कला विकास समिति जैसलमेर (डेजर्ट कल्चरल सेन्टर संग्रहालय) का पुनर्गठन

मेरे भुजबल से प्राप्त किये हुवे द्रव्य एवं एकल प्रयास से गांव-गांव घुमकर संग्रहित की हुई इतिहास, कला, सस्कृति,लोक जीवन में प्रयुक्त होने वाली लोक वस्तुओं का संग्रह कर लोक सास्कृतिक संग्रहालय की स्थापना मेरे द्वारा 1984 में की गई थी। यह संग्रहालय गड़ीसर तालाब स्थित सेवकों की बगेची मेहर बाग में किरायें के भवन में चालु किया था। 1987 में मेरे द्वारा संस्थापित व्यक्तिगत इस संग्रहालय के संचालन हेतु कवि तेज लोक कला विकास समिति के नाम से संस्था का गठन कर रजिस्ट्रेशन कराया गया था। जिसका रजिस्ट्रेशन 07.1987 जैसलमेर है। इस समय संस्था का उद्देश्य संग्रहालय के रख रखाव तथा शाकद्विपीय ब्राह्मण समाज सेवकों की बगीची के विकास तक सीमित था। बाद में शा.ब्रा.समाज के बंधुओं के कतिपय लोगों के असहयोग के कारण नगर के अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं को साथ लेकर मेरे व्यक्तिगत संग्रहालय के संचालन हेतु कवि तेज लोक कला विकास समिति का पूर्नगठन किया गया।

नगर के अति विशिष्ट व्यक्तियों का संरक्षण मंडल बनाया गया। वर्तमान में कवि तेज लोक कला विकास समिति के संरक्षक एवं सदस्य निम्नलिखित व्यक्ति है :-

संरक्षण मंडल

1 संस्थापक नन्दकिशोर शर्मा पुत्र श्री सगतमल शर्मा
2 मुख्य संरक्षक महेन्द्र व्यास पुत्र श्री लीलाधर व्यास
3 संरक्षक श्याम सुन्दर पुत्र श्री अजीतमल जी पुरोहित
4 संरक्षक बालकिशन जोशी पुत्र श्री टीकमचन्द जोशी
5 संरक्षक सांगीदान भाटिया पुत्र श्री तुलसीदास भाटिया
6 संरक्षक रामसिंह मेडतिया पुत्र श्री मदन सिंह
7 संरक्षक केसरीमल केसरी पुत्र श्री धर्मचन्द्र जी बाडमेर
8 अध्यक्ष प्रेमराज शर्मा पुत्र श्री भोजराज शर्मा
9 उपाध्यक्ष विमल कुमार पुत्र श्री सगतमल शर्मा
10 महासचिव श्री हेमन्त कुमार पुत्र श्री नन्दकिशोर शर्मा
11 सचिव श्री सत्येन्द्र शर्मा पुत्र श्री गोपाल शर्मा
12 सहसचिव श्रीमति प्रेमलता पत्नी श्री सतीश शर्मा
13 कोषाध्यक्ष श्री आनन्दकुमार पुत्र श्री रतन लाल

14 सदस्य श्री अश्वनी कुमार पुत्र श्री दाउदयाल
15 सदस्य श्री सतीश कुमार पुत्र श्री नन्दकिशोर शर्मा
16 सदस्य श्री रवि शर्मा पुत्र श्री प्रतापचन्द्र शर्मा
17 सदस्य श्रीमती पुष्पा पत्नी श्री हरिवल्लभ शर्मा
18 सदस्य श्रीमती गंगादेवी पत्नी श्री महेन्द्र व्यास
19 सदस्य विनोद पुत्र श्री रमणलालजी थानवी
20 सदस्य (संरक्षक) श्री भवंरलाल व्यास
21 सदस्य कैलाश भाट पुत्र श्री हरजीराम

उपर्युक्त 21 व्यक्तियों की एक संचालन समिति बनाई गई है। इनके मार्ग दर्शन एवं सहयोग से इनका संचालन किया जाता है। इस वर्ष से नई नवयुवकों के सहयोग से संचालन समिति बनाई जाएगी।

कवि तेज लोक कला विकास समिति लोक सांस्कृतिक संग्रहालय एवं मरू सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय (डी.सी.सी.एम.) डेजर्ट कल्चरल सेन्टर म्युजियम नन्द किशोर शर्मा के एकल व्यक्तिगत संग्रहालय की रख रखाव एवं लोक कलाओं के विकास हेतु स्वयं सेवी संस्था के रूप में बिना लाभ हानि के कार्य करती है। लोक सांस्कृतिक संग्रहालय सेवकों की बगेची में किराये के भवन में चलता है। तथा मरू सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय कवि तेज लोक कला भवन जो नन्द किशोर शर्मा ने स्वयं की राशि से कर्ज लेकर दस लाख रूपये खर्च कर दस वर्षों में बनाया है। इस भवन का 100 रूपया प्रतिमास किराया संस्था (कवि तेज लोक कला विकास समिति)नन्दकिशोर शर्मा कों देगी। संग्रहालय की व्यवस्था सहायता एवं कठपूतली कला के कार्यक्रमों से होने वाली आय व्यय बिना हानि लाभ के खर्च व्यवस्था कवि तेज लोक कला विकास समिति करती है और करती रहेगी।

संस्था का उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य : नन्दकिशोर शर्मा द्वारा एकल प्रयास से स्थापित संग्रहालयों में प्रदर्शित वस्तुओं के संरक्षण एवं उनके द्वारा बताये गये उद्देश्यों के क्रियान्विति में सहयोग देना।

कवि तेज लोक कला विकास समिति के उद्देश्य

1 थार मरूस्थल के इतिहास कला संस्कृति संगीत लोक कलाये लोक साहित्य लोक वाघ्यों लोक देवता लोक विश्वास एवं हस्तकला लोक जीवन से सम्बधित मंगलकारी प्राचीन एवं नवीन वस्तुओं का संग्रह कर उन्हे संग्रहालय में सुरक्षित करना।

2 जैसलमेर के इतिहास सम्बधित प्राचीन दस्तावेजों शिलालेखों पटों परवानों ताम्रपत्रों सिक्कों मूर्तियों लिखित तथा मौखिक कविताओं एवं वार्ताओं का संग्रह करना।

3 एक पुस्तकालय स्थापित करना जिसमें जैसलमेर से सम्बधित सभी तरह की पुस्तके संग्रहालय में शोधोथियों के लिए उपलब्ध हो जाये।

4 जैसलमेर बाडमेर क्षैत्र में गाये जाने वाले गीतों संगीत की धुनों वार्ताओं वाणियों कथाओं काव्यों आदि का रिकार्डिंग करना तथा संग्रहालय में एक केसेट लाइबेरी बनाना।

5 प्राचीन स्थापत्य कला से सम्बधित लोक स्वरूपों छतरियों समाधियों मकबरों जुझारों सतियों झवेरों पितर पूजन स्मारकों पगलियों हस्तचिन्हों नागदेवता जैन पालीवाल ब्राह्मणों व नाथ सम्प्रदाय आदि के स्मारकों के नवीन मांडल बनवाकर एक गैलेरी का निर्माण करना। जिससे नवीन पीढी उनके अर्थ और इतिहास को समझ सके।

6 लोक नाटयों लोक संगीत लोक गीत एवं लोक हस्तकलाओं मेहन्दी मांडना लोक चित्रों (आस माता दयाडतजी आदि) के चित्रों की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

7 संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओ का परिचय पुस्तक (कैट लांग)प्रकाशित करना।

8 लोकनाटयों लोक गीतों आदि को प्रोत्साहित करने हेतु प्रतियोगिताओं का आयोजन करना। कलाविदों को पुरस्कृत करना।

9 इतिहास कला लोक साहित्य का प्रकाशन करना।

10 शाकद्वीपी ब्राह्मण समाज की बगेची मेहर बाग के स्मारकों का संरक्षण एवं विकास करना।

11 जैसलमेर के इतिहास कला व संस्कृति के प्रशिक्षित गाइड तैयार करना।

भवन

ई. सन् 1993 में संग्रहालय में पधारे राजस्थान के राज्यपाल महामहिम बलिराम भगत से अनुरोध कर संग्रहालय के रख रखाव तथा सुव्यवस्थित भूखण्ड की मांग की गई। महामहिम की अनुशंशा पर तत्कालीन नगरपालिका एवं जिला कलक्टर सीयाराम मीणा ने 50x100=5000 वर्ग फुट का भूखण्ड रविन्द्रनाथ टेगोर पार्क सूचना केन्द्र के पास नजूलदर से 50 प्रतिशत की दर से 53 रुपये 25 पैसे प्रति वर्ग फुट की दर से भूमि निस्पादन नियम 1974 के 18(1) अन्तर्गत आंवटन 99 वर्ष लीज होल्ड के आधार पर किया गया। आदेश सं. पत्रांक भूमि 941-71-18.4-1994 के अनुसार किया गया। इसकी राशि 302343.75 (तीन लाख दो हजार तीन सौ तियालिस रूपये पिच्चतर पैसे) पत्र प्रापति के एक माह भीतर जमा कराने का आदेश हुआ। यह राशि दो किश्तों में प्रथम किस्त चैक नं. 49061 20.4.84 को 140000 (एक लाख चालिस हजार रुपये) कराई गई। जिसकी रसीद सं. बुक नं. 3 रसीद सं. 345 प्राप्त हुई। दूसरी किश्त 4.



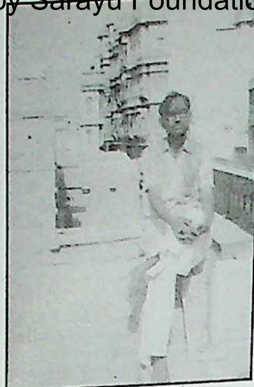
प्रधानाचार्य श्री शार्दूलसिंह कविया एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्री हरिसिंह के साथ इतिहासकार व लेखक श्री नन्दकिशोर शर्मा



मारवाड़ जंक्शन पर रम्मत कलाकार दामोदरदास पुरोहित, अमृतलाल शर्मा, प्रेमराज शर्मा के साथ साफा पहने हुए नन्दकिशोर शर्मा



श्री नन्दकिशोर शर्मा पटवा हवेली के ऊपर साथ में हैं सर्वश्री किशनलाल श्रीपत, श्यामसुन्दर श्रीपत, सत्यदेव व्यास, श्रीकृष्ण श्रीमाली एवं भंवरलाल केवलिया के साथ (फोटो माईकल व लुमेन)



होली के त्यौहार पर रंग से रंगे
श्री नन्दकिशोर शर्मा



जापान के फोटोग्राफर मि. ओकी
के साथ श्री नन्दकिशोर शर्मा



जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.वी. जोन द्वारा अन्तरप्रांतीय कुमार साहित्य परि
की ओर से श्री नन्दकिशोर शर्मा को सम्मानित करते हुए साथ में हैं श्री नेमीचन्द जैन भावुक



जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.वी. जॉन गांधी प्रतिष्ठान जोधपुर में
श्री नन्दकिशोर शर्मा का सम्मान करते हुए साथ में हैं सुशीला बोहरा एवं श्री नेमीवन्द जैन भावुक



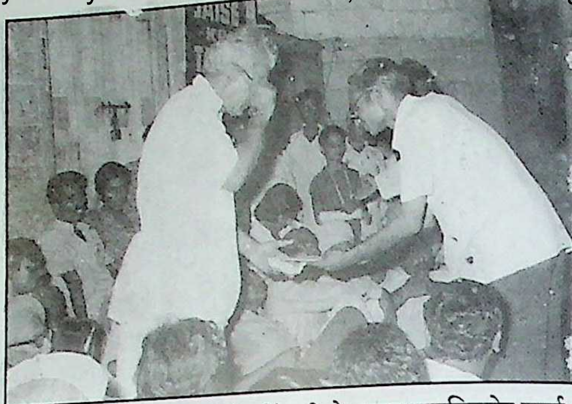
आकाशवाणी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में कविता पाठ करते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



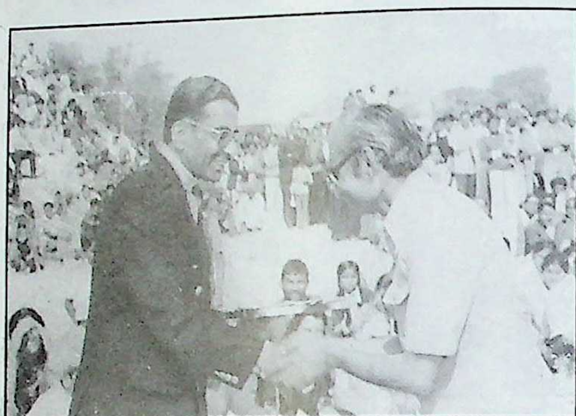
आकाशवाणी जोधपुर द्वारा आयोजित डाबला गांव में चौपाल कार्यक्रम में
भावात्मक एकता पर विचार व्यक्त करते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



जनसम्पर्क सहायक निदेशक श्री रामचन्द्र बोड़ा, श्री बालकृष्ण जोशी, श्री सत्यदेव व्यास,
श्री ताराचन्द जगाणी जनसम्पर्क अधिकारी, श्री नन्दनजी थानवी, श्री श्यामसुन्दर श्रीपत,
श्री विट्ठलदास सेवक, श्री नन्दकिशोर शर्मा एवं श्री रमणलाल चूरा



राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरूसिंहजी शेखावत नन्दकिशोर शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'द गोल्डन सिटी' का विमोचन करते हुए



मरु मेले पर पर्यटन सचिव भारत सरकार पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित होते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



राष्ट्रपति महामहिम श्री नीलम संजीव रेड्डी एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर को जैसलमेर का भ्रमण कराते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



राष्ट्रपति महामहिम श्री वेंकटरमण एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर को जैसलमेर जैन मन्दिर की कला की जानकारी देते हुए श्री नन्दकिशोर शर्मा



हेनिमेन जयन्ती के अवसर पर बाड़मेर में कविता पाठ करते श्री नन्दकिशोर शर्मा



बाड़मेर व जैसलमेर के कवियों द्वारा तणोट में आयोजित कवि सम्मेलन में श्री नन्दकिशोर शर्मा, श्री सत्येन जोशी, श्री सत्यदेव व्यास, श्री पन्नालाल, श्री मोहनसिंह भाटी, श्री भूरचन्द जैन, ओमप्रकाश मधुप, श्री केसरीमल केसरी एवं श्री गोपीकिशन पुरोहित



We are Carlos Andrés Moreno and Cristina Morales.

We want to get married because we love each other and want to be together for the rest of our lives.

We want to do it in the Indian style, because we like the spiritual meaning of marriage in Indian culture, which is very different than in our country.

We also like the elements of the ceremony like the fire, the flower garlands, the clothes and ornaments, the colors, and specially the Indian people.

We feel that we are ready to join ourselves in matrimony and take care, respect and love each other until the end of our lives.

Before we came to India we knew we wanted to get married in this country, but we did not know where or how or the real meaning of marriage in India.

At the beginning we thought about doing it in Udaipur because it is a very romantic city. Then we came to Jaisalmer and met Mr. N. K. Sharma, founder of the "Desert Culture Center" museum and we realized his good will to spread Indian culture and help people. This together with the fact that Mr. N.K. Sharma is a Brahmin, and knowing his knowledge, gave us a deep feeling of trust. That is why we ask him to arrange our marriage.

We are very grateful with him and that is why we want to get married with his help in his museum.

We know that this is not the best time to get married, but since we have been together for one year, we know this marriage will last forever.

Carlos A. Moreno

Carlos Andrés Moreno

Calle 150 A # 8 – 59 casa 2

Bogotá – Colombia

CMorales

Cristina Morales

pasfort #: CC 52928958

e-mail : crism@cable.net.co

5.94 को 141250(एक लाख इकतालिस हजार दो सौ पचास रुपये) जमा कराई गई। यह चैक नं. 43062 से जमा कराई गई। इसकी रसीद बुक नं. 4 रसीद सं. 404 दिंनाक 26.4.94 को प्राप्त हुई। कुल राशि 281250 रू भूखण्ड का मूल्य चुका दिया गया है। इक्किस हजार तिरानवें रूपये जमा करवाने है। यह भूखण्ड वाणिज्य दर से नन्दकिशोर शर्मा संस्थापक के नाम से संग्रहालय बनाने हेतु दिया गया। जिसकी राशि मय ब्याज चुका दी गई है। नगर पालिका को 2002 तक लीज राशि 105389 मय ब्याज राशि 53790 रू दिनांक 15.3.02 को कुल राशि 159179 जमा करवा दी। जिसका चैक नं. 200399 रसीद सं. 207 व 208 बुक क्रंमाक 78/4 जमा करवा दी गई है। एवं रजिस्ट्री दिनांक ड्यूटी 22500 एवं पंजीयन राशि 4178 रसीद सं. 17506 बुक क्रमाक 85 दिंनाक 24 मार्च 2002 है।

भवन का उपयोग एवं व्यवस्था

मेरे जीवन में अपने एकल प्रयास एवं श्रम से तन-मन-धन लगाकर बनाये भवनपर लगभग 18 लाख रूपये लगे है। 2002 तक मेने समस्त राशि जो कर्ज के रूप में ली थी। चूका दी है। अब इस पर संस्था या किसी व्यक्ति का कोई कर्ज मेरे ऊपर नही है। मेरे भाई बन्धु सगा सेण कोई भी इस भवन में भागीदार नही है। क्योकि मेरी उम्र 70 वर्ष के नजदीक होने जा रही है। मेरे मरने के बाद उसकी दुर्दशा न हो संग्रहालय द्वारा चलता रहे। संस्था का भी कोई मालिकाना हक नही रहे इसलिए मैनें भवन का संस्था से मात्र सौ रूपया प्रतिमाह रोकड किराया लेना संस्था से तय किया है। सेवकों की बगेची का किराया प्रतिमाह 1 अगस्त से किया गया है। वह संस्था उन्हे चूकायेगी। नर्जरी नक्शों में बताये गये सकेतो के अनुसार शुभम बुक सेन्टर एवं सीमान्त प्रकाशन चलते है चलते रहेगे। अभी सीमान्त प्रकाशन सेवकों की बगेची में चलता है। ऊपर की मंजिल का वर्गीकरण दो भागों में किया गया है। जिस पर नक्शे में बताये गये चिन्हों के अनुसार सतीश शर्मा एवं हेमन्त शर्मा मेर दोनो पुत्र करेगे। क्योकि उनकी रोजी रोटी की व्यवस्था नही हुई तो संस्थान नही चल सकेगा। यह भूखण्ड मेंने वाणिज्य दर से वाणिज्य के रूप में लिया है। अतः यह उसे किराये के रूप में दे सकेगे।

मेरे मरने के बाद मेरी सम्पति एवं स्थान की सुरक्षा ओर उसके विकास का उतरदायित्व मेरी पत्नी एवं कनिष्ठ पुत्र हेमन्त शर्मा का होगा। उसके बाद वह संचालक नियुक्त करेगा।

-नन्दकिशोर शर्मा

श्री नन्दकिशोर शर्मा से साक्षात्कार

एक शिक्षक की साकार परिकल्पना

- लोक सांस्कृतिक संग्रहालय, जैसलमेर -

किसी वस्तु का नव निर्माण करना, उसे संवारना, सजाना, जनहितार्थ उसे प्रदर्शित करना। कितना कठिन कार्य होता है। इसका जीता जागता उदाहरण है, गड़सीसर सरोवर के पास स्थित "लोक सांस्कृतिक संग्रहालय" एवं "मरू सांस्कृतिक केन्द्र" (डी.सी.सी. म्युजियम)। एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक एन.के.शर्मा की 35 वर्ष पूर्व की गई कल्पना। 21 वर्ष पूर्व 1984 में लगाई गई नींव तथा उसका उत्तरोतर निरंतर विकास करते हुवे विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान पाने वाला यह संस्थान आज जैसलमेर का एक मोन्युमेन्ट (दर्शनीय स्थल) बन चुका है। जैसलमेर नगर के स्थानीय निवासी साधारण शिक्षक ने अपने एकल प्रयास से मानव समाज को एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर प्रदान की है। सांस्कृतिक धरोहर किसी व्यक्ति विशेष की धरोहर नही होती वह सभी सभ्य मानव समाज की निधि होती है। अपने श्रम से अंकुर लगा कर जो श्री शर्मा ने एकं वृक्ष तैयार किया है उसमें मीठे फल लगने लगे हैं। उसका रसास्वादन हर कला प्रिय व्यक्ति कर रहा है। श्रीशर्मा के इस महान् कार्य का श्रेय भारत के समस्त गाइडो, शिक्षकों, स्थानीय निवासियों एवं विश्व पर्यटन व्यवसाय के क्षेत्र में जुडे सभी व्यवसायियों, नगर प्रशासन एवं सरकार को जाता है। जिन्होंनें शर्मा को सदा प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप यह संग्रहालय विश्व में अपनी अनौखी पहिचान बना सका है। देश विदेश के हर गाइड बुकों में इस संग्रहालय को अवश्य देखने के लिए पर्यटकों को परामर्श दिया गया है। श्री शर्मा ने सेवानिवृति के बाद अपना स्वयं का धन लगाकर मरू सांस्कृतिक भवन (डी.सी.सी.एम.) का निर्माण करवाया, जहॉ संग्रहालय के साथ-साथ कठपुतली कला, संगीत कला, मेहन्दी मांडणा आदि को प्रोत्साहित किया जाता है।

श्री शर्मा द्वारा लोक संस्कृति साहित्य इतिहास कला लोकजीवन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं का जो संग्रह किया गया है। वह आज अमूल्य है। उसका कोई मूल्य नही आंका जा सकता। चाहे भारतीय दर्शक हो, चाहे विदेशी जो भी इन संग्रहालय को देखकर निकलता है। वाह!वाह! करता है। प्रामाणिक सूचनपो के साथ प्रदर्शित वस्तुओं का यह अमूल्य संग्रहालय अपनी एक अलग पहिचान बना चुका है। श्रीशर्मा ने लगभग 35 से 40 पुस्तकों का लेखन किया है। अग्रेजी , फ्रेंच,जर्मन, स्पेनिश, इटालियन में अनुवाद करवाकर इस संग्रहालय का संरक्षण विकास किया संस्थान का विधिवत् सचालंन करने के लिए इस क्षेत्र के विशिष्ठ व्यक्तियों को साथ लेकर एक संचालन समिति 'कवि तेज लोक कला विकास समिति' का निर्माण किया। उसका रजिस्ट्रेशन कराकर 10 रुपया

विदेशियों से तथा 5 रूपया देशी दर्शकों से सहायता स्वरूप लेकर इसका संचालन किया जाता है। पुस्तक आदि की आय से कर्मचारियों, बिजली, पानी, किराया तथा उसका रख रखाव किया जाता है। आने वाला दर्शक या कोई गाइड 10 रूपया भी नही देता है। तो भी श्रीशर्मा जी उनको बताते है। पुस्तक पोस्टकार्ड आदि बेचकर उसका खर्चा चलाया जाता है। कठपुतली का खेल दिखाकर बड़ी कठिनाई से इसका खर्च पूरा किया जाता है।

श्री शर्मा ने बताया कि इस कार्य में जयपुर,दिल्ली तथा जोधपुर से आने वाले गाइडो, दल प्रभारियों एवं ट्रेवल एजेन्टों का बड़ा सहयोग रहा है। इस संस्थान से कई पर्यटक मित्र, गाइड तैयार हुए है। कई शोधार्थियों ने शोधपत्र लिखे है। पत्रकारों साहित्यकारो तथा कलाकारों को यहां से प्रोत्साहन मिला है। श्रीशर्मा ने कहा कि ''बदलते हुवे सामाजिक परिवेश में 21वीं शताब्दी का यह दशक कई समस्यायें ले कर आया है''। नये गाइडो, को लाइसेन्स मिले है। नये ट्रेवल ऐजेन्ट बने है। नये लोगों की नई सोच है। उन्हे अपने क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण उसके विकास अथवा अपना व्यक्तिगत ज्ञान बढाने की कोई चिन्ता नही है। उनका तो केवल एक उद्देश्य है - कमीशन। दर्शक क्या देखना चाहता है उसकी उन्हें कोई चिन्ता नही। जो गाईड, ट्रेवल ऐजेन्ट को जितना अधिक धन कमा कर लाकर देता है योग्य माना जाता है। मानवीय मूल्यों एवं व्यक्तियों की आर्थिक सोच अशुभ लाभ तथा बिना श्रम के कमाया हुआ धन मानव को कहा ले जा रहा है। और कहा तक ले जायेगा? पर्यटक गाइड कब तक यह पर्यटकों का दोहन करेगें। उनको ठगते रहेगे। इसके प्रभाव का असर कैसा होगा?, यह आने वाला समय बतायेगा। भवनों का बदलाव , रहन-सहन, खान -पान का बदलाव , सभ्यता ,संस्कृति, प्रकृति व मानव प्रवृति में बदलाव हमारी शोर्य एवं रण बाकुरों की धरती को रसा तल में ले जा रहा है।श्री शर्मा ने कहा कि हमने राजाओं का समय देखा, लोकतंत्र का अच्छा रूप भी देखा है। लेकिन पैसा प्रधान है। ''लूट सके तो लूट जमाना खुले खजाने का, पोपों बाई का राज, बाबू फिर नहीं आने का''।

इस संस्थान ने पर्यटक गाइडों को पर्यटक मित्र परिचय पत्र दिये उनके साहित्य व संस्कृति का ज्ञान करवाया, रोजी रोटी पर लगवाया। आज वही पर्यटक मित्र जो राजस्थान सरकार से अधिकृत गाइड हो गये है।वह संग्रहालय दिखाने में आना कानी करते है। आज जब उन्हे हम कहते है कि 'भाई संग्रहालय दिखाओं पर्यटक खुश होकर जाता है। आप के भी ज्ञान का विकास होता है। गाइड का उत्तर होता है हमकों ज्ञान से क्या मतलब हमारा धन के प्रति ध्यान है।

फिर भी संग्रहालय जिसकी ख्याति सारे विश्व में फैल गई है। विश्व की समस्त गाईड पुस्तकों ने पर्यटकों को इसे अवश्य देखने की सलाह दी है। उनकी चित्राकृति हम परिशिष्ट में छाप रहे हैं। इन संग्रहालयों को प्रति वर्ष 25 से 35 हजार देशी विदेशी

दर्शक व्यवस्था सहायता देकर तथा अन्य शोध विद्यार्थी, पत्रकार, लेखक एवं स्थानीय 20 हजार निःशुल्क देखते हैं। सायंकालीन कठपुतली कला का 2003-2004 में 50 हजार दर्शकों ने लाभ उठाया है। शोधार्थी यहां आते रहते हैं। टी.वी. चैनलों पर इस संस्थान की गतिविधियां प्रसारित होती रहती हैं। संस्थान इस वर्ष नई वी.सी.डी. का कार्य प्रारम्भ कर रहा है। वह भारत के एक व्यक्ति के द्वारा स्थापित संग्रहालय में पहला और अनोखा प्रयास होगा।

–बालकिशन जोशी
सम्पादक/संरक्षक
मरु सांस्कृतिक केन्द्र
(कवि तेज लोक कला विकास समिति)
जैसलमेर –345001

मेरी जीवन यात्रा

श्री सगतमलजी शाकद्वीपी मग भोजक ब्राह्मण तेवणवंशी मथुरिया भोजका (चाधंण) के घर मेरा जन्म आषाढ़ शुक्ल शुद्ध नवमी सम्वत् 1994, 15 जुलाई 1937 ई. में हुआ। हाई स्कूल प्रमाण-पत्र में मेरी जन्म तिथि 1 जनवरी 1938 ई. लिखी हुई है। मेरे दादा का नाम बुलीदानजी था जो भोजका गाँव में रहते थे। खेती-बाड़ी एवं मन्दिर की पूजा करते थे। उनक स्वर्गवास अल्प आयु में हो गया था। मैंने उन्हें देखा नहीं। मेरी दादी चांदा माँ को मैंने देखा है। उनके एक पुत्र (मेरे पिताजी श्री सगतमलजी) एवं दो पुत्रियाँ थीं। एक का नाम जगनीबाई तथा दूसरी का नाम गुलाबी था। गुलाबी को मैंने नहीं देखा। जगनी बाई बाल विधवा निःसन्तान थीं। मेरे साथ जीवनपर्यन्त रहीं। मेरी दादी कवि तेज की बहिन थीं। विधवा होने के कारण अपनी सन्तान को आटा पीसकर गड़ीसर से पानी लाकर, पापड़, बड़ी, केर, सांगरी आदि की दुकान चलाकर, मजदूरी के साथ अपने परिवार का पालन करती थीं। हमारा कच्चा मकान सदर बाजार एवं माणक चौक को जोड़ने वाली गली के नुक्कड़ पर बना था। दादी दीवारों को गोबर से लीपती थीं। दरवाजों को गौ-मूत्र से धोती थी। बुआजी मांडणा बनातीं थी। भोडल काँच के टुकड़ों से विभिन्न आकृतियाँ बनातीं। हस्तकला में कपड़े की गुड़िया, हाथी, घोड़ा, पंखा आदि कई वस्तुएँ बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाती थीं। मकान छोटा था, बिजली नहीं थी। सरसों या तिली के तेल से दीपक जलाते थे। संध्या के समय गुग्गल से बनाए धूप से धूपिया करते थे। उसकी महक सारी गली में फैल जाती थी। घर के आगे एक गाय थी, जिसका नाम मोर था। पाँच सेर एक टिक (टाइम) का दूध देती थी। इससे दूध और दही तथा छाछ खाने को मिलता था। मेरे पिताजी प्रारम्भ में मिठाई बनाकर थाली सजाकर नगर में बेचने जाते थे। मन्दिर की पूजा करते थे तथा जवाहरसिंह राजा के यहाँ घण्टी (घड़ी) बजाने का कार्य करते थे। उनका वेतन 5 रुपये प्रतिमाह थ। परिवार में मेरी माता थीं। जिनका नाम शिवप्यारी था। पोकरण निवासी श्री हरिरामजी की पुत्री थीं। इनके कोई भाई नहीं था। एक बहिन जिसका नाम लूणी था। मलार में फलौदी में ब्याही गई थी। माता अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी। मगर गीत-भजन आदि में प्रवीण थीं। धीरे-धीरे परिवार बढ़ने लगा। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पिताश्री घर खर्च आराम से निकालते थे। भोजका खड़ीद से गेहूँ-चना आता था। मन्दिर की पूजा से तथा दूकानदारी से काम चल जाता था। मेरे पिताजी ने बताया कि मुझे जैन पंचायत की ओर से मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिए धन इकट्ठा करने के लिए जैसलमेर जाने का अवसर मिला। वहाँ जैन मन्दिरों के लिए खूब राशि मिली। मुझे कई जैन भजन, गीत, रास आदि आते थे। लोग मेरा सम्मान करते थे। मुझे भोजन कराकर अलग से दक्षिणा देते थे। इस समय मेरे पास 200 रुपये इकट्ठे हो गये। मेरी यात्रा समाप्त होने पर मैं वहाँ से 'कराची' गया।

वहाँ पर भाटिया समाज के प्रतापचन्द बालकृष्णजी के पिताजी का बड़ा वर्चस्व था। उन्होंने 200 रुपये मेरे एवं 200 रुपये का और समान उधार दिला दिया था। उस समय में चार साईकलों, पम्प, पंचर आदि का सामान-औजार लेकर जैसलमेर पहुंचा। यह मेरी पहली दुकान थी। जिन्दानी चौकी के पास श्री सौभाग्यमल जैन के पिताश्री भंवरलालजी एवं प्यारेलालजी जिन्दानी के सहयोग से मैंने साइकलों का काम किया। धीरे-धीरे मेरा काम बढ़ने लगा। बड़े बाग के आम के ठेके लिए तथा मणिहारी की दुकान का नाम प्रसिद्ध हो गया। उस समय इत्र बहुत बिकता था। पनड़ी के फूल सिन्ध की तरफ से आते थे। इनको बड़ा बाग की कपूरड़ी के जल में धोकर सुखाने के बाद किसी बक्से में रखा जाता था। जब वह बक्सा खुलता था। सारा वातावरण सुगन्धमय हो जाता था। लखनऊ असगर अली, मोहम्मद अली लखनऊ एवं कन्नौज के छेदीराम, मूलचन्द तथा जामनगर आदि से इत्र व सेण्ट आता था। मुम्बई व कराची से मनिहारी का सामान आता था। पोकरण एवं बाड़मेर तक रेल थी। इस कारण काँच का सामान वहाँ से आते-आते टूट जाता था। जैसलमेर नगर की जनसंख्या बहुत कम थी। पीर-पगारों के सिन्धी मुसलमान मुरीदों के आने तथा जैन यात्रियों व सिंधी के अलावा महेसरियों एवं पुष्करणा ब्राह्मणों के सावों पर बिक्री होती थी। आपने अपने परिश्रम से अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर ली, लेकिन परिवार बढ़ गया। हम छः भाई एवं हमारे दो बहिनें हैं। जैसा कमाते, खर्च करते। आपने न्याति में औसर नुखते आदि किये। दुकानें, मकान आदि बनाये। रम्मतों के खिलाड़ी थे। इनका कण्ठ बुलन्द था। इस कारण लोग उनसे ईर्ष्या करते थे। विशेषकर हमारे समाज के लोग बाधाएँ उत्पन्न करते थे। राजा-महाराजाओं एवं न्यात-जात की महत्ता का समय था। मेरे पिताजी ने बताया कि एक बार एक ब्रह्म भोज में कुछ लोगों ने मेरे साथ नाई को बैठाकर न्याति से अलग करने का असफल प्रयास किया, साथ ही रम्मत अभिनय करते समय में मुझे सिन्दूर लगा पान खिलाकर मेरे कण्ठ को खराब कर रम्मत के खेल में बाधा डालने की कुचेष्टा की। मगर श्री लक्ष्मीनाथजी कृपा से मुझे कोई हानि नहीं हुई। आप संध्या वंदन, भजन, गायन, नृत्य आदि के अलावा वेद, पुराण, कथा, साहित्य आदि का अध्ययन करते थे। कवि तेज इनके गुरु थे। आपकी स्मृति बहुत थी। एक बार पढ़ने के बाद उन्हें याद हो जाता था। बुजुर्गों द्वारा कहीं गई बातें, छन्द, गीत, सवैये आदि उनको कण्ठस्थ थे। रम्मतों की राग-रागनियाँ, नृत्यगतों, लावणियाँ एवं बंदिशों के उतार-चढ़ाव देखने का मुझे अवसर मिला था। कुछ गीत, भजन मैंने रिकार्ड किए तथा कुछ को लिपिबद्ध किये।

मेरी शिक्षा

प्रारम्भ में मैं पोसाळ जयनारायण जगाणी, श्री सांगीदान गोपा, बाबूलाल व्यास एवं श्री गोपीकिशनजी भाटिया के पास मारवाड़ी रीति में पढ़ा। जैसलमेर दरबार कालवीन हाईस्कूल उस समय पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक चलती थी, मुझे दूसरी कक्षा में 1942-43 में भर्ती कराया गया। इस समय महारावल जवाहरसिंहजी का राज्य था।

ताराचन्द जांगिड़ प्रधानाध्यापक थे। राजपूत बोर्डिंग थी। खम्मा, अन्नदाता एवं कंवरसा का समय था। अध्यापक, प्राध्यापक राजपूत छात्रों पर तवज्जौह देते थे। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। अंग्रेजी प्रार्थना जो श्री वल्लभजी भाटिया प्रार्थना के समय करते थे, बन्द हो गई। बाजार में कौमी नारा, जयहिन्द के नारे लगते थे। सुभाषचन्द्र बोस के तुकमें बाँटे जाते थे। 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा', 'वन्दे मातरम्' तथा 'जन गण मन' के गीत गाये जाते थे। हमारे पड़ोस में एक रेडियो था, उस पर समाचार सुनते थे। कभी-कभी बेगम अख्तर, सहगल आदि के गीत भी सुनते थे। शहर छोटा था। जनसंख्या 7 से 8 हजार के लगभग थी। लोग पार्टी पर बैठकर रात्रि को राजनीतिक बहस किया करते थे। ऐसी बहस करने वालों पर महारावल की नजर रहती थी। सागरमल गोपा का स्वर्गवास हो गया था। लोग जिन्दा जलाने, जलने आदि की अलग-अलग बातें बनाते थे। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया था।

शरणार्थी जत्थे

देश आजाद हो जाने के बाद सैंकड़ों सिक्ख व हिन्दू जिसमें महिलाएँ, बच्चे शामिल थे, तनोट शाहगढ़ के रास्ते होकर अपनी जान बचाकर जैसलमेर पहुँचे थे। जैसलमेर धनाढ्य देश नहीं था, फिर भी महारावल ने गेहूँ की घूघरिया तथा कपड़े की व्यवस्था कर शरणार्थियों को आगे बढ़ाने में सहायता की थी। बड़ा दर्दनाक दृश्य था। कई लोगों के पाँव, आँख, हाथ में चोटें आई थीं। स्त्रियाँ क्रन्दन करती थीं, बच्चे बिलखते थे, बूढ़े कांप रहे थे। उदास एवं भय के साथ गड़ीसर तालाब के किनारे कुछ दिन विश्राम कर आगे बढ़ जाते थे। महारावल साहब रात्रि को नगर एवं दुर्ग के द्वार बन्द कर देते थे। गिरधरसिंह राजकुमार व सिपाही खबरदार के साथ पहरा देते थे। पाकिस्तान की ओर से जैसलमेर को पाकिस्तान में मिलाने का प्रयास किया गया, मगर वह असफल रहा। महारावल गिरधरसिंह लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। 30 मार्च 1950 को जैसलमेर को राजस्थान में मिला लिया गया।

मेरा विवाह मेरे पिताजी ने मेरी 10-11 वर्ष की उम्र में ही मोबतराम देवेरा की पुत्री रामरखीदेवी जो 5 वर्ष की थीं, के साथ सगाई एवं विवाह कर दिया। उस समय में चौथी कक्षा में पढ़ता था। सन् 1951-52 में छठी पास कर मुझे विद्यालय छोड़ना पड़ा। मेरे पिताजी के मणिहारी की दुकान थी। बम्बई एवं कराची से वे माल लाते थे। अखेशाही एवं राजा छाप चांदी के रुपये क्रय कर मुम्बई में बेचते थे, जिस मुनाफें से उनका आने-जाने का खर्च निकलता था। मेरे छः भाई एवं दो बहिनें थीं। घर का कार्य माता द्वारा बड़ी मुश्किल से चलाया जाता था। हाथ में पैसा नहीं होता था। बाजार में बोर-चना आदि वस्तु-विनिमय से मिलते थे। हम खोला भरकर गेहूँ-बाजरी या चना ले जाते थे, उनके बदले बोर, मखाणे, चणे आदि लाते थे। सस्ता जमाना था। चार आने में गोठ हो जाती थी।

हम जिस मौहल्ले में रहते थे, वहाँ भाटिया व जैन समाज के लोग रहते थे। मेरे मित्र भाटिया समाज के स्व. हरिशंकर, श्री रमणलाल, वृजवलव, लक्ष्मीनारायण, बालकृष्ण, भंवरलाल, गोपीकिशन, मदनलाल एवं शिखरचन्द जैन थे। हम होली, दीपावली, कका (बसन्त पंचमी) मनाते थे। कके के दिन रात्रि भर जागते, लकड़ियां चुरा कर लाते। प्रातः उसे बेचकर गोठ करते। इस दिन चोरी करना भी एक परम्परा थी। लकड़ी एवं पत्थर की गाड़ियाँ बनाकर चलाते थे। महारावल जवाहरसिंहजी का समय था। कोयले एवं भांप से चलने वाली गाड़ियाँ थीं। नगरवासियों ने भी गाड़ियाँ मंगाली थीं। मेरे पिताजी ने भी एक बस, जिनका नम्बर 10 था। गनायत लोग मजाक में हमें दस नम्बरी कहते थे। एक लोड गाड़ी जिसका नं. 28 था। पोकरण, बाड़मेर, रामगढ़ में चलती थी। कच्चे सड़कें थीं। गाड़ी में रेत में फँस जाती थी। गाड़ी का अनुभव नहीं होने से ड्राईवर पेट्रोल, टायर तथा कल-पुर्जे बेच देते थे। घाटे में चलने वाली लोड गाड़ी को पिताजी ने बेच दिया। दस नम्बर बस रामगढ़ मार्ग पर वर्षा के दिनों में उलटी हो गई। बाबूलाल क्रियागुर ड्राईवर था। किसी के कोई चोट नहीं आई। पिताजी ने मात्र 5000 रुपये में रतनलालजी भाटिया को यह गाड़ी बेच दी। धीरे-धीरे पैसे वसूल किए। घर खर्च बढ़ गया। भाइयों की शादी, बहिनों की शादी और घर की परिस्थितियों के कारण मैंने बीकानेर में जाकर नौकरी की। आईदानजी अग्रवाल मुझे 30 रुपये महीना देते थे। रामेश्वर कला काका कलाका के उनके भाई के यहाँ में रहता था। दोनों कला बन्धु कंदोई थे, कंवारे थे। पांच-छह महीने के बाद में वापस जैसलमेर आया। यहाँ सड़क पर 1 रुपये रोज में मोहनगढ़ के जलधरी गाँव में सड़क पर काम किया।

दुकानदारी

मेरे पिताजी ने मुझे बाजार में 25 रुपये माह में धूड़सा भाटिया की दुकान किराये पर दिलाई तथा मणिहारी का सामान देकर अलग कारोबार करने को कहा। नगर में जनसंख्या बहुत कम थी। पूरे दिन में 5 रुपये की बिक्री नहीं होती थी। बड़े बाग, अमर सागर, गजारूप सागर, वैशाखी आदि मेलों के दिनों बच्चों के खिलौनों तथा महिलाओं के श्रृंगार का सामान लेकर वहाँ दुकान लगाते। मैं दो-तीन वर्ष ही दुकान चला सका। मेरे परिवार में अनबन रहती तथा गृहचक्र एवं परिस्थितियों के कारण मुझे जैसलमेर छोड़ना पड़ा। मैं वहाँ से बम्बई गया। वहाँ नौकरी की तलाश थी। लेकिन बीमार होने पर वापस आना पड़ा। जोधपुर के आर.एस.एस. के कार्यालय में श्रीकृष्ण भैया एवं स्वयंसेवकों के सहयोग से वहाँ इलाज कराया। मेरे पिताजी मुझे वहाँ लेने आये।

मेरी पत्नी का स्वर्गवास

मेरी पत्नी का नाम रामरखी था। कन्या को जन्म देकर 16 वर्ष की आयु में चल बसी। नगर में अच्छे डॉक्टरों के अभाव तथा सही समय पर इलाज नहीं होने से टाइफाइड की तीव्रता ने उसके प्राण ले लिए। मेरी कन्या को बुआजी जगनीबाई ने

पाल-पोसकर बड़ा किया। उसका नाम चन्द्रकला है। बड़ी होने पर शिवरत्नी खर्मा खींचन वालों के पुत्र मिलापचन्द शर्मा के साथ विवाह कर दिया गया। आजकल वह फरीदाबाद में अपने पति के साथ रहती है। उसके पुत्र राजू और संजू जोधपुर में पढ़ते हैं।

मेरा दूसरा विवाह

मेरा दूसरा विवाह मोहनलाल दवेरा फलौदी निवासी के यहाँ 4 अप्रेल 1960 ई. को हुआ। मेरी पत्नी का नाम मधुशर्मा (मूला नक्षत्र में जन्म होने से घर में मूली कहा जाता है) है। मेरे सास-ससुर धार्मिक प्रवृत्ति के कुलीन परिवार के संस्कारित व्यक्ति थे। सासूजी रूकमणी देवी अभी अपने मंझले पुत्र चैनसुख शर्मा के साथ निवास करती हैं। चैनसुख शर्मा का विवाह बीकानेर के निवासी जमनादासजी जो ट्डियारपर मद्रास में निवास करते हैं कि सुशील कन्या शकुन्तला शर्मा से हुआ। इनके दो पुत्रियाँ शीतल और भावना तथा एक पुत्र श्रीकान्त है। ज्येष्ठ पुत्र बद्रीनारायण जिनका परिवार, जिन्होंने संघर्ष कर भिलाई और वर्तमान में धनाबाद बिहार में निवास करते हैं, का विवाह पाली निवासी प्रेमराजजी शर्मा की कन्या भगवती देवी से हुआ। भगतवी के दो पुत्र व तरुण व प्रवीण और दो कन्याएँ हेमा और चन्द्रा है। बद्रीबाबू का जनवरी 2000 में हृदयगति रूकने से स्वर्गवास हो गया। इनके पुत्र डिपार्टमेन्ट स्टोर चलाते है। तीसरे छोटे भई रमेश का विवाह लखनऊ में हुआ। इनकी पत्नी सरिता, एक शिक्षित महिला हैं, इनके पुत्र निक्की और एक पुत्री गुंजन है। अहमदाबाद में निवास करते हैं व इण्डियन बैंक में मैनेजर हैं। मोहनलालजी के तीन लड़कियाँ थीं। एक शान्तिबाई, जिसका विवाह दिल्ली में सांगीदानजी मथुरिया तथा दूसरी कमलादेवी, जिसका विवाह फलोदी निवासी वर्तमान कोलाघाट के जूट के व्यापारी श्री अबीरचन्दजी के यहाँ हुआ। तीसरी सबसे छोटी मेरी जीवन संगिनी है।

मेरे भाई दाऊदयाल पुजारी हैं। इनके पुत्र अश्वनि फूल आई सी में सर्विस करते हैं। मदनमोहन उसका पुत्र अमित पढ़ता है। गोपीकिशन, कमलकिशोर का स्वर्गवास हो गया है। उनके पुत्र मनीष है व कमलकिशोर का भरतकुमार है। सबसे छोटा भ्राता विमलकुमार भास्कर संवाददाता, उसके एक पुत्र विनय और पुत्री करिश्मा है तथा जार जैसलमेर शाखा का अध्यक्ष है। क्रिकेट सेवा के सचिव है। दो बहिनें कमला अमृतलालजी सेवानिवृत्त इंस्पेक्टर नगरपालिका एवं लक्ष्मी मांगीलालजी देवरा हैं। मांगीलालजी अध्यापक है। कमला का पुत्र नवल वाटर वर्क्स में कार्य करता है। दो कन्याएँ बबली एवं कला बाड़मेर में ब्याही हुई हैं। ललित फोटोग्राफी का काम करता है। ममता अध्यापिका है।

मेरे दो पुत्र सतीश एवं हेमन्त है। सतीश का विवाह मेड़ता निवासी गोपालजी शर्मा की पुत्री प्रेमलता से तथा हेमन्त का विवाह दुर्गाशंकरजी शर्मा जैसलमेर की पुत्री अन्नु से हुआ है। दो पुत्रियाँ भगवती व कविता का विवाह रतनलालजी के पुत्र आनन्दजी एवं

कहा कि मुझे पैसा नहीं चाहिए, आप जाइये। वहाँ पर एक गुजरात की भी लड़के-लड़कियों का एक शिक्षक दल आया था। संध्या को हमारा कैप-फायर रखा। वहाँ की लड़कियों ने गीत गाया 'म्हारो रडियालो देश गुजरात'। हमारे दल की ओर से मैंने और मेरे सथियों ने गीत गाया था "म्हारी आँखडल्यो रो तारो दुलारो म्हारो मरुधर देश"। गोदावरी नदी चित्रकूट, त्रयम्बकेश्वर तथा भर्तृहरि की गुफाओं का आनन्द लिया। बम्बई में मैंने पहली बार जहाज देखा। उस समय बम्बई की सड़कों पर नागिन फिल्म के गीत बजते थे। ट्रामें चलती थीं। मराठा मन्दिर जिनको मैंने पहली बार देखा। बम्बई के जुहू एवं चौपाटी, बूट हाउस आदि देखे। यह समय बड़े आनन्द के साथ व्यतीत हो गया। मित्रों में परस्पर प्रेम स्वतन्त्रता के बाद एक शांति का वातावरण था। 1962 की सर्दियों में भारत चीन का संघर्ष हो गया। फलोदी आने के बाद पढ़ाई की, तैयारी की, लेसन दिये। चौथे पत्र हाईजन की परीक्षा के दिन बुखार आ गया। यह पेपर ठीक से नहीं कर सका, अतः मुझे फेल होना पड़ा। दूसरे वर्ष में पुनः परीक्षा देकर एस.टी.सी. करनी पड़ी।

बडोड़ा गाँव में मेरा स्थानान्तरण 1965 में प्राथमिक विद्यालय जैसलमेर में हो गया। यहाँ मैं 20 वर्ष तक रहा। 1965 से 1975 तक मैंने सैकण्डरी के बाद हायर सैकण्डरी, बी.ए., एम.ए., तथा बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस सयमय श्री हरिशंकर व्यास एवं प्रधानाध्यापक श्री गिरधरलालजी व्यास और उनके बाद श्री बंशीलाल पुरोहित को लगाया गया। इस समय हमारे साथ अच्छे अध्यापक थे, जिसमें सांगीदान, गोविन्द भाटिया, चन्द्रप्रकाश पुरोहित, कालूराम पुरोहित, सुशील पुरोहित, सूरजमल खत्री, रामलाल खत्री, हरिवल्लभ, बंशीलाल पुरोहित जयकिशन तथा मोहनलाल टेलर थे। इन दिनों शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रम उच्च कोटि के थे। कई बालक-बालिकाएँ हो इस खेल विद्यालय में पढ़ते थे, आज भी अच्छे ओहदों पर हैं तथा किसी न किसी क्षेत्र में अपनी अलग पहिचान रखते हैं। 1965 में भारत-पाकिस्तान के आक्रमण के समय मैंने एक कविता लिखी थी 'धड़क धूं धूं, धड़क धूं धूं वीर आगे बढ़ जाजे रे'! मित्र लोगों ने जो लघु विश्राम अवकाश के समय साथ चाय पीते थे, यह निश्चय किया। इस समय के सभी साथियों का स्नेह सौहार्द बनाने के लिए क्यों न एक्र मंडली बनाई जाये जो हमारे यहाँ से बिछड़ने के बाद भी समय-समय पर मिलती रहे। सबको प्रस्ताव पसन्द आया और मेरी कविता के शीर्षक 'धड़क धू धूं' नाम से मित्र दल का गठन किया गया जिसमें गोठ करना, विवाह शादी, उत्सव आदि में एक-दूसरे को सहयोग देना निश्चित किया गया। उसके बाद निरन्तर गोठें होतीं एक दूसरे के विवाह आदि पर सभी के परिवार के सदस्य आते-जाते। एक सामूहिक भेंट लड़की के विवाह के अवसर पर मिलकर देते। आज कई लोग सेवानिवृत्त हो गए हैं। मगर धड़क धूं धूं दल आज भी जीवित है। सबमें परस्पर प्रेम है। परस्पर सौहार्द, सहयोग, संगठन एवं सामूहिक आनन्द के लिए निर्मित धड़क धूं धूं संगठन से प्रेरणा लेकर यदि नवयुवक अपने जीवन में कुछ ग्रहण करें तो परिवार, देश और समाज में स्नेह को बढ़ाया जा सकता है।

दुर्ग से मेरा स्थानान्तरण हायर सैकण्डरी अमर शहीद सागर विद्यालय में हुआ। वहाँ मैं 1975 तक रहा। वहाँ से रूपसी मिडिल स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्त हुआ। रूपसी में कुछ ही दिन रहा। शहर से यह 17 कि.मी. दूर होने के कारण मैं साइकिल पर वहाँ आता जाता था। मेरे साथ भंवरलाल व्यास चित्रकार भी था। वह उन दिनों बड़े-बड़े बाल रखता था। साईकिल पर आता-जाता था। परिश्रम कर अपने बच्चों को पढ़ाया। इनके अलावा कई अध्यापक उसी गाँव के भाटिया समाज के थे। मेरे बहनोई मांगीलालजी मेरे साथ अध्यापक थे। मैं कुछ दिन लोद्रवा में रहा वहाँ पर सबलेखां मांगणियार से मेरी वार्तालाप हुई। वह एक अच्छा गायक था तथा उसके पास पक्षियों के गीतों का संग्रह था, वह पढ़ा लिखा नहीं था। मगर उसे कई गीत याद थे। जब मैं दोपहर को वहाँ बैठता था। तब उसके गीत लिखता था। इन गीतों का संग्रह कर पक्षियों के गीत शीर्षक से कई शोध पत्रिकाओं जिसमें वरदा, मरुश्री, मरुवाणी आदि प्रमुख है, मैं प्रकाशित करवाया। चौपासनी शोध संस्थान ने बाद में इसे पुस्तक के रूप में छापा। संगीत नाटक अकादमी ने इसे अंग्रेजी में अनुवादित कर छापा। उसके संस्थापक श्री कोठारीजी थे। लोद्रवा में रहकर मैंने आस-पास के मन्दिरों, गोरधनों, तालाबों आदि का अध्ययन किया। दिसम्बर 1975 में मेरा स्थानान्तरण पुनः हायर सैकण्डरी में हो गया। इस समय मुझे शनि की महादशा लगी। बम्बई के बिहारीदासजी शर्मा ज्योतिषाचार्य के लिखे अनुसार इन 25 वर्षों से मेरे जीवन का अभ्युदय हास और हर क्षेत्र में विकास पथ पर बढ़ते उसे सफलता ही मिलेगी। मैंने शोध कार्य पर्यटन कला संस्कृति साहित्य समाज सेवा स्काउटिंग काव्य रचना इतिहास संकलन प्रकाशन किया। संग्रहालय की स्थापना भवन निर्माण की तथा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार आदि इसी काल में जीता।

अविस्मरणीय घटना

सन् 2001 में अशोक गहलोत मुख्य मंत्री के कार्यकाल में प्रशासन शहरों की ओर कार्यक्रम के अन्तर्गत लीज राशि जमा करवाने पर आधा ब्याज माफ होना था। पटवा हवेली के पास लगे केम्प पर मेंने अर्जी लगाई कि मुझे लीज की राशि कितनी जमा करानी चाहिए? उन्होने मुझे ऑफिस आने को कहा। व्यक्तिगत तोर पर में अलग-अलग लोगो ने अलग-अलग ब्याज राशि बताई। लेकिन लिखित में किसी ने नही दिया। मेने सोचा यह मार्च तक जमा करवाने हैं, लेकिन इस समय तक यह अवधि निकल गई। मेरी उम्र 65 वर्ष की होने जा रही थी। भवन भी बन कर तैयार हो गया था। मगर अर्थाभाव में मेरी प्राथमिकता भवन निर्माण को दी। इस कारण लीज ब्याज एवं रजिष्ट्री आदि की डूटूटी एवं ब्याज बढता ही चला गया। मेरे मित्र की सलाह अनुसार मुझे अब मुझे इसकी रजिष्ट्री करालेनी चाहिए तथा संस्था के संचालन के लिए स्थाई व्यवस्था कर लेनी चाहिए। अतः मेने राशि जमा करवाने का प्रार्थना पत्र दिया। इस भूमि शाखा में हमारे ही स्व जातीय भ्राता बन्धु थे। उन्होने कहा कि अब आपको पूरी ब्याज कर राशि जमा करवानी पड़ेगी। मेने सचिव से प्रार्थना पत्र दिया के मेने प्रशासन शहरों के समय में प्रार्थना पत्र

दिया था, उसका मुझे कोई उतर नहीं मिला। कृप्या मेरे को आधे ब्याज माफि का लाभ देते हुए राशि जमा करवाने का आर्तद्य दिलावे। मैं आपको सत्य कहता हूँ कि इस कार्य में चपरासी, बाबू, इंजिनीयर सबने मुझे सहयोग दिया। जैसे ही यह अंतिम चरण पर अध्यक्ष के पास फाईल हस्ताक्षर के लिए गई। सबके हस्ताक्षर हो गऐ। उसने लिख दिया कि जब तक आप पूरी राशि जमा नहीं करवाओगे मैं हस्ताक्षर नही करूंगा। मेने कहा कि मेरा यह कार्य पर्यटन को बढावा देने के लिए हैं। बिना किसी लाभ-हानि के एक संस्था के अन्तर्गत संचालित होता हैं। यह अध्यक्ष ओर कोई नही था। एक मेरा विद्यार्थी सुमार खां, जो अपने धन बल से इस पद को प्राप्त करने में सफल हो गया था। पता नही वह क्या चाहता था? धन या द्वेष या राजनीति! मुझे कुछ समझ में नही आ रहा था। मात्र तीन दिन का समय था। यदि मैं पत्र-व्यवहार करता तो नये वर्ष में नया ब्याज, नई लीज राशि, स्टाम्प ड्यूटी आदि के बढने की सम्भावना थीं। मेने उनसे कहा कि आप हमारे प्रार्थना पत्र को आगे भेजिये। यदि सरकार ने हमारी प्रार्थना नही सुनी तो ब्याज मुक्ति की राशि हम मय के चुका देंगे। लेकिन इस महाराज को तनिक भी शर्म नहीं पड़ी। मेरे बच्चे ने कहा कि हम और परिश्रम करेंगे। वह उधर घर से राशि मांग कर लाया और उसे जमा करवा कर रजिस्ट्री करवाई। आज मुझे लगा समाज और मनुष्य कितना बदल गया हैं। गुरू-शिष्य भाव नहीं रहा। धन बल के आगे ज्ञान बल झुक रहा हैं। भ्रष्टाचार के आगे सदाचार कमजोर पड़ रहा हैं। मेरे गुरु श्रीपतजी जोशी, बालकृष्ण, सांगीदान आदि ने उसके इस कार्य के लिए कहा :-

सदा न फूले केतकी सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे सदा न जीय कोय।

इसका उस पर क्या असर होता। लोग खुश थे। आर्थिक हानि पहुँचाई थी। न राजनेता न शिक्षाविद् कुछ बोले उन्होने तो उसके गुणगान किये। आज वह पार्षद नही बन सका। समय बीत गया बात रह गई।

मेरे अपने समाज के बंधुओं में से कुछ लोगों ने ईर्ष्या-द्वेष से मेरे कार्य में समय-समय पर बाधा डालने, व्यंग्य, कटाक्ष करने, नीचा दिखाने तथा अपमानित करने का भरपूर प्रयास किया। कई लोग तो सड़कों पर भी आ गये, लेकिन मैंने अपनी मर्यादा नहीं छोड़ी। इस समय समाज की प्रगति का कार्य रुक गया, भगवान उन्हें सद्बुद्धि दे।

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
नहीं किसी से दोस्तीख नहीं किसी से बैर।।

मरु सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोगियों का संक्षिप्त परिचय

मुख्य संरक्षक



नाम : महेन्द्र व्यास
शिक्षा : वाणिज्य स्नातक
व्यवसाय : महेन्द्रा गैस सर्विस एवं पैट्रोल पम्प।
जनसेवा कार्य : मुख्य संरक्षक मरू सांस्कृतिक संग्रहालय (कवि तेज लोक कला समिति) जैसलमेर
पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब जैसलमेर
प्रख्यात समाज सेवी, कला, साहित्य एवं संस्कृति संरक्षण के प्रेरणा स्रोत।
विशेष : पूर्व स्वंतन्त्रता सेनानी स्व. लीलाधर व्यास परिवार से संबंधित। स्वयं जनसेवा कार्य हेतु समर्पित एक जन प्रिय व्यक्तित्व।
पता : 702, जयनारायण व्यास कॉलोनी, जैसलमेर (राज.)
दूरभाष नं. : **9414149355, 252654**

संरक्षक



नाम : श्री (डॉ.) रामसिंह मेड़तिया
जन्मतिथि : 29.04.1949
शैक्षणिक योग्यता : एम.एस-सी., पी-एच.डी.
कक्षा प्रथम से 11वीं तक चौपासनी स्कूल जोधपुर, प्रतिभावन खिलाड़ी पढाई में भी अव्वल।
सम्मान : 1958-द्वितीय अखिल भारतीय स्काउटिंग जमबूरी बैगलोर में चयनित होकर सम्मिलित हुए।
1964- राजस्थान राज्य का सर्वोच्च फुटबाल के प्रथम पुरस्कार से "कलर फुटबाल" सम्मानित ।
1964- प्रेसिडेन्ट स्काऊट , पुरस्कार राष्ट्रपति द्वारा दिया गया।
1971-जोधपुर विश्वविधालय से वनस्पति शास्त्र में उच्च श्रेणी से एम.एस.सी. उपाधि।
1975-भारतीय कृषि अनुसंधान के काजरी जोधपुर से कृषि वैज्ञानिक से चयन।
1976- भारतीय रेगिस्तान की वनस्पति पर शोध कार्य के लिए पी.एच.डी. डिग्री।

1985-ब्रिटिश कौनूसिल फैलोशिप तथा वैल्स विश्वविधालय से उच्च श्रेणी के पर्यावरण वानिकी से एम.एस.सी. की डिग्री प्राप्त की।, यूरोप में फ्रांस , स्विजरलैण्ड , जर्मनी, हॉलेड, बेलजियम,ब्रूसेल्स के वानिकी शोध संस्थानों का भ्रमण किया।

1995-जापान-भारत के द्वीवी पक्षीय शोध परियोजना से काम किया व 21 दिन की जापान के निमंत्रण पर अन्तरराष्ट्रीय रेगिस्तानीकरण नियंत्रण पर आयोजित अन्तर राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय क्षेत्र के शोध का पत्र वाचन किया।

1996-से प्रधान वैज्ञानिक व अध्यक्ष , काजरी क्षैत्रीय कार्यालय जैसलमेर में सेवारत।

विशेष : संरक्षक मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर, वनस्पति शास्त्र व एम. एससीण, पर्यावरण वानिकी ब्रिटेन, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मरु अनुसंधान केन्द्र, जैसलमेर।

दूरभाष न. : 251679, 252412

संरक्षक



नाम : बालकृष्ण जोशी, आर.ई.एस.

पद : सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

प्रशिक्षण : बी.एड.(भाषाएं), सी.डी.आई. स्टाफ ऑफीसर (ना.सुरक्षा)

विशेषज्ञ : बम निस्तारण पाठ्यक्रम, मिलिट्री इंजीनियरिंग कॉलेज पूना।

लेखन प्रकाशन : देश प्रेम के गीत , रामायण की अंतर्कथायें-श्रीराम लक्ष्मण हनुमान भरत विश्वामित्र। सरस्वती-तीरे (खण्डकाव्य) तथा मरुधरा का गौरव-सिद्ध देवराज भाटी (प्रकाशनाधीन)

पुरस्कार : 1. जिला स्तर-जैसलमेर, बाडमेर, जोधपुर
2. शिक्षाएं व साहित्य सेवा-श्री गिरधर धर्मार्थ ट्रस्ट, जैसलमेर
3. राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार (1981)

संप्रति : अध्यक्ष पेंशनर समाज, निदेशक मरु सांस्कृतिक केन्द्र), सदस्य एस.बी.के.महाविद्यालय विकास समिति, संरक्षक स्थानीय संघ जैसलमेर।

पता : 'जोशी भवन', बिस्सा पाड़ा, आसनीपथ, जैसलमेर (राज.)

दूरभाष नं. : 250299

संरक्षक



नाम : श्री श्यामसुन्दर श्रीपत

पिता का नाम : स्व. श्री अजीतमल पुरोहित (श्रीपत)

जन्मतिथि : 31.10.1932

शैक्षणिक योग्यता : एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड.

व्यवसाय : साहित्यकार, सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी

विशेष : संरक्षक, मरू सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर, राजस्थानी व हिन्दी भाषा के ख्यातनाम कवि

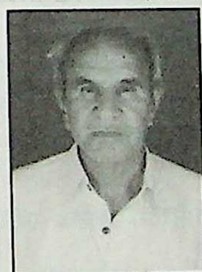
सम्मान-पुरस्कार : राज्य शिक्षक पुरस्कार (1976) पूर्व एन.सी.सी. अधिकारी, श्री गिरधर धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा सम्मानित, राजस्थानी साहित्य अकादमी से पुरस्कृत।

प्रकाशन : मरु गंगा, मरु महक (राजस्थानी काव्य) तथा पूनम का चाँद (हिन्दी) काव्य।

पता : सिंघवी पाड़ा, जैसलमेर

दूरभाष नं. : 252144

सरंक्षक



नाम : सांगीदान भाटिया

योग्यता : एम.ए.(राजनीति शास्त्र) बी.एड.

पद : सेवानिवृत्त प्राध्यापक

कार्य, जनसेवा : अध्यक्ष (पूर्व) शिक्षक संघ शेखावत - 15 वर्ष निर्विरोध, राठौड महासंघ (कर्मचारी), मंत्री राजस्थान पेशंनर समाज जैसलमेर, निदेशक (समाज सेवा) मरू सांस्कृतिक केन्द्र, अध्यक्ष भाटिया समाज ट्रस्ट जैसलमेर, गड़सीसर संरक्षण में मौन सेवा कार्य हेतु अभिनंदन द्वारा श्री गिरधर धर्मार्थ ट्रस्ट, जैंसलमेर।

लेखन कार्य : विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में निंबध एवं रचनात्मक लेखन।

पता : मोकाती पाड़ा, जैसलमेर (राज़.)

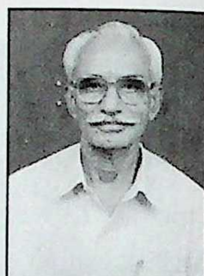
दूरभाष : 251066, 255303

संरक्षक



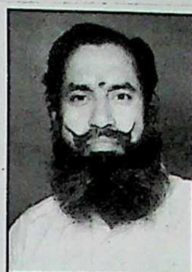
नाम : श्रीमती गंगा देवी व्यास
शिक्षा : स्नातक
व्यवसाय : व्यवासायी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता
जनसेवा : पूर्व - जिला प्रमुख, जिला परिषद् जैसलमेर महिला शिक्षा, महिला जागृति तथा नारी स्वतंन्त्रा एवं अधिकारों के लिए संघर्षरत्त जुंझांरू नेत्री।
संप्रति : मरु सांस्कृतिक संग्रहालय (कवि तेज लोक कला समिति) जैसलमेर की कार्यकर्त्री तथा स्वतन्त्रता सेनानी की पुत्रवधू
पता : 702, जयनारायण व्यास कॉलोनी, जैसलमेर (राज.)
दूरभाष नं. : 252654

परामर्शदाता



नाम : किशनसिंह भाटी
शिक्षा : एम.ए., एल.एल.बी
व्यवसाय : वरिष्ठ अधिवक्ता
जनसेवा : पूर्व कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष, अध्यक्ष सहकारी भंडार एवं सहकारी बैक, पूर्व विधायक, भूतपूर्व इन्टेक कन्वीनर जैसलमेर, स्थापना दिवस 825 समिति के संयोजक
परामर्श दाता : मरु सांस्कृतिक संग्रहालय (कवि तेज लोक कला विकास समिति) जैसलमेर
विशेष : प्रखर राजनीतिज्ञ, कुशलवक्ता एवं श्लाघनीय समाजसेवी
पूर्व अध्यक्ष-उपभोक्ता होलसेल भण्डार जैसलमेर
सदस्य-संचालक मंडल शीर्ष सहकारी बैंक रजि. जयपुर
सदस्य-राज्य स्तरीय प्राथ. व्यवस्थापक
सदस्य वेतनमान एवं स्मर नि. समिति
सदस्य जिला परिषद
अध्यक्ष शहीद पूनमसिंह समिति
अध्यक्ष जयसिंह स्मृति समिति
संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष संचालक मंडल मोरसवी बाल निकेतन
पता : किशनघाट की प्रोल, सत्याया हवेली, जैसलमेर

अध्यक्ष



नाम : श्री प्रेमराज सेवग
पिता का नाम : श्री भोजराज सेवग
व्यवसाय : सेवानिवृत लेखा अधिकारी सहकारी भंडार
विशेष : अध्यक्ष (मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर), रम्मतों के खिलाड़ी, भजन गायक तथा समाजसेवी, कवि तेज के अखाड़ें के वर्तमान प्रतिनिधि
योगदान : रम्मत लोक नाट्क का उदयपुर दिल्ली में प्रदर्शन आकाशवाणी से प्रदर्शन
पुरस्कार : जैसलमेर स्थापना दिवस पर सम्मानित
पता : सिंघवी पाड़ा, जैसलमेर
दूरभाष नं. : 250890

उपाध्यक्ष



नाम : श्री विमल शर्मा
पिता का नाम : स्व. श्री सगतमलजी शर्मा
जन्मतिथि : 07.07.1963 (जैसलमेर)
शैक्षणिक योग्यता : बी.कॉम.
खेल उपलब्धियां : उपाध्यक्ष, राजस्थान क्रिकेट संघ राजस्थान, जयपुर (फरवरी 2005 से)

राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा वर्ष 1987 के पश्चात् से राज्य में आयोजित समस्त अंतरराष्ट्रीय आयोजनों (एक दिवसीय) मैचों के सफल संचालन में प्रशासकीय भागीदारी।

राजस्थान क्रिकेट संघ की राज्य स्तरीय कार्यकारिणी सदस्य (1998-2000)

राजस्थान क्रिकेट संघ की विभिन्न उपसमितियों में नेतृत्व (1999से लगातार)

राज्य स्तरीय भूतपूर्व क्रिकेट खिलाड़ी, फुटबॉल एवं खोखों में राज्य स्तर पर भागीदारी।

जैसलमेर जिला क्रिकेट संघ में सचिव, 15 वर्ष का निरंतर प्रशासकीय अनुभव।

जिले में क्षेत्रीय (पश्चिम) स्तर की दर्जनों प्रतियोगताओं का सफल आयोजन।

		जिले में आयोजित होने वाली फेडरेशन व राष्ट्र स्तर की सक्रिय व रचनात्मक भागीदारी।
		जिला खेल परिषद् में खेल संघों का प्रतिनिधित्व।
		यूथ हॉस्टल में सदस्यता।
		फुटबॉल, खोखो व हैण्डबॉल संघ की जिला कार्यकारिणी में पदाधिकारी।
अन्य	:	अध्यक्ष, जैसल प्रेस क्लब जैसलमेर
		अध्यक्ष, जर्नलिस्ट एसोशिएसन ऑफ राजस्थान की जिला इकाई। (2000 से 04 तक)
		वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, जिला इकाई (1982-1985)
		जिला ब्यूरो चीफ दैनिक भास्कर।
		उपाध्यक्ष, मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर (जिले की अग्रणी सांस्कृतिक संस्था)
सम्मान	:	जिला प्रशासन द्वारा वर्ष 1996 में रचनात्मक पत्रकारिता के लिए स्वतंन्त्रता दिवस पर
		लॉयन्स क्लब जैसलमेर द्वारा वर्ष 2002 में समाज सेवा व बेहतर खेल प्रशासन के लिए जिला स्तरीय सम्मान।
		स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा जैसलमेर की स्थानीय कर्मचारी युनियन द्वारा वर्ष 2002 में कामरेड परवाना खेल रत्न पुरस्कार व वर्ष 2003 में पत्रकारिता क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए पुरस्कार से सम्मानित।
		850वें जैसलमेर स्थापना दिवस पर राज्यपाल के हाथों जुझारू पत्रकार, खेल प्रशासक एवं समाज सेवक के क्षेत्र में विशेष पुरस्कार।
पता	:	भास्कर, तालरिया पाड़ा, जैसलमेर
दूरभाष नं.	:	253333, 9414149333, 9829212692

सचिव



नाम	:	सत्येन्द्र शर्मा 'मरुश्री'
पिता का नाम	:	स्व. वैद्य श्री गोपाल शर्मा
शिक्षा	:	बी.कॉम.
व्यवसाय	:	सरकारी सेवा
पुरस्कार	:	अन्तरराष्ट्रीय मरु मेले में सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 'मरुश्री' में (चार बार) राज्यपाल

		महोदय द्वारा 'मरुश्री' का खिताब।
		मरु सांस्कृतिक केन्द्र व कवि तेज लोक संग्रहालय में 15 वर्षों से योगदान, इंटेक द्वारा मंचित नाटकों में अभिनय, आकाशवाणी में 12 वर्षों से आकस्मिक उद्घोषक व नाट्यकार, रोटरी क्लब द्वारा सम्मानित।
विशेष	:	हिन्दी व राजस्थानी फिल्मों में अभिनय-रूदाली, सात रंग के सपने, सरफरोश, माता राणी भटियाणी, जय श्री आई माता " कई बड़ी कम्पनियों के विज्ञापनों में भूमिका(LIC, टिरों पेन्थर अमेरिका की कम्पनी द्वारा निर्मित चावलों के विज्ञापन में) टी-सीरिज द्वारा निर्मित भजनों की कैसेट में भूमिका, पर्यटन विभाग द्वारा पोस्टर व प्रचार प्रसार सामग्री में फोटो प्रकाशन।
पता	:	सत्येन्द्र शर्मा 'मरुश्री' V-138 इ.गा.न.प. कॉलोनी, जैसलमेर
दूरभाष	:	251842 मोबाइल 9414469374

महासचिव



नाम	:	श्री हेमन्त कुमार शर्मा
पिता का नाम	:	श्री नन्दकिशोर शर्मा
जन्मतिथि	:	05-12-1974
शैक्षणिक योग्यता	:	बी.ए.
व्यवसाय	:	गाइंडिग तथा मैनेजर मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय
पता	:	गंगन पाड़ा , जैसलमेर
दूरभाष नं.	:	9414244074

साहित्यिक सचिव



नाम	:	कन्हैया सेवक 'रवि'
पिता का नाम	:	श्री प्रताप चन्द
शिक्षा	:	स्नातक
व्यवसाय	:	अध्यापन
योगदान	:	रम्मतों में भूमिका, कविता लेखन, निबंन्ध व व्यंग्य लेखन गायन व शास्त्रीय गायन का प्रदर्शन, हारमोनियम वादन, स्वतंन्त्रता दिवस 2005 की पूर्व संन्धा पर कवित-पाठ पर श्रीमान जिला कलक्टर द्वारा प्रशंसा पत्र तथा नगर

पालिकाध्यक्ष द्वारा 1000/- रू. का पुरस्कार। आकाश वाणी केन्द्र जैसलमेर में नाटकों में अभिनय। साक्षरता अभियान में कविता में तृतीय स्थान। जैसलमेर के 843वें स्थापना दिवस पर कवि तेज लोक कला विकास समिति द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिता में जैसलमेर विषय पर लिखी कविता को तृतीय स्थान व पुरस्कार। प्रतिवर्ष उक्त कार्यक्रम में योगदान।

विशेष : श्री नन्दकिशोरजी के मार्गदर्शन में साहित्य लेखन, संग्रहालय में योगदान।

पता : अखे प्रोल, दुर्ग, जैसलमेर।

दूरभाष नं. : 254031

सांस्कृतिक सचिव



नाम : श्रीमती पुष्पा शर्मा

पति का नाम : श्री हरिवल्लभ शर्मा

जन्मतिथि : 5 सितम्बर 1957

शैक्षणिक योग्यता : सैकेण्डरी (लाईब्रेरी साइंस डिप्लोमा)

विशेष : अध्यक्षा कमला नेहरू उच्च प्राथमिक विधालय, जैसलमेर
गणगौर उत्सव पर संचालन का कार्य।

रुचि : विभिन्न उत्सवों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रूचि व कविता रचना में रुचि।

पुरस्कार : जिला स्तर पर साक्षरता पर कविता रचना एवं कैसेट तैयार करने पर जैसलमेर के 845वें स्थापना दिवस पर सम्मानित, 15 अगस्त व 26 जनवरी के सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मरु सांस्कृतिक केन्द्र के गणगौर उत्सव पर सम्मानित किया गया।

पता : गांधी कॉलोनी, महादेव होटल के पास, जैसलमेर

लेखा सलाहकार



नाम : प्रमोद भाटिया

पिता का नाम : भंवरलालजी भाटिया

शिक्षा : वाणिज्य स्नातक व Institute of Chartered Accountant of Indian के 1992 से सदस्य

सम्मान : वर्ष 2000 में Rotary International द्वारा रेवन्यु कोऑर्डिनेटर पल्स पोलियो के पद पर कार्य के लिए सम्मानित

किये जा चुके हैं।

अनुभव : आपने विभिन्न सरकारी गैर सरकारी वित्तीय संस्थाओं के लेखों के अंकक्षेण का कार्य कर वित्त प्रबन्धन का सफल अनुभव प्राप्त किया है।

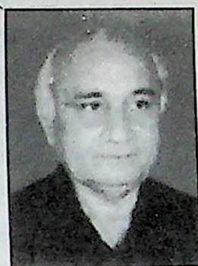
वर्तमान : अध्यक्ष, रोटरी क्लब स्वर्ण नगरी जैसलमेर (2005-06)
मुख्य लेखासलाहकार, मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय जैसलमेर

विशेष : आप रोटरी क्लब जैसलमेर के संस्थापक सदस्य हैं व क्लब के सचिव व उपाध्यक्ष पद को आपने गौरवान्वित किया है।

पता : श्री जी कुंज, 636, तालरिया पाडा, जैसलमेर

दूरभाष नं. : 252085

सदस्य



नाम : भूरचन्द जैन

पिता का नाम : श्री सुरतानमल जी बोहरा

माता का नाम : श्रीमती मथरीदेवी

जन्म स्थान : सिंहाणी (बाड़मेर)

जन्म तिथि : 10 जुलाई, 1936

शिक्षा : मैट्रिक, इन्टर

व्यवसाय : सरकारी नौकरी 17 सितम्बर, 1958 से 1 अक्टूबर, 1983 स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति 2 अक्टूबर, 1983 गांधी जयंती

पत्रकारिता : अप्रेल, 1984 से जनसत्ता संवाददाता एवं कई साप्ताहिक, पाक्षिक मासिक समाचार पत्र पत्रिकाओं के संपादक, प्रधान संपादक आदि। अब तब करीबन 2000 से अधिक राष्ट्रीय स्तर के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख स्वयं के खींचे फोटो के साथ प्रकाशित। एक सौ से अधिक आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से वार्ता आदि का प्रसारण। सत्रह से अधिक स्मारिकाओं आदि का संपादन। अब तक 52 पुस्तकों का प्रकाशन और 10 पुस्तकें प्रेस में प्रकाशधनाधीन एवं बीस से अधिक पुस्तकों के प्रकाशन की तैयारियां। 14 पोस्टरों का प्रकाशन। राष्ट्रीय, राज्य, जिला एवं नगर की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, कला, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि समाजसेवी करीबन 50 से अधिक संस्थाओं से सम्बद्ध। साहित्य सृजन पर राज्य स्तरीय सम्मान, समाज व मानवसेवा के लिए 'समाजसेवी' सम्मान। सार्वजनिक उपयोग के अतिरिक्त विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक,

साहित्यिक व कला के लिए कार्य करने पर कई बार सम्मानित।

रुचि : समाज सेवा, साहित्य सृजन, फोटोग्राफी, पत्रकारिता

पता : जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राज.)
अरिहंत भवन, सदर बाजार, बाड़मेर (राज.)

फोन : 02982-220943 (नि.) 220430 (ऑ.)

सदस्य



नाम : डॉ. केसरीमल केसरी

जन्मतिथि : 1 अगस्त 1935

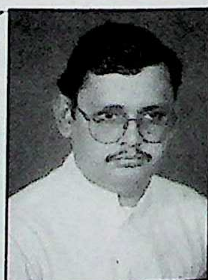
शिक्षा : चिकित्सा स्नातक, पिछले 40 वर्षों से होम्योपैथिक चिकित्सा-सेवा से जुड़े पश्चिमी राजस्थान में होम्योपैथी के प्रसार के प्रयास

कार्य क्षेत्र : राजस्थान पत्रिका, आकाशवाणी, हिन्दुस्तान समाचार के चालीस वर्ष तक जिला संवाददाता रहे। गौपालन व गौसेवा में श्री सुमेर गोशाला बाड़मेर के 45 वर्षों से व्यवस्थापक रहे। चेतप्रहरी मासिक का 10 वर्ष तक सम्पादन, अंतराप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् के माध्यम से अनेक साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजन, गायत्री परिवार शंति कुंज के माध्यम से बाड़मेर में गायत्री शक्ति पीठ के निर्माण में सहयोगी। राजस्थान साहित्य अकादमी की सरस्वती सभा के दो कार्यकाल तक सदस्य रहे। कवि तो नहीं किन्तु कविता लिखने का शौक है, देश की अनेक प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में अकाल, पशुपालन, चिकित्सा, वनौषधियों आदि पर अनेक लेख तथा कहानियों का प्रकाशन।

पता : गायत्री चौक, बाड़मेर (राज.)

फोन : 02982-220722 (घर)

सदस्य



नाम : वासुदेव पालीवाल

पिता का नाम : श्री हरदेव शास्त्री

जन्मतिथि : 10.5.1968

शैक्षणिक योग्यता : एम.ए-सी. (भौतिकी), एम.ए. (हिन्दी साहित्य),
बी.जे.एस.सी., बी.एड.

व्यवसाय : राजकीय सेवा (सहकारी निरीक्षक)

सृजन : धर्मयुग, कादम्बिनी, मधुमास, नवनीत, मुक्ता, सुमन सौरभ, चंपक, बालहंस, बाल भारती, पराग, जनसत्ता, नवभारत टाईम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, राजस्थान पत्रिका, इतवारी पत्रिका, दैनिक नवजयोति इत्यादि विविध पत्र-पत्रिकाओं में पांच सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित।

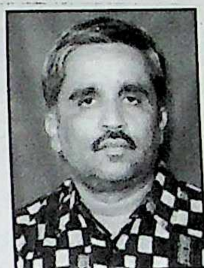
रचना क्षेत्र : कहानी, कविता, बालसाहित्य तथा जैसलमेर की कला संस्कृति व पर्यटन पर आलेख

प्रकाशन : एक कहानी संग्रह 'क्लीन कैम्पस- राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से राजस्थानी ग्रंथागार द्वारा प्रकाशित

सम्बद्धता : अंतर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद्, गांधी शांति प्रतिष्ठान, कवि तेज लोक कला विकास समिति व मरु सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर

पता : 675, इंदिरा कॉलोनी, जैसलमेर

समन्वयक



नाम : श्री सतीश कुमार शर्मा

पिता का नाम : श्री नन्दकिशोर शर्मा

जन्मतिथि : 04-11-1973

शैक्षणिक योग्यता : सैकण्डरी

व्यवसाय : गाइंडिग तथा समन्वयक मरु सांस्कृतिक केन्द्र संग्रहालय

पता : गंगन पाड़ा , जैसलमेर

दूरभाष नं. : 9414315725

सदस्य



नाम : अश्वनी शर्मा

पिता का नाम : श्री दाऊदयाल शर्मा

जन्मतिथि : 08-10-1971

शैक्षणिक योग्यता : बी.एस-सी. (स्नातक)

तकनीकी योग्यता : फेलो, **F.I.I.I. Mumbai**

व्यवसाय : नौकरी (भारतीय जीवन बीमा निगम)

पद : उ.श्रे.सं. (HGA)

दूरभाष नं. : 251065

संग्रहालय से सम्बन्धित कुछ उल्लेखनीय सम्मतियां

एक व्यक्ति यदि धुन का पक्का है तो क्या कर सकता है, उसकी छोटी-सी झलक श्री शर्मा का लोक सांस्कृतिक संग्रहालय देखकर पायी जा सकती हे।

जैसलमेर की खोती हुई संस्कृति-सभ्यता को सुरक्षित रखने के जो अनेक प्रयास हो रहे हैं उनमें श्री शर्मा का एकल प्रयास प्रशंसनीय है।

मैं उन्हें बधाई देता हूँ और उनके प्रयास की उत्तरोतर सफलता चाहता हूँ। समाज तथा शासन को उसकी कद्र करनी चाहिए।

24-12-94 –अटलबिहारी वाजपेयी

यह लोक कला संग्रहालय आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा व गौरव का अप्रितम स्रोत बनेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ। इस संग्रहालय को तैयार करने में सूझ-बूझ व परिश्रम से काम लिया गया है और कई अमूल्य वस्तुओं का यहाँ प्रदर्शन है। हमारी लोक कलाएं हमें ऊर्जा और जीवतंता देती है, मिट्टी से जोड़ती है, हम नागरी जीवन जीने वालों को सही जीवन की ऊष्मा सौंधी महक से आप्लावित करती है।

–मंगल सक्सेना

4-10-84 अध्यक्ष, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर

जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय एक छोटा आरम्भ है, जिसे उसकी निष्ठा बड़ी सम्भावनाओं से भरती है। श्री नन्दकिशोर शर्मा और उनके सहयोगियों ने यह जो कार्य आरम्भ किया है उसका महत्त्व देश क्रमशः ही जानेगा। लोक संस्कृति केवल संग्रहालय में रखने की चीज नहीं है, बल्कि देश के सांस्कृतिक जीवन की रीढ़ होती है, उसी के बल पर देश की संस्कृति बढ़ती है। कई प्रदेशों में लोक संस्कृति क्षीण हो रही है परन्तु राजस्थान में वह अभी प्राणवान है और समाज को बल देने वाली है। उनके अस्तित्व को हम ही सभ्यता के बीच यों जीवंत बनाये रख सकें तो यह देश की बड़ी सेवा होगी। श्री शर्मा और उनके सहयोगियों को, उनके प्रयास को मैं बधाई देता हूँ और उनकी सफलता की कामना करता हूँ। मैं स्वयं तो एक सांझ यह देखकर धन्य हुआ।

31-3-86

–अज्ञेय

श्री शर्माजी का म्यूजियम देखकर बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई। पेंटिंग और अलग-अलग वाद्य इन्होंने बड़ी मेहनत से इकट्ठा किये हैं।

18-11-88

–लता मंगेशकर

संग्रहालय देखने आये विशिष्ट व्यक्तियों का अभिमत

श्री नंदकिशोर जी शर्मा का प्रयास और उनका सांस्कृतिक केन्द्र देश की शान है। ऐसे लोग ही संस्कृति के रक्षक हैं। श्री शर्मा जी जैसे लोग राष्ट्र के लिए अभिनंदनीय हैं, वंदनीय हैं

31 जनवरी 05

जगदीश शर्मा
प्रबंध सम्पादक
दैनिक [illegible]

Hats of to all the performers for presenting an attractive & interesting performance and well maintaining this ancient tradition.

(V. M. DATE)

2nd Feb, 2005,
Hotel Akashadeep
for Around the world ...

कोई भी व्यक्ति कितना अनमोल कला-संग्रह कर सकता है यह देखनेके बाद ही समझमें आ सकता है। श्री नन्दकिशोरजी जैसे सादे-सीधे व्यक्तिको देखकर यह मानना भी मुश्किल है। लगता है कि एक व्यक्ति कितना महानकार्य सिर्फ अपने बलबूते पर कर सकता है। हम उनको खास-खास धन्यवाद देते हैं और उनकी लम्बी आयु के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं। अगर हमने यह संग्रहालय नहीं देखा होता तो हमें ऐसा लगता कि हमने जैसलमेर देखा ही नहीं। धन्यवाद।

महिपत कवि,

MAHIPAT KAVI - LEELA KAVI   TELE : 27451527
INTERNATIONAL PUPPETEER
PUPPET FILMS & T.V. ARTIST

PUPPETS & PLAYS
(Regd. Trust No. E5913-1985)



2, PATRAKAR COLONY NO. 2, NR. ADARSHNAGAR,
AHMEDABAD-380 013 INDIA.
EMAIL : puppetsplays@hotmail.com

"The performance was excellent. Specially the Snake man and the new item. Enjoyed the show thoroughly. Keep the Good work continued

(M M Yawalkare)
Mumbai 7/2/05

P.S. I had lost my money purse in the evening while watching the show. However, Mr Sharma and his staff took lot of trouble to restore the purse with me. Very helpful & honest people!
7/2/05

भारत के विभिन्न नगरों से "सिन्धी नाटक और अद्भुत की सेमीनार में आये सिन्धी लेखक और कलाकार आज इस म्यूजियम में पधारे और यहां की अद्भुत वस्तुएं देखकर हम लोग आश्चर्यचकित रह गये। आदरणीय नन्द किशोर को नमन।

लखमण खिलाणी
महासचिव,
अ.भा. सिन्धी बोली एवं
साहित्य सभा, अजमेर

एक अविस्मरणीय अनुभव। नन्दकिशोर जी का कोटी कोटी अभिनन्दन।

सुन्दर बुराणी
00/02/05
सुन्दर बुराणी
सुन्दर कला संगम, नागपुर-४४०००२

Shri Nand Kishor Sharma has set up a wonderful museum to preserve the Cultural Heritage of Jaisalmer region. He deserves kudos! Hats off to him

Lakhmi Khilani
Indian Institute of Sindhology
Adipur.



LAKHMI KHILANI

INDIAN INSTITUTE OF SINDHOLOGY
Post Box No. 10, ADIPUR (KUTCH) - 370 205.
E-mail : sindlogy@wilnetonline.net
Phone : (02836) (O) 60997 (R) 60264, Fax : 60336

Shri N.K. Sharma is being one person is an institution in itself; even an institution cannot do such work which Shri Sharma as an individual has done. May God bless him.

7.2.2005

Sunder Agnani
President Akhil Bharat
Sindhi Boli Ain Sahit
Sabha

S.C. Makhija
Bombay.

मरु सांस्कृतिक केन्द्र के भव्य स्वरूप को देखा। आदरणीय नन्द किशोर जी शर्मा अपने स्वयं के प्रयास से इतना कुछ कर सकते हैं, संग्रहालय को देखने पर सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा है। श्री शर्मा जी को मैं गत 35 वर्षों से जानता हूं। अब तक मेरा परिचय आपसे एक समाजनिष्ठ व समर्पित विद्वान के रूप में था, लेकिन मरु सांस्कृतिक केन्द्र, उसकी सामग्री, उसकी प्रस्तुति तथा उसके प्रति श्री शर्मा जी की सृजनशीलता, सहज पकड़, सूक्ष्म दृष्टि, लगन व निष्ठा को देखकर आपका वन्दन करने का जी चाहता है। वस्तुतः आप चलते-फिरते इनसाइक्लोपीडिया हैं, आप राजस्थान के वरेण्य, [illegible] से परिपूर्ण एवं सांस्कृतिक धरोहर के पुरोधा के रूप में अभिनन्दनीय हैं। राजस्थान की समृद्ध संस्कृति को सुरक्षित करने का आपका यह प्रयास स्तुत्य है। मेरी ओर से तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर की कार्यकारिणी तथा प्रदेश के समस्त साहित्यकारों की ओर से आपश्री को कोटि-कोटि बधाई।

दि. 27.2.2005
राजस्थानी समारोह, जैसलमेर

(डॉ. देव कोठारी)
अध्यक्ष

श्याम सिंह [illegible]
पूर्व [illegible] सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर (राज.)

श्याम सिंह [illegible]
प्राचार्य (से.नि.)
134, गांधीनगर, चूरू 331001

डॉ. देव कोठारी
अध्यक्ष



राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
मुरलीधर व्यास नगर, करणीसर रोड, बीकानेर 334004 ☏ 0151-2210000

Greatly delighted to be this evening with prominent literarians and poets of substance, who have the merits and capacity to change the course of history for the betterment of human society. I had many evenings not only in this country, but world over, but none is larger than lifesize to this immorable evening, where I felt at home with my own people.

24th April 04. Mohan Bhatia

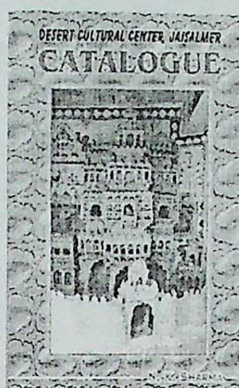
श्री नन्दकिशोर शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकों के आवरण

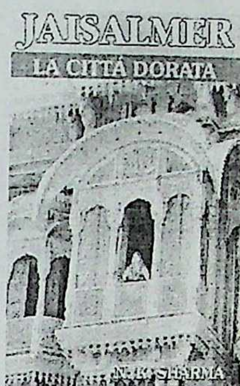
WAY OF LIFE IN DESERT
(CAMEL SAFARI IN JAISALMER)

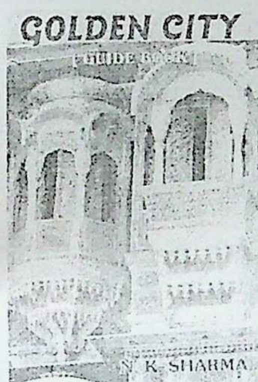


N.K. SHARMA

SEEMANT PRAKASHAN, JAISALMER

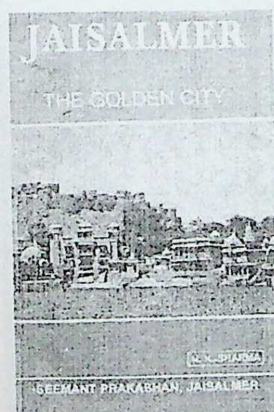


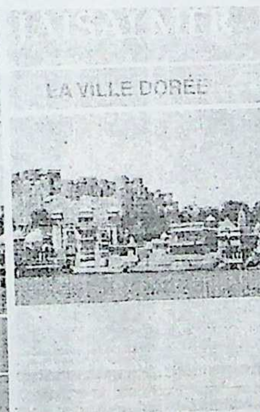






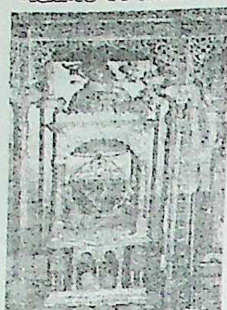






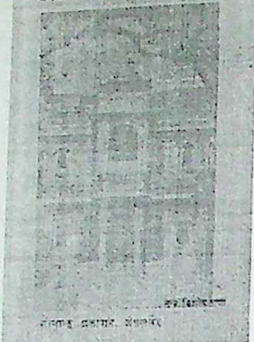


जैसलमेर की लोकदेवियां



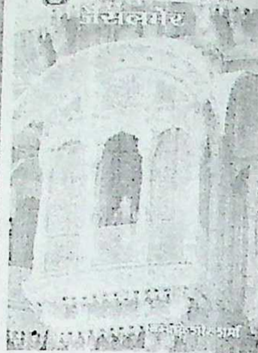
नन्दकिशोर शर्मा

जैन तीर्थ, जैसलमेर



सुनहरा नगर

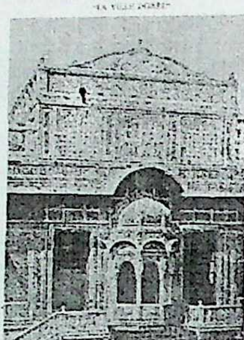
जैसलमेर



रम्मत

माई होटल ब्युटीफुल

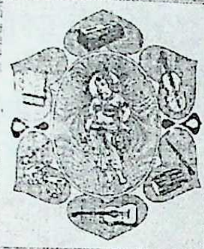
JAISALMER



CATALOGUE

OF

JAISALMER FOLKLORE MUSEUM



Kavi Tej Lok Kala Vikas Samiti, Jaisalmer

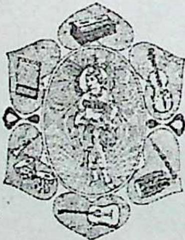


मरु सांस्कृतिक केन्द्र

व

जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय

स्मारिका

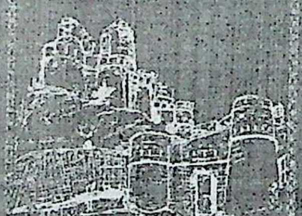


1 फरवरी
1997

कवि तेज लोक कला विकास समिति, जैसलमेर

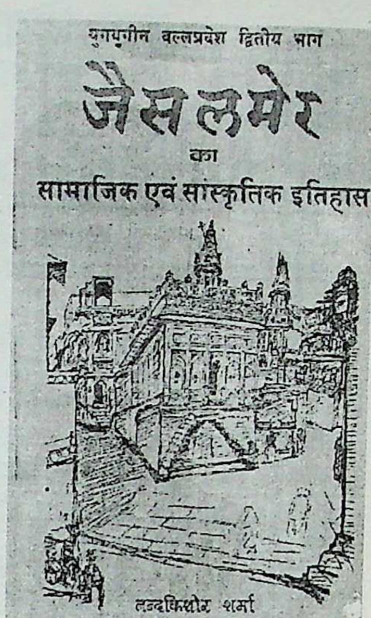
GOLDEN CITY

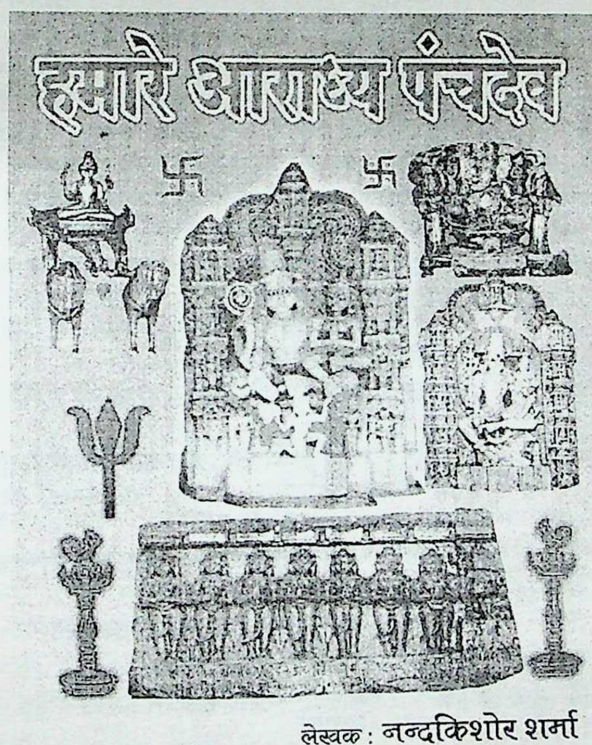
[GUIDE BOOK]



N. K. SHARMA







लेखक : नन्दकिशोर शर्मा

लेखक-परिचय



नाम	: नन्दकिशोर शर्मा
जन्म-स्थान	: जैसलमेर नगर (स्थानीय मूल निवासी)
शिक्षा	: एम.ए. (इतिहास), बी.एड.
व्यवसाय	: सेवानिवृत्त शिक्षक (राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित)
प्रकाशित पुस्तकें	: 1. जैसलमेर का राजनैतिक इतिहास, 2. जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 3. जैसलमेर परिचय, 4. झरोखों की नगरी-जैसलमेर, 5. जैसलमेर के लोक नाट्य, 6. पंखेरुओं के गीत एवं अन्य राजस्थानी गीत, 7. जैसलमेर की लोकदेवियां, 8. हमारे आराध्य पंचदेव
पर्यटन प्रकाशन	: 1. जैसलमेर द गोल्डन सिटी (अंग्रेजी) अनुवाद-फ्रेंच, जर्मन, इटालियन व स्पेनिश, 2. वे ऑफ लाइफ, 3.भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित
सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान	: जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना, 1984 (निजी संग्रह), मरु सांस्कृतिक केन्द्र (1 फरवरी 1997)
संस्था संचालन	: कवि तेज लोक कला विकास समिति, जैसलमेर
अन्य	: राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर में सरस्वती सभा के पूर्व सदस्य, अन्तरप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् के मंत्री
लोकनाट्य	: लोकनाट्यों के खिलाड़ी, भर्तृहरि, सती सावित्री, पूर्ण भगत, पतिव्रता तथा मीठू मीठूड़ी लोकनाट्यों में अभिनय
कविता	: राजस्थानी व हिन्दी की कविता संरचना, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं कवि सम्मेलनों में प्रसारण एवं पठन
लोकगीत	: राजस्थानी लोकगीतों की रचना एच.एम.वी. द्वारा रिकार्डिंग
गाइडिंग	: भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी, वेंकटरमन, इन्दिरा गांधी, राष्ट्रपति के.आर. नारायणन एवं प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के साथ गाइडिंग पूर्व राज्यपाल राजस्थान बलिराम भगत एवं मोरीशिस के प्रधानमंत्री द्वारा संग्रहालय की प्रशंसा
उत्सव आयोजन	: अपने स्तर पर जैसलमेर स्थापना दिवस एवं गणगौर उत्सवों का आयोजन
विशेष रुचि	: अपने प्रयास से स्थापित जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय के माध्यम से जैसलमेर की कला और संस्कृति को बचाने एवं कुशल गाइड तैयार करने में
संकल्प	: जैसलमेर के इतिहास, कला एवं संस्कृति का संरक्षण करने का प्रयास
सम्प्रति	: निदेशक, जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय गडीसर, जैसलमेर - 345 001 फोन : 02992-252723, 252188 (संग्रहालय), 252375 (निवास)

Mr. N. K. Sharma and his Museums :
(A DREAM REALIZED)



R.C. Harsh M.A.B.Ed
Retd. Lecturer English
On Fort, Vyaspara, Jaisalmer

Mr. N. K. Sharma's life reveals that a small man can perform great deeds. A mere schoolteacher, he dreamed of setting up a museum to display the culture of the Thar Desert. With just a few old musical instruments and photos, he thought of setting up a museum, but it was something that seemed improbable to me. It seemed to be beyond his powers, but come what may, he would not give up. He collected a number of other items, and in 1984 he founded a small museum near Garishar Lake in Jaisalmer. Mr. Sharma's efforts continued, and in 1997 he started another museum, which was inaugurated by Mr. K. R. Naraynan (then Vice-President of India).

The museums offer an astonishing collection of paintings, coins, musical instruments, fossils, clay models, and other artifacts. The main objective of these museums is to preserve the cultural heritage of Jaisalmer and Rajasthan. The museums aim at promoting the culture of Rajasthan. To this end, a puppet show is organized in the museum, giving an opportunity to the artistes to display their art, which otherwise would be on the verge of extinction. Mr. Sharma, an expert in desert culture, is a man of many talents. He is a poet and writer, an historian, an excellent speaker, and a good guide. He organizes the Gangaur Festival each year at his museum, where he displays the idols of Ishar and Gauri for the public to see.

His museums have been visited by many distinguished people who have all appreciated Mr. Sharma's efforts. They serve as a beacon to encourage others who have dreams to educate people about, or preserve, traditional cultures.

To Mr. Sharma, the museums are more than a collection of artifacts; they are his body and soul combined. They are a fulfillment of all his dreams.

Behind the Scenes

We stumbles upon Nanda Kishore Sharma quite by chance. He is the local historian of Jaisalmer, but is not a man who will receive even a footnote mention when books on Jaisalmer are written. He runs a museum of folk art but, museums being just the kind of things one tends to skip, we almost missed meeting him. A day prior to leaving Jaisalmer town we decided to visit the museum and were pleasantly surprised by the enthusiasm of this elderly man.

The museum is interesting enough, crammed as it is with odds and ends of Rajasthani craft and history, even an odd Ravi Verma painting whose link with Rajasthan we failed to establish but which Sharma justified, claiming it was brought to this region by a rich tradesman! There is also the interesting curator who stops you, perforce, at every musical instrument or costume to explain what little he knows about it. He even bursts into a long mournful song in Rajasthani telling of the love between a Rajasthan prince an d a damsel from the desert.

We are enchanted by the puppet show that is held at the folk centre that evening. Here, short of manoeuvring the puppets himself, Sharma is involved in everything: welcoming the guests-mostly tourists and their bored looking children, and explaining the Rajasthan form of puppet theatre, reciting Rajasthani muhavearas, and introducing each item. After the hour-long show he announces that the puppets are on sale, the proceeds of the sale to be donated to the folk artists!

Meeting Sharma is a moving experience, for we learn that this simple schoolmaster has walked and bicycled around villages in the district of Jaisalmer, assimilating its history and collecting artifacts that he has paid for with this meagre schoolmaster's salary. He has written 40 books in Hindi and English, as he believes his knowledge of English is inadequate to say all that he wants to about Jaisalmer. He has published them at his own cost, given them away to anyone who has showed as much

as inkling of interest, and has sometimes gone around villages reading out passages from them.

He volunteers an unending wealth of information and is open with his comments. Much of what was the wealth of Jaisalmer homes has been sold, he says. He would have liked to buy them himself, but he cannot afford the prices being asked by antique these days. He does not say that of course, but we gather as much.

Sharma will not receive international acclaim for his work. INTACH and organization like the World Monuments Fund will, raising hundreds of dollars to save the Jaisalmer fort. This unassuming man has, however, raised awareness about the fort in his own small way, minus the hype and hoops and dinner parties attended by the who's who.

Meeting him and witnessing his zeal I am convinced that it is the small Indian who will teach us how to be big. It is not corporations and institutions hankering for their share of publicity when they fund the restoration of a monument that will keep the architectural heritage of this country alive. Anonymous Indians like Sharma will. And there are many like him working in the remote corners of this country, even if we've never heard of them.

Ratna Rao Shekar

Editor 'House Calls'
Editorial Issue Nov.-Dec. 2003

Printed and Published by A Prakash Reddy on behalf of Dr. Reddy's Laboratories Ltd. 6-3-865, 3rd Floor My home Jupally Complex, Ameerpet, Hyderabad.

Brief Resume of Significant Contributions of Shri Nand Kishore Sharma

INTRODUCTION

There have been constant efforts over the last fifty years for conservation and preservation of folk and culture and cultural heritage of desert people in Thar. In this process Shri N.K. Sharma, a retired teacher and national award has immense and significant contributions and occupies a specific plaçe and importance. Shri Sharma a well known teacher, Poet of Rajasthani and Historian had deep feeling for conservation and preservation of the dying rich cultural heritage of desert region. All his single man dedication and untiring efforts has led to the establishment of a Folk Cultural Museum in 1984 at Jaisalmer which has been flourishing continuously over last two decades in the field of folk art, folk culture, folk music, folk drama, folk songs and has led to a development of district and Unique Desert Culture Centre which has established its identity at the international level in the field of tourism. Because of enormous collections with beautiful display depicting rich and diversified desert communities and their life style.

Shri N.K. Sharma was a Pioneer tourist guide in the early eighties when tourism had just started in Rajasthan and he used to render his services in the field of Guide to dignitaries visiting Jaisalmer from India and abroad. He served as an active member of tourist development society in the early stages. There are several books and articles in various leading news papers and magazines written by Shri Sharma and these proved a very valuable and authentic source of information to the tourist visiting from all over the world. These contributions perhaps worked as a catalyst to promote more numbers of tourist to visit Jaisalmer. The Desert Cultural Centre is a premier and only centre to cater the need of local visits and tourists to get insight of the real desert life in the museum, besides round the year organization of diversified cultural activities on festivals.

The Desert Folklore Museum and Desert Cultural Centre which emerged as a result of the dedication and devotion of single man in 1984 was inaugurated by then Hon'ble Vice President of India, his majesty Hon'ble President of India Shri K.R. Narayana

on 1st February 1997. In the Inauguration Ceremony address Hon'ble K.R. Narayana said "First of all I want to thank you for the warm welcome you have given to me, my wife, my family and my party this morning. It has been a great pleasure to come to this Desert Cultural Centre. I know that this is a centre which has been built single handed by Shri Nand Kishore Sharma and he has made a great contribution to Jaisalmer, Rajasthan and India by collecting, displaying and projecting the culture and the arts for Jaisalmer and to the world in large, Shri Nand Kishore Sharma has immortalized the history of Jaisalmer as a gift to the future generation.

I wish to congratulate him and want to thank him on behalf of all of you and the people of India to this initiate he has taken in preserving the Arts and Culture for the Golden Desert City."

The high dignitaries who have already visited and appreciated the Museum, Shri Atal Bihari Vajpayee (Present Prime Minister of India) who said, "एक व्यक्ति यदि धुन का पक्का है तो क्या कर सकता है, उसकी छोटी–सी झलक श्री शर्मा का लोक सांस्कृतिक संग्रहालय देखकर पायी जा सकती है। जैसलमेर की खोती हुई संस्कृति सभ्यता को सुरक्षित रखने के जो अनेक प्रयास रहे हैं उनमें श्री शर्मा का एकल प्रयास प्रशंसनीय है। मैं उन्हें बधाई देता हूँ और उनके प्रयास की उतरोत्तर सफलता चाहता हूँ। समाज तथा शासन को उसकी कद्र करनी चाहिए।

Other dignitaries include Honourable Shri Bali Ram Bhagat, Governor of Rajasthan, Shri Gulam Nabi Azad, Ex Tourism and Civil Aviation Minister, Govt. of India, Shri Bheron Singh Shekhawat, Chief Minister of Rajasthan, Shri Mitha Lal Mehta, Chief Secretary, Rajasthan Govt., the famous singer Ms. Lata Mangeshkar, famous writer and poet Shri Agai, Shri Karanjia, well known journalist and many other well known dignitaries.

Mr. Sharma is the founder of Kavi Tel Lok Kala Vikas Samiti for the development of folk drama, folk music, folk dances, folk songs etc.

Mr. Sharma is the member of many societies of literature, Art, Culture, Literacy, Educational and Tourism, Local District magistrate has awarded him, and other societies.

— **Ram Singh Mertia**
Senior Scientist
CAZRI, Jaisalmer

A Single Man's Imagination

Tourists from various parts of India and abroad visit Jaisalmer to have a look at its Historic Fort, Magnificent Temples, Grand Palaces and Artistic Mansions.They exhibit great interest in Folk Songs, Folk Dances, Art, Literature, Architecture and History of Jaisalmer. The number of tourists visiting Jaisalmer is increasing considerably for the last several years.

I was born and brought up in Jaisalmer and I got the opportunity to see and learn about the rulings of the kings before independence. It was very difficult for the people of this area during the first 20 years after the independence of India. There was always a shortage of all daily utensils in the market as well as shortage to rainfall.Without rainfall, it was not possible to do agriculture, thus putting a strain on local food peoduce.

There was no facility for education in the villages. In Jaisalmer city, there was only one high school. Even though the high school was there, the students had to go either to Jodhpur or to Jaipur for the board and university examinations. Since there were no bus/train facilities, they had to go by camels. There is a proverb on this journey.

The motorable roads were constructed only after the first war between India and Pakistan in 1965. Since then tube wells, water wells and train service have also started.The approach roads around the city were also made after the second war between India and Pakistan in 1971. After this war, an airport has also been constructed by the military. Now after the introduction of Indira Gandhi Canal Project, O.N.G.C. and many other Government Offfices, the financial position of the city has improved.

After 1974, the Golden City, Jaisalmer has made a place in the world tourist map fastly. This is a fact after 1980. Every year the tourism in Jaisalmer in increasing more and more and every month small hotels are opening.Most of these hotels are converted from the old buildings.

There is no doubt that the financial position is improving in Jaisalmer, but we feel that the same can spoil the traditional culture of Jaisalmer, without having control on the bad elements. The morality is also vanishing day by day. Now from all over India, the people are coming to Jaisalmer for business purpose and starting hotels, travel agencies, lodges and restaurants etc., but the local people have gone out of Jaisalmer.

It is our responsibility to keep our culture unspoiled and give the correct and clear information to othe new generation as well as to those tourists who are visiting Jaisalmer.

One day while thinking about it, it came to my mind to collect the traditional items of open a museum. I felt very peace in my mind.I put my ideas in front of the well known local people and international level Padmshri Komal Kothari and Devilal Samar Bhartiya Lok Kala Mandir, Udaipur and they appreciated and supported my view points. A lady from Germany gave me Rs. 300/- to start this collections. Them my interest increased and I collected all local musical instruments first. I also wrote a book on Jaisalmer "JAISALMER: THE GOLDEN CITY". This book got much welcome and appreciation from the world tourism. It has been translated into 5 different languages. The foreign tourist group leaders helped me to sell these books widely. The income from the sale of my books, the income from writing articles in the newspapers and magazines etc., I started buying the items for museum.

Slowely one of the rooms in my house was filled with the items; but my wife was in a critical position and was not knowing that why I was collecting all these old and ugly items. Somethimes she also threw the items here and there.It is true that when I got the idea in my heart to open a museum, by the grace of the God and almighty, I continued to collect the items. I was trying and doing all the efforts only on my own. Those items which I wanted to get were procured by me frommany with great difficulty.

PLACE FOR FOLKLORE MUSEUM

Eventhough I collected the items for museum, it was a big problem for me that a proper place be searched to open the

museum.I was thinking every day on it. One day when I was guiding a foreign group and was on a camel ride, then unfortunately I fell down and one of my legs was fractured. When I was admitted in the hospital and sleeping on the bed, in the dream, I felt in my mind that on the bank of the "Gadisar Lake", there is a garden (Mehar Bagh) of "Sewak Samaj" (a society), There the museum has been opened and I am showing it to the foreigners. Accordingly, to get the place I approached the higher authorities of the Samaj (Society) and requested to give me the same place on rental basis and as per request they agreed to give me the place. This place is as well as the building was in ruins and destroyed. Slowly I have renovated it and on 4th October, 1984 the day of the "Vijayadashmi" festival I opened the "Jaisalmer Folklore Museum: in 3 rooms.

The then president, writer and poet of the Sangeet Natak Akademy. Mr.Mangal Saxena, inaugurated the museum. For the maintenace of the museum, Rs. 2/- are charged from each person and also from the sales of my books, to meet the expenses. It was too difficult to run the same in the beginning, without an almirah and safe place, some items were also stolen by the people/visitors. Fortunately. one day, one couple, Mr. & Mrs. Joel Jeff met me in the Museum and offered me Rs. 25,000/- in 1987 for the development of the museum. With this money I paid advance rent to the Samiti and constructed 2 more rooms and got prepared some furniture and protected the items with glasses etc. My book is printed in 5 languages and out of the sales of the books, I started buying more items. My family expenses were met with my salary only as usual. One of my son also learnt French language and also started helping me. Slowly the outside decorations were made properly.

It is appreaciated by the domestic and international tourists and honourable and renowned people for one single man's interest and collection for the museum. In the guide books of national and international level it was also appreciated and they recommended to see the museum surely while visiting Jaisalmer.

KAVI TEJ LOK KALA VIKAS SAMITI (A REGISTERED SOCIETY)

When the museum started, a society also started after the name and honour of the famous and popular Brahmin poet and local drama writer "Kavi Tej:. The organisation is looking after the management of the museum also. It has been registered with the Government in 1987, and with the interest of the founder and the Honorary Director, Shri N.K. Sharma and the support Directors and the Board Members, shri Premraj Sharma and Shri Kishan Singh Bhati,the Museum was improved and developed very fast and the name of the same has taken place in the world tourist map as well as in the world records of tourism and culture. We have published the catalogue of History, Arts and Culture. We have also started arranging competition, festivals and exhibitions and also distributing prizes and honourships etc. to the participants.

ARRANGEMENT AND DEVELOPMENT OF NEW BUILDING

As per the point of view to keep the important and valuable items in the modern style, the present building is very small and since it is on rental basis, it was very difficult to get permission from the society to develop as per the requirement. Since and due to these reasons, we felt to build a new and convenient buidling for the museum.

When His Excellency Baliram Bhagat, the Governor of Rajasthan visited Jaisalmer and I got the golden opprtunity to show him the museum in 1993 and put the problem in front of him to get the land for a new building for the museum and for the further developments. He promised to do something on it.for a long time due to objections from the local people to the Government were there as not to allot Govt. land for the museum.After that the then District Collector Shri Siyaram Meena offered us a plot at Tagore Park measuring 50 X 100=5000 sq.fit. and accordingly I purchased the same land and deposited with the Government a sum of Rs. 2,81,300/- (Rupees two lakhs eighty one thousand three hundred only).

My father, brothers, son, wife and all the local friends also extended their help, cooperation and loan for construction new building. On 13th February 1995, Monday at 5.00 p.m. the worship of the land was done and the foundation of the building was done. On 25th May 1995, Monday at 10.00 a.m., my father Shri Sagatmalji performed the worship of the land and entered the building premises and inaugurated the building.Shri Premraj Sharma, Shri Vasudev Paliwal and Shri N.K. Sharma were also present on the occasion. The construction of the building was started under the instruction and looked after by Shri Bherji Chaudhari of Setrawa. we also gave the responsibility to lookafter the construction to Mr.Madan Mohan Sharma, Mr. Achal Singh Solanki extended his help and cooperation on this work too.

I took voluntary retirement from the teachership and thought to spend the amount of pension for the construction and development of the building.

In 1995 the inflow of the foreign tourists increased tremendously in Jaisalmer, with which the construction works also gone up speedily. Due to the increase of the tourists, I did not face any difficulties for the construction and did not ask any help from any other person. During this period, I felf in my mind to make this building as an interpretation centre, so that the domestic, national and international people will get the information and knowledge of the tourism, history, art and culture, traditional music, songs etc. The people can enjoy themselves of the same. We had also the idea to make a short description on all these things for the visiting people, gave training to guides, special training to the young people on local musical instruments, songs, local and traditional dances and traditional dramas and tried to collect and keep the local culture, history, heritage and traditional music and songs in a particular way and system. To fulfil my dreams, I put the name of the centre as "The Interpretation Centre".

MY DREAM

I am sure that you will be glad to know that by the grace of the almighty. The "Folklore Museum" which started in 1984 and

now it has successfully completed 21 years. During this period the name and publicity of the same have been spread widely all over the world. The museum has also been appreaciated and recommended by many tourists' guide books, national and international, where it has also been highly and thoroughly suggested to visit it while in Jaisalmer. Till now lakhs of foreign and Indian tourists and many other well known persons, scholars, politicians, artists, journalists, poets and singers have visited the museum. Particularly the name and our gratitude will be given in the following pages.

I am very happy to mention here that all my efforts achieved high progress only by the grace of the great God.

Today is the most important and unforgettable day of my life as I have got the esteem golden opportunity to construct and complete the building of "KAVI TEJ Lok Kala Bhawan" and where my dream The Desert Culture Centre is inaugurated by His Excellency Shri K.R. Narayanan, The Vice President of India on 1st February, 1997.

In this institution there will be introduced the traditional customs, history and arts from "Kachh Bhuj to Poogal", "Sanchore to Shekhawati" and all the ways of desert life, which will be unique and very specially added information and knowledge for the domestic and foregin nationals as well as for the coming new generations.

With the introduction of all this, the training will also be given to the people on the Folk Art, Culture and Heritage as well as for looking into the development of tourism and with the valuable information and knowledge, it will be requested to the domestic and foreign nationals also extend their cooperation to keep the same unspoiled which is the very valuable assests for the coming generations.

I have spent my huge amount of my savings, my mind and on this esteemed project and I have also got full and sincere cooperation from many renowned persons and their names will be given in the following pages.

I am only single mediator on this project of ideas and everything is completing and depend upon my faithfulness,

responsibilities and enthusiasm to keep our heritage unspoiled. When somebody plants a tree, he thinks that is must grow properly and perfectly and will give everybody the shade of it and enjoy the fruits, but shall not cut down and destroy.

I am sure that nobody will disown this project but will only enjoy the benefit and extend full cooperation. The children may sing national songs and folk songs in future and will play these folk musical instuments. The guides can also get traditional and proper knowledge and information with which they can also convince the tourists of our traditional culture and heritage.

I am taking this opportunity to thank Mr. Allain Guilloux and Carole Landon, who translated my book "The Golden City" into French language, Mr. J. Bomheuer and Ch. Sxhomers, who. translated into German, Mr. Dotto Terry Brambilla for translating into Italian and Ms. Marina Rosell and Ms. Milene Montigny to translate into Spanish language.

Particularly, I am very much grateful to Mr.Joel Joffe of England (The Allied Dunbar Centre, Station Road, Swindow, Wilshire, Sni lel, England) who substantially supported me with a financial assistance for the development of the museum.

I am very grateful to the high dignitaries who have already visited and appreciated the museum, Shri Atal Bihari Vajpay, the Prime Minister of India, Shri Bali Ram Bhagat, Governor of Rajasthan, Shri Gulam Nabi Azad, Ex Tourism and Civil Aviation Minister, Govt. of India, Shri Bheron Singh Shekhawat, Chief Minister of Rajasthan, Shri Mitha Lal Mehta, Chief Secretary, Rajasthan Govt., Shri Devendra Singh, The Director General of Police, Rajasthan and his wife Smt. Jitendra Kumari, Admiral Shri Ramlal, the famous singer Ms. Lata Mangeshkar, famous writer and poet Shri Agai, Shri Karanjia, well known journalist and many other well known dignitaries.

I am also thankful to Germen lady Mrs. Kutja (Berlin), Sakadeepiya Brahmin Samaj, Mr.Lalit K. Panwar, the then Colletcor of Jaisalmer and Present Commissioner of Jodhpur Division, Mr. Siyaram Meena, Mr. Niranjan Arya, the Collector of Jaisalmer, Mr. Bhagwanlal Soni, the Superintendent of Police, Jaisalmer, all members of the KAVI TEJ Lok Kala Vilas Samiti,

Mr. Anil Vyas, Mr. Kishan Singh Bhati, Mr. Kishan Rathi (AEN, Municipality), and Mr. Mantar Z. Parisar, the Executive Officer Municipality, Jaisalmer, Mr. Prem Raj Sharma, Mr. Akhilesh Vyas, Mr. Alok Mukhopadhyaya, Mr. Manfred Bumb (West Germany), Mr.Vimal Sharma (Journalist), Mr.K. Thomas, Mr.Issac, V.K. the local journalists, Mr. Bhanwar Lal Vyas (Lecturer), and all other who have extended their cooperation morally, physically and financially to bring this museum to the present position.

My special gratefulness to Mr. Mahendra Vyas, the present President of Rotary Club of Jaisalmer and his wife Ganga Devi for their extra ordinary cooperation in all daily and progressive works of the museum. The museum will always remember all their generosity, kindness, helpfulness for ever and expect the same in the future too.

It is one of my great pleasure and today is happy day in my life that the Inauguration Ceremony of the Desert Cultural Centre is being done by His Excellency Shri K.R. Narayanan, the Vice President of India and I shall be very much grateful to him for his kindness and generosity.

I am also thankful to all the valuable and important perons who are present on this occasion of the inauguration ceremony of the "Desert Cultural Centre" to appreciate and encourage me on its functions.

1st February, 2006

—N.K. Sharma
Founder

The Speech given by the Honourable Vice President of India, Shri K.R. Narayanan on the occasion of the Inaugural Ceremony of the Desert Cultural Centre at Gadisar circle on the 1st February, 1997.

Honourable Minister, Shri Nand Kishore Sharma and Friends

first of all I want to thank you the warm welcome you have given to me, my wife, my family and my party this morning. It has been a great pleasure to come to this Desert Cultural Centre. I know that this is a centre which has been vuilt single handed by Shri Nand Kishore Sharma and he has done a great contribution to Jaisalmer, Rajasthan and India by collecting, displaying and projecting the culture and the arts for Jaisalmer and to the world.in large.

Jaisalmer has a glorious history. It has been the cross roads of the history, many trade roots passed through here and passed through the city and many invading forces in the past came here. Our history has been fashioned by Jaisalmer to a considerable extent by collecting and preserving the Arts and Culture of this Golden City. Shri Nand Kishore Sharma has importalised the history of Jaisalmer as a gift to the future generation.

I wish congratulate him and want to thank him on behalf of all of you and the people of India to this imitations he has taken in preserving the Arts and Culture for the Golden Desert City.

Thank you.

Views of Eminent Persons

I have been very pleased to have visited this Museum which is the effort of one private person to perserve the hertiage of this country for generations to come.

I am very thankful for the warm welcome.

31-10-95 Prime Minister of the Republic of Moritius

An inttersting museum created with the sole effort of a retired teacher. He has done an excellent of preserving many art facts and old articles by way of local heritage.

A good enterprise.

Mita Lal Mehta

27-11-95 Chief Secretaryof Rajasthan

We owe a great deal to the efforts of individual to Shri Sharma in preserving our arts and heritage. His museum is a treasure house of fine prices.

24-12-95 Secretary, Tourism, Govt. of India

A fascinating collection. More such people should come forward to save our heritage. Hertiest congratulations and all good wishes.

Devendra Singh

10-9-96 D.G. of Police, Rajasthan

It is realy unfortunate that the Government has not yet come forward to patronise the "one man effort" of Mr. N.K. Sharma.

D.B. Dutta

30--10-96 Judge, Calcutta High Court

My congrtatulations to Mr. Sharma for the outstanding work. My best wishes for a successful future.

Ashok Pahwa

Director General Tourism

15-8-95 Government of India

It is a matter of great pride to come across a real teacher, who is preserving and protecting the cultural heritage of this most beautiful city of our country.

Gulam Nabi Azad

Union Minister of Tourism and Civil Aviation

25-2-94 Govt. of India

It is a remarkable efforts of life long lover for the art and folklore of Jaisalmer. Shri Nand Kishore Sharms's efforts should be appreciated by all. The museum should be housed in its own premises.

B. Bhagat
Governer of Rajasthan

Going around this musem was a pleasure. Considering the fact that it is single person's effort; with whatever resources available-it is highly commendable. One feels sorry to see some of our valuable artificial decaying and sold off!!

Jitendra Kumari
10-9-96 W/o Devendra Singh, DGP, Rajasthan

I've been very surprised of how much these objects of day to day life can tell the visitors about the culture of Jaisalmer. These things belong to the so-called "Minor" history which is hardly shown in books and museum, but it's this "Minor" history that is the key to an approach to Indian culture.

Mariane Rizzolo
20-3-94 Italy

Shri Nand Kishorji Sharma is a man rare dedication and insight. He has done a lot to preserve the old articles of this region. This museum gives a glimpse of the flok arts and the rich cultural heritage which it repesents. I wish him well in his admirable endeavours.

Ram Niwas Mirdha, M.P.
Chairman, Lalit Kala Academi,
29-3-96 New Delhi

The best museum that I have been seen in India. Everything is explained well, and it gives you a little insight into Rajasthan culture. A lonely man runs this place. A wonderful collection of local treasures.

Heidi Sioloda
30.3.96 Montana, USA

What is to See in the Museum

ROOM ONE :

Model of Moomal Palace (Moomal ki Meri) made with clay in Beel style art by Magha Ram Meghwal from Derana village.

ROOM TWO :

Costumes of all caste and religions of Rajasthan, meaning of colours, designs of different hair styles. Embroidery and bead works. Different kind of old designs of fans, Miniature paintings, beautiful collection of Raja Ravi Verma's paintings. Brass, copper items, traditional oil lamps and tobacco and opium boxes, ink pots, pen, pen-cases, Chpati and betel boxes amny other traditional articles. Bangore Ishar etc. etc.

ROOM THREE :

All kind of Fossils, old decoration items, traditional ornaments. The photographs of the Rajas and Maharajas of Jaisalmer state with their history. Old coins of India, old letters in Rajasthani language, old post cards and stamps of India. Some old miniature paintings and old books in Rajasthani language.

ROOM FOUR :

Old miniature paintings of the rulers of the different parts of Rajasthan. Torana (signs of Welcome) which is normally hanged on the main door of house. Kavad (a typical mobile temple of Ram, Sita and Laxman). Different designs of Mehandi (a colour which is made with the leaves of a special plant). A statue of Horse which represents Ramdeoji's Horse.

ROOM FIVE :

Different kinds of camel ornaments made by a newly married woman which was to be presented by her to her husband for his camel, when he comes back after a long separation. But she could not present the same as somebody had stolen the same. Different kinds of stone carved boxes. Stone cup-saucers and other stone items. Old opium boxes and opium filter stand etc. There is a cloth curtain with beautiful

paintings which says the history of Pabuji and the curtain known as the "Pabuji-ki-Pad", typical bangles (Chudas) of Rajasthani ladies.

DESERT CULTURE CENTRE

All kind of typical and traditional musical instruments of the desert region of Jaisalmer with the description of each instrument.

Many-many other items on stone carvings are displayed on the boundary wall of the museum with descriptions.

Books in English, French, German, Italian, Spanish and Hindi languages about Rajasthan's history, art and culture, colour post cards and folk music cassettes are also available.

PUPPET SHOW :

The folk music and Puppet shows have been started in the Museum. The Puppet shows are organised daily.

This institute is now providing authentic information about artifacts displayed in the Desert Culture Centre (Museum). This is one more sincere effort to provide information to the tourists.

The visitors can see programmes on T.V. screen.

A V.C.D. programme covers the folk culture, art, folk dance, life style of desert and folk music.

Any visitor can see and listen and read about the artifacts by paying Rs. 50/- as maintenance fee.

N.K. Sharma - Brief Introduction



Name : Nand Kishore Sharma
Father's Name : Shri Sagat Mal Sharma
Date of Birth : 1st January, 1938 (Jaisalmer)
Education : M.A. (History), B.Ed.
Occupation : Retired Teacher (National Awarded Teacher)

Published Books :
1. Jaisalmer Ka Rajnaitik Itihas
2. Jaisalmer Ka Samajik Evam Sanskritik Itihas
3. Jaisalmer Prichaya
4. Jharokhon Ki Nagari - Jaisalmer
5. Jaisalmer Ke Loknatya
6. Pankheruon Ke Geet and other Rajasthani Geet
7. Jaisalmer Ki Lokdeviyan
8. Hamare Aradhya Panchdev

Tourist Books :
1. Jaisalmer the Golden City (English) Translated in French, German, Italian and Spanish
2. Way of Life
3. Many other Articles on Culture and History published in various magazines and new papers.

Cultural Activity : Established Jaisalmer Folklore Museum in 1984 (Individual Collection)
Established Desert Cultural Centre in 1997

Institution Organised : Kavi Tej Lok Vikas Samiti, Jaisalmer

Others : Ex-Member of Sarswati Sabha of Rajasthan Sahitya Akademi, Udaipur and Secretary Antarprantiya Kumar Sahitya Parishad

Folk Drama : Best player and atrist of Folk Drama

Poems : Rajasthani and Hindi poems are published and broadcastin at All India Radio and Doordarshan

Folk Song : Rajasthani Folk Song recorded at H.M.V.

Guiding : Guided to Ex-President of India Shri Neelam Sanji Reddy, Venkat Raman, Indira Gandhi, K.R. Narayanan and Atal Bihari Vajpai
Ex-Governor of Rajasthan Bali Ram Bhagat and Prime Minister of Morituish

Organised Festivals : Jaisalmer Sthapana Divas and Gangor

Specific Hobbies : Through the Jaisalmer Folklore Museum and Desert Cultural Centre preserve the Art, Culture and History of Jaisalmer and prepare the skilled guide.

Determination : Personal efforts to preserve the history, Art and Culture of desert

At present : Director, Jaisalmer Folklore Museum
Gadisar, Jaisalmer - 345 001
Tel : 02992-252188, 252723 (Museum), 252375 (Res.)

MADAM

Composed by **S.S. Shripat**

35 years ago, seeing a tourist lady in Jaisalmer, the poet composed this poem. The poem, originally composed in the Rajasthani language has always been very popular.

This poem has been translated into English By R.C. Harsh Rtd. Lecturer (English).

Couplet

Liking 'Angarakhi' to wear and a petticoat with numerous pleats
Joyously a madam has come to visit Jaisalmer

I

Wearing high heel sandals, gold colored fascinating madam
Light reflects from her shapely legs;
The Wind sways the skirt she wore
Slender waist already fastened with belt
Fascinating woman as beautiful as cupid's wife.
Trapped by the fashion worls.
Her breasts look like cupid's two arrows
Nails, lips, cheeks, painted red
Cat-eyed, golden haiered,
She looks charming to the eye.
No ornaments she wore to adorn her face
Only glasses add to her grace.
A camera hangs from her shoulder
And she carries a leather bag with her.
Walks briskly, speaks fluently
And asks numerous quetions in a courteous manner.
Young men smile and smilingly they twirl their moustaches
Old bearded men look at her.
She speaks English but wishes to wear Marwari dress,
Purchases 'Mindhliyon', Zonzar, Churalo, bangles, sarees
Laughingly she talks to the lads;
the market on that day was festive.

Flying over the wide oceans
A madam came to see the desert.

**Angarakhi-Blouse, Mindhliyon-Traditional ornaments, Zonzar-Traditional ornaments.*

II

She takes snap-shots, saying "Thank you" she really thanks
Looks at pebbles and stones and wishes to see puppets.
Lo, after visiting the fort she came to the market place
Felt tremendous joy looking at balconies,
Purchased cloth red & yellow as pleased her heart.
She wished to get stitched a blouse and bra
Setting aside all fashions she at last surrendered
to simplicity of dress and design.
Rejecting all the tailors well versed in their trade;
At last she found one far away from European style.
Neither cigarette nor biscuits nor was there a carpet to sit on
Without marking he was cutting cloth,
And joining cords by sewing
Stitched coarse cloth and was surely scared of terrilene cloth,

Flying over the wide oceans
A madam came to see the desert.

III

The tailor wore a round turban, keeping several needles in it,
Red & yellow threads hung sown and cotton lay scattered there;
A 'Biri' he was smoking and spectacles rested on his nose-tip
Sewing machine sounds like a tractor
Seeing this, 'Madam' was captivated.
One lad stitches 'Dagli' and another makes 'Indhani'
Far from the fashion world the tailor was uttering hymns
The tailor jumped to his feet, the seat slipped from the chair
Bewildered he stood with folded hands as if great grandmother
has appeared
She flung down the cloth ordering him to stitch a bra and blouse
Taking a measuring tape the tailor became active,
The madam asked him to measure properly and honestly
The tailor trembled and his tender heart throbbedPrayed him
to Lord Shiva to save him from this trouble.

Flying over the wide oceans
A madam came to see the desert.

IV

Twisting and turning the madam talks to the tailor
As if a butterfly has come to rest on a tree without branches
As if the Ganges flows into desert
Or as if the nightingale whispers to a Babul tree,
As if an orange unites a watermelon,
Or as if the moonlit night meets with darkness
As if a creeper has encircled a trunk
As if 'Menka' (a fairy) meets a monk.
As if a swan courts an elephant
A young woman meets an old tailor.
This is not a laughing matter, just ponder,
A European lady searches for simplicity and humanity.
Assess not a man by the dress he wears,
But judge him by the virtuous heart he bears.
The wretched have uncovered the humanity
They have done a shameful deed.
Few are there to realize the truth
So assess hearts instead of face & figure.
Setting aside beauty and charm,
they (European) are attracted by virtues
And judge people by the culture of the heart.
The Wiched have the finest garments
But truth lies in the simple life.

Flying over the wide oceans
A madam came to see the desert.

(Translated into English in Dec. 2005)

Available at :
Gopa Chowk,
Mid Town Restaurant,
Jaisalmer (Rajasthan)

nches



मरु सांस्कृतिक केन्द्र के उद्घाटन के समय
पूर्व राष्ट्रपति महामहिम के. आर. नारायणन के साथ श्री नन्दकिशोर शर्मा



2005)

ांस्कृतिक केन्द्र का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए पूर्व राष्ट्रपति महामहिम के. आर. नारायणन
ा में हैं श्री नन्दकिशोर शर्मा (संस्थापक), उपाध्यक्ष श्री विमल शर्मा, सहसचिव हेमन्त शर्मा आदि



ांस्कृतिक केन्द्र का फीता काटकर उद्घाटन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते हुए
पूर्व राष्ट्रपति महामहिम के. आर. नारायणन साथ में हैं श्री नन्दकिशोर शर्मा व मरुश्री सत्येन्द्रजी

Jaisalmer Folklore Museum & Desert Cultural Centre Museum

Gadisar Lake, Jaisalmer

A single man's imagination collection by Mr. N.K. Sharma bestowed with National Teacher's Award and Author of "Jaisalmer The Golden City" famous the Museum named "Jaisalmer Folklore Museum" which Established in 1984) and Desert Cultural Centre. It had the February 1997 at the famous historical and traditional Gadisar Lake.

MAIN AIMS

- Preservation of the Cultural Heritage.
- Preservation of desert history, culture art, literature, traditions, Music, and other performig arts.
- To provide authentic information's for Visitors.
- To provide Training for local guides.

WHAT IS TO SEE MUSEUM

Local costumes, meaning of colours and designs, historical old photographs, paintings, coins, fossils, camel ornaments musical instruments, many other traditional articles and very old manuscripts.

A very informative well arranged documented museum with clear and concise explanations in English. Highly recommended in many guidebooks. Books in English, French, Germen, Spainish and Italian about Rajasthan's history, art and culture, post card and music cassettes are also available.

ADVICE

Tourists are advised that they should not miss the opportunity to visit the museum when they are at Jaisalmer. They can understand and know the tradition, art, cutlure and heritage of Rajasthan and every day life style of the Thar desert through it.

MUSEUM TIMINGS

Folklore Museum	9 am to 12 pm., 3 pm to 6 pm
Desert Cultural Centre :	10 am to 5 pm.
Maintenance fee :	10 Rs.

PUPPET SHOW AT DESERT CULURAL CENTRE

Timings :	Ist show :	6.30 p.m. to 7.10 p.m.
	II nd show :	7.30 p.m. to 8.00 p.m.
Entry Fees :	30 Rs.,	Camera: 20 Rs., Video : 50 Rs.

CONTACT : N.K. Sharma
Desert Cultural Centre (Museum)
Gadisar Circle, Jaisalmer-345001, Rajasthan India.
Tel : 091-2992-252188, 253723 (Museum), 252375 (R)